वर्ष 29 | माघ-फाल्गुन | फरवरी-2024 | अंक 02 (मासिक) | प्रकाशन उज्जैन

आर.एन.आई. नं. 0048570/29/30/1982

पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर.एन.नं.एम.डी. 08/2024-2026

मूल्य 10/- रुपये

मासिक प्रकाशन

आगमोद्धारक

प्रकाशन हर माह की 6 तारीख को

चले शिखरजी...
करने ओलीजी...
चलो सम्मेद शिखरजी...

आगमोद्धारक

नमो नाणस्स नमो नमः

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन
उज्जैन का जैन हिन्दी मासिक

प्रधान सम्पादक

डॉ.सुभाष जैन, उज्जैन

सम्पादकीय कार्यालय

डॉ.सुभाष जैन

46, सखीपुरा, उज्जैन-456001 (म.प्र.)
मोबा. नं. 94250-91012, 8770884897
1-E-mail-Subash_3333@yahoo.co.in
2-E-mail-i.am.Subhashjain@gmail.com

इन्दौर कार्यालय

प्रफुल्लकुमार जैन ''पप्पू''

1073, सुदामानगर, फूटीकोठी रोड़
इन्दौर-452009 (म.प्र.)
5057087, 5057067
मोबा. नं.-98260-10089

सदस्यता

आगमोद्धारक के सदस्य बनने वाले श्रीमानों से निवेदन है कि सदस्य के लिये शुल्क राशि बैंक ड्राफ्ट/चैक/M.O. से श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, उज्जैन के नाम से सम्पादकीय पते पर भिजवाये। अन्य नाम से सदस्यता राशि स्वीकार नहीं की जायेगी। - **डॉ.सुभाष जैन**

जिसे कुछ प्रिय नहीं, जिसे कुछ अप्रिय नहीं ; जिसका कोई शत्रु नहीं, जिसका कोई मित्र नहीं; जो मान-अपमान, लाभ-अलाभ, हर्ष-शोक, जन्म-मृत्यु आदि द्वंद्वों का अभाव करके शुद्ध चैतन्यस्वरुप में स्थित हुए है, होते हैं और होंगे, उनका अति उत्कृष्ट पराक्रम सानंदाश्चर्य उत्पन्न करता है।

दिव्य आर्शीवाददाता

प.पू.मालव भूषण आचार्य श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

मार्गदर्शक एवं प्रेरक

परम पूज्य आचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन, उज्जैन

अध्यक्ष- भाई श्री प्रफुल्लजी जवेरी, मुंबई (महा.)

शाश्वत संदेश

इरियाभासेसणाऽऽदाणे, उच्चारे समई इय।
मणगुत्ती वयगुत्ती,कायगुत्ती य अट्ठम॥

ईर्या-समिति, भाषा समिति, एषणा समिति, आदान समिति और उच्चार-समिति- ये पांच समितियां तथा मनोगुप्ति वचनगुप्ति, और कायगुप्ति-ये तीन गुप्तियां इस प्रकार से आठ प्रवचन मातायें कही गई है। - उत्तरा. सूत्र, 24.2

पाथेय

वह सब कुछ जो बाहरी और निम्न सत्ता से संबंधित है, वह सब कुछ जो अभी तक तमस से आच्छादित है, वह तुम्हारे समक्ष मौन भाव से कर रहा है साष्टांग प्रणाम और अपनी पूर्ण क्षमता के साथ तुम्हारी विशुद्ध दायिनी क्रिया-शक्ति का कर रहा आव्हान, कि वह इस निम्न प्रकृति तत्व को तुम्हारे प्राकट्य के योग्य, निर्मल, सबल एवं उज्जवल बना दे। और इस मौन पूजा भावना में निहित है पूर्ण नीरवता एवं आनन्द। हे नाथ तुमने अपनी कृपा वश दिया है मेरी पुकार का उत्तर ''जो कुछ होना है वह आवश्यक होगा, आवश्यक उपकरण तैयार किए जायेंगे सतत् दृढ़ विश्वास की अचंचल नीरवता में तू प्रयास करता रहे।''

शुल्क सोपान

स्तम्भ	11,511/- रुपये
आजीवन	1000/- रुपये
पांच वर्षीय सदस्य	301/- रुपये
एक वर्षीय सदस्य	80/- रुपये
एक प्रति	10/- रुपये

नोट- आगमोद्धारक में प्रकाशित रचनाओं से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वर्ष-29 माघ-फाल्गुन फरवरी 2024 अंक-2

विषय सूची

1- शाश्वत संदेश, पाथेय	3
2- विषय सूची	4
3- आदर्श-साधना-अनुभूति -(सम्पादकीय)- डॉ.सुभाष जैन	5
4- नवकार महामंत्र नामावली, अन्तर्मुखी होने पर शांति	6
5- 63 त्रेसठ शलाका पुरुष के माता-पिता, जीव आदि, याद रखो	7
6- कल्याणक तीर्थ भूमि- ललितकुमार नाहटा, हाथी का मनोबल-श्रमण डॉ. पुष्पेन्द	8
7- भवी-अभवी जीव	9
8- शंका-चैत्यवंदन विधि का प्रारम्भ कब हुआ ?	10
9- श्री धन्ना अणगार	11
10-हमें गुस्सा क्यों आता है ?	12
11-जस्स मणे नमु क कारो, संसारो तस्स कि कुणई ?-अनोखीलाल कोठारी	13
12-मानव शरीर : अनन्त शक्ति का स्त्रोत-रविलाल वोरा	14
13-चिंता, तनाव और अवसाद- '' अशान्तरय कुतः सुखम्- डॉ. सुरेश गर्ग धन्यवाद का मूल्य, महाप्राण निराला	15-16
14-समस्त संघर्ष का समाधान अनेकान्त में है- प्रेमचन्द्रजी शाह मृत्यु का भी उत्सव बनाओ	17
15-ऋतुराज बसन्त- श्रीमती प्रभा जैन	18
16-विज्ञान बहुत कुछ कर गुजरा, अब दर्शन की बारी है, बारह आराओं का स्वरुप	19-21
17-हाय हैलो छोड़िये ! जय जिनेन्द्र बोलिये !!- एस.सी.कटारिया (जैन), दुःख की जड़े	22
18-क्रोध पापों का प्रकटीकरण है !- डॉ. सुरेश गर्ग , सत्य की चाह	23-24
19-रामायण क्या है ?, धर्म परंपरावादी नहीं है	25-26
20-भरत क्षेत्र के 24 तीर्थंकर भगवान के नाम	27
21-वर्गपहेली- 345 - जयंतीलाल जैन,रतलाम	28
22- ज्ञान गंगोत्री- 345-आ.प्रवर श्री मृदुरत्नसागरसूरीजी म.सा.	29
23- शासन-समाचार	30-41
24- हमारे तीज त्यौहार, सादर आमंत्रण, सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है, तीर्थ का नाम कर्म उपार्जन किया....	42

संपादकीय

आदर्श-साधना-अनुभूति

मानव जीवन अत्यन्त दुर्लभ है फिर भी हम देखते है कि असंख्य मानव संसार के विषय भोगों में अपना अमूल्य जीवन व्यर्थ गंवा देते है। मानव सच्चे ज्ञान के अभाव में अस्वाभाविक तनाव और बिन बुलाये मानसिक संघर्ष से अस्वस्थ-असंतुष्ट और बाद में रोगग्रस्त हो जाता है। वर्तमान विज्ञान और तकनीकी विकास के साथ मनुष्य अधिक बहिर्मुख हो गया है उसमें उसका मानसिक संतुलन समाप्त होता जा रहा है। यह इस युग की सबसे विकट समस्या है। इस प्रकार की संभ्रमित अवस्था के कारण वह अपने अंत अन्तर्निहित देवत्व को अपने नित्य शुद्धबुद्ध मुक्त स्वरुप को जैसे भूल ही गया है, यही नहीं धर्म के नाम पर भी कई लोग चमत्कार और विचित्र कल्पना के वशीभूत होकर स्थूल सूक्ष्म कामनाओं की पूर्ति के साथ विभिन्न प्रकार के सुख प्राप्ति की अपेक्षा करते हैं लेकिन उन्हें परम संतोष या परम शांति प्राप्त नहीं होती है इसके लिये जिन महापुरुषों ने गुरु भगवंतों ने आध्यात्मिक साधना द्वारा आपने जीवन में सत्य को पहचाना है वे ही आध्यात्मिक जीवन का उचित मार्ग दिखा सकते हैं, ऐसे कितने ही महापुरुष वर्तमान में है।

आध्यात्मिक जीवन एक अन्तर्विज्ञान है। सामान्यतः स्थूल सूक्ष्म वृत्तियों में हमारा मन चित्त भीगा रहता है, इसी के कारण हम शुभ-अशुभ कर्म करते है, अपनी शक्ति का अपव्यय करते है, मोह में संलग्न हो जाते है और अपने सच्चे स्वरुप को भूल जाते हैं। आध्यात्मिक जीवन में शारीरिक तथा मानसिक पवित्रता अपरिहार्य है जिन्हें इस मार्ग पर आगे बढ़ने की इच्छा हो उन्हें अपने आध्यात्मिक विकास के लिये गुरुपदेश के अनुसार जप-तप-ध्यान स्तव-प्रार्थना तथा निष्काम भाव से, कर्म कर अपने मन को शुद्ध करना चाहिये अन्य सभी वृत्तियों का गौण कर हम अपनी शुद्ध आत्मा का साक्षात्कार कर सकते हैं। आत्म साक्षात्कार या परमात्म अनुभव प्राप्त करने के लिये इस मार्ग के राही को अपनी साधना पर विश्वास रखते हुए सद्‌गुरु का मार्गदर्शन लेना चाहिये, ऐसा करने का निश्चित रुप से, अपनी आराधना के बल पर अनुभूति के उच्च से उच्चतर स्तर पर अग्रेसन हो सकता है इसमें कोई शक नहीं है। हां आराधना साधना को नियमित चक्र में रुकावट नहीं होना चाहिये वह प्रतिदिन नियमित चलती रहना चाहिये। ऐसा कर सकनेवाला दृढ़ निश्चयवाला व्यक्ति गुरु के मार्गदर्शन के अनुसार इहलौकिक अथवा परलौकिक सुख भोगों को त्याग करनेवाला अपनी साधना के बल पर आध्यात्मिक अनुभूति का अधिकारी हो सकता है।

आज हम सब इस बात से अवगत है कि आध्यात्मिक अभिरुचि रखनेवाले लोगों की रुचि धर्म, संयम मार्ग की ओर तेजी से बढ़ी है। लोगों का युवाओं का, पश्चिमी संस्कृति धर्म संस्थाओं के द्वारा किये जानेवाले वादों और दावों के साथ विज्ञान और तकनीकी, भौतिकतावादी चकाचौंध से मोह भंग हो गया है, वर्तमान में संयम मार्ग की ओर बढ़ती वृत्तियों के साथ संयम लेनेवाले सभी संयमी उच्च शिक्षित तथा अपार धन कमानेवाले रहे है। इसका एक मात्र कारण यही है कि वे जीवन और सत्य के प्रति नई दृष्टिकोण की तलाश में है, इसके लिये काल महत्वपूर्ण है, साधना में प्रवृत्त हुए साधकों को धैर्यपूर्वक उस समय की प्रतीक्षा करना चाहिये जब उसे अपनी साधना के बल पर अभिष्टप्राप्ति का मार्ग स्पष्ट दिखाई देने लगे। इसके लिये उन्हें अपना शारीरिक बौद्धिक चारित्रिक और आध्यात्मिक विकास साथ-साथ करते हुए आगे बढ़ना चाहिये ऐसा करने पर आराधक आत्मन् को गुरु और अदृश्य शक्ति की सहायता अपने आप मिलने लगती है।

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में कभी न कभी ऐसा समय अवश्य आता है। जब वह धर्म और आध्यात्मिक लक्ष्य के प्रति आकृषित होता है। ऐसा आमंत्रण मिलने पर वह चुप नहीं बैठ सकता है, ऐसे में उसे संसार की कोई भी वस्तु संतुष्ट नहीं कर सकती है वह तो आंतरिक जागरण तथा उच्च आदर्श का अनुसरण करने की अपरिहार्य प्रेरणा उसे आध्यात्मिक जीवन के शुभारम्भ की ओर ले जायेगी। कुछ लोगों के जीवन में यह परिवर्तन अचानक होता है तो कुछ के जीवन में इसका विकास धीरे-धीरे संसार की नश्वरता का अनुभव होने के साथ होता है। यह बात भी सत्य है कि हजारों लोगों में से कुछ ही आध्यात्मिक जीवन अंगीकार करते है, आध्यात्मिक जीवन का मार्ग अन्य सब मार्गों से भिन्न है।

मनुष्य जन्म-मुक्त होने की इच्छा और महापुरुषों का सत्संग यह तीनों जीवन में दुर्लभ है और पुण्य से ही इनकी प्राप्ति होती है इन तीनों दुर्लभ की प्राप्ति ही पर्याप्त नहीं है बल्कि इन तीनों की प्राप्ति होने के बाद इसका लाभ लेने के लिये प्रयत्नशील हो जाना चाहिये और आध्यात्मिक जीवन के लिये सर्वस्व त्याग करने के लिये तैयार हो जाना चाहिये यही स्थिति आपको चरम लक्ष्य की प्राप्ति में सहायक होगी। संघर्ष के बिना सत्य का साक्षात्कार नहीं हो सकता है जीवन को सफल बनानेवाले ऐसे संघर्ष के लिये हम सबको हमेशा आगे आने की इच्छा रखना चाहिये, यही निवेदन।

- डॉ. सुभाष जैन

नवकार महामंत्र नामावली

अड़सठ अक्षर अड़सठ तीर्थ :-

1- श्री नवकार तीर्थ
2- श्री मोहनखेड़ा तीर्थ
3- श्री अष्टापद तीर्थ
4- श्री रिंगनोद तीर्थ
5- श्री हत्थुंडी तीर्थ
6- श्री तीर्थ
7- श्री वालनपुर तीर्थ
8- श्री नंदीवर्द्धान तीर्थ
9- श्री मोटा पोशिनातीर्थ
10- श्री सिद्धाचल तीर्थ
11- श्री धानेरा तीर्थ
12- श्री नंदीश्वर तीर्थ
13- श्री नगपुरा उयगणहरं तीर्थ
14- श्री मोडासा तीर्थ
15- श्री आबुजी तीर्थ
16- श्री यशनगर तीर्थ
17- श्री रिछेड़ तीर्थ
18- श्री यादवपुर तीर्थ
19- श्री नंदीकुलयनी तीर्थ
20- श्री नलिया तीर्थ
21- श्री मोढेरा तीर्थ
22- श्री उज्जिंत गिरी तीर्थ
23- श्री दरबाग तीर्थ
24- श्री झाबुआ तीर्थ
25- श्री बांद्रगिरी तीर्थ
26- श्री नंदवंदन तीर्थ
27- श्री नवसारी चिंतामणी पार्श्व मधुवती तीर्थ
28- श्री मोदरा तीर्थ
29- श्री लोद्रवाजी तीर्थ
30- श्री एकलिंगजी तीर्थ
31- श्री सम्मेतीधरजी तीर्थ
32- श्री दरकाणाजी तीर्थ
33- श्री साणोदीक तीर्थ
34- श्री हुबली तीर्थ
35- श्री नंदीग्राम तीर्थ
36- श्री एनुर तीर्थ
37- श्री सोनगिरी तीर्थ
38- श्री पंवासरा तीर्थ
39- श्री चन्द्रवती तीर्थ
40- श्री नडिबाद तीर्थ
41- श्री मुछाला महावीर तीर्थ
42- श्री कापरडाजी तीर्थ
43- श्री रोजाणा तीर्थ
44- श्री स्तम्भण तीर्थ
45- श्री वल्लभीपुर तीर्थ
46- श्री पावापुरी तीर्थ
47- श्री वही तीर्थ
48- श्री पराशली तीर्थ
49- श्री नागेश्वर तीर्थ
50- श्री सत्यपुर सांधोर तीर्थ
51- श्री नोपणगदर तीर्थ
52- श्री मंडपावत- मांडवगढ़ तीर्थ
53- श्री गंगाणी तीर्थ
54- श्री झाखणी तीर्थ
55- श्री नंदुरी-नानपुर तीर्थ
56- श्री पम्पापुरी तीर्थ
57- श्री समती विहार तीर्थ
58- श्री वेसम तीर्थ
59- श्री सिंहपुरी तीर्थ
60- श्री परोली तीर्थ
61- श्री ढंकगिरी तीर्थ
62- श्री मंडार तीर्थ
63- श्री हस्तिनापुर तीर्थ
64- श्री वड़नी तीर्थ
65- श्री इडर तीर्थ
66- श्री मंदसौर तीर्थ
67- श्री गंधार तीर्थ
68-श्री लक्ष्मणी तीर्थ

अन्तर्मुखी होने पर ही शांतिः- *अपनी दृष्टि को बाहर से हटाकर अंदर डालना चाहिये, अध्यात्म-पथ का अवलंबन लेना चाहिये। जगत में इधर-उधर भटकने वाला प्राणी इसी शीतल वृक्ष के नीचे शांति प्राप्त कर सकता है। जब बाहर की मायारुपी वस्तुओं के भ्रम से विमुख होकर हम अंतर्मुखी होते हैं, आत्मचिंतन करते हैं, तो प्रतीत होता है कि हम अपने स्थान से बहुत दूर भटक गये थे। आवश्यकताएं कभी पूर्ण नहीं हो सकती हैं, उन्हें जितना ही तृप्त करने का प्रयत्न किया जाएगा, उतना ही वे अग्नि में घृत डालने की तरह और अधिक बढ़ती जाएगी। इसलिए इस छाया के पीछे दौड़ने की अपेक्षा उसकी ओर से पीठ फेरनी चाहिए और सोचना चाहिए कि हम कौड़ियों के लिये क्यों मारे-मारे फिर रहे हैं जबकि हमारे अपने घर में भंडार भरा हुआ है। अंतर में मुंह देखने पर, परमात्मा के निकट उपस्थित होने पर, वह ताली मिल जाती है, जिससे सुख और शांति के अक्षय भंडार का दरवाजा खुलता है। अपनी वास्तविक स्थिति को जानने से, आत्म स्वरुप को पहचानने से, संसार के स्वरुप का सच्चा ज्ञान होने से, शांति की शीतल धारा प्रवाहित होती है, जिसके तट पर असंतोष की ज्वाला जलती हुई नहीं रह सकती। तब वह मृगतृष्णा को त्याग देता है। सच्चा संतोष उपलब्ध होने पर उसकी बाह्य आवश्यकताएं बहुत ही थोड़ी रह जाती हैं और जब थोड़ा चाहने वाले को बहुत मिलता है, तो उससे बड़ा आनंद प्राप्त होता है।*

63 त्रेसठ शलाका पुरुष के माता-पिता, जीव आदि

63 शलाका पुरुष के पिता:- 52 पिता है। श्री शांतिनाथजी, कुंथुंनाथजी, अरनाथजी तीर्थंकर भी है व चक्रवर्ती भी है, इस कारण तीन पिता कम हुए। 63-3=60 श्री महावीरस्वामीजी के गर्भ में परिवर्तन की अपेक्षा से दो पिता हुए तो 60+1=61, नौ बलदेव व नौ वासुदेव दोनों के एक ही पिता है तो 61-9=52 ।

63 शलाका पुरुष की माता:- 61 माता है। श्री शांतिनाथजी, कुंथुंनाथजी, अरनाथजी तीर्थंकर भी है व चक्रवर्ती भी है, इस कारण तीन माता कम हुए है। 63-3=60 । श्री महावीरस्वामीजी के गर्भ परिवर्तन की अपेक्षा से दो माताएं हुई तो इस प्रकार 60+1=61 ।

63 शलाका पुरुष के जीव (आत्मा):- 59 जीव (आत्मा)। श्री शांतिनाथजी, कुंथुंनाथजी, अरनाथजी तीर्थंकर भी है व चक्रवर्ती भी है, इस कारण तीन जीव कम हुए। 63-3=60 त्रिपृष्ठ वासुदेव व श्री महावीरस्वामीजी की आत्मा एक ही होने से 60-1=59 ।

63 शलाका पुरुष के शरीर:- 60 शरीर थे। श्री शांतिनाथजी, कुंथुनाथजी, अरनाथजी, तीर्थंकर भी है व चक्रवर्ती भी है, इस कारण तीन शरीर कम हुए। 63-3=60 ।

63 शलाका पुरुष की गति:- सभी 24 तीर्थंकर मोक्ष में गये।

बारह चक्रवती में से सूभूम व ब्रह्मदत्त सातमी नरक में गये। मघवा व सनत्कुमार तीसरे देवलोक में गये बाकी के आठ भरत, सगर, शांतिनाथ, कुंथुनाथ, अरनाथ, पद्म हरिषेण, जयसेन मोक्ष में गये (इन आठ में तीन शांतिनाथजी, कुंथुनाथजी, अरनाथजी, चक्रवर्ती भी व तीर्थंकर दोनों पद पर थे।)

नौ वासुदेव में से पहले त्रिपृष्ठ वासुदेव सातमी नरक में गये। 2,3,4,5,6 वासुदेव- द्विपृष्ठ, स्वयंभू, पुरुषोत्तम पुरुष सिंह, पुरुष पुण्डरिक छट्ठी नरक में गये। सातवें वासुदेव दत्त पांचवीं नरक में गये। 8,9 वासुदेव-नारायण (लक्ष्मण), कृष्ण तीसरी नरक में गये।

नौ प्रतिवासुदेव में से पहले अश्वग्रीव सातवीं नरक में 2,3,4,5,6 ठें-तारक, मेरक, मधुकैटभ, निशुम्भ, बलि छट्ठी नरक में, सातवें प्रहलाद पांचवीं नरक में और 8,9 वें रावण, जरासंध चौथी नरक में गये।

नौ बलदेव में से पहले से आठवें तक के बलदेव-अचल, विजय, भद्र, सुप्रभ, सुदर्शन, आनन्द, नन्दन, पद्मरथ (राम) मोक्ष में गये। नवमें बलदेव बलभद्र ब्रह्म देवलोक में गये।

63 शलाका पुरुष का नियाणा:- तीर्थंकर व बलदेव नियाणा करके नहीं आते। वासुदेव, प्रतिवासुदेव नियाणा करके आते है। चक्रवर्ती की भजना हैं। 63 शलाका पुरुष कहां से आते है। दो गति से-देव और नरक गति से आते हैं।

63 शलाका पुरुष आयुष्य पूर्ण कर कहां जाते है:- तीर्थंकर एकान्त से मोक्ष में जाते हैं। बलदेव मोक्ष में अथवा देवगति में। चक्रवर्ती दीक्षा ले तो मोक्ष या देवगति में, नहीं ले तो नरक गति में। वासुदेव, प्रतिवासुदेव एकान्त नरक में जाते हैं।

63 शलाका पुरुष में से कौन चरम शरीरी होते:- तीर्थंकर चरम शरीरी होते है। चक्रवर्ती और बलदेव चरम शरीरी भी होते हैं और अचरम भी।

63 शलाका पुरुष में अचरम शरीरी:- वासुदेव प्रतिवासुदेव होते हैं।

याद रखो- *इन्द्रियों के साथ अनुकूल भोगों का सम्बन्ध होने पर जिस सुख भोग की प्रतीति होती है, वह वास्तविक सुख नहीं है। यह सुख यथार्थतः दुःखों की उत्पत्ति करानेवाला ही है- भयानक दुःखों का पूर्वरुप है; जैसे विषयुक्त मिठाई देखने-खाने में सुन्दर और मधुर लगने पर भी अन्त में मार देनेवाली होती है, वैसे ही ये भोग-सुख पहले अमृत-सरीखे प्रतीत होने पर भी अन्त में आत्मा का पतन करने और उसे दुःख सागर में डालनेवाले होते हैं। इसलिये इन भोग-सुखों को दुःखरुप मानो और इनकी चाह को मिटाकर भगवान की चाह करो। यह निश्चय मानो-इनसे कभी दुःखों का नाश नहीं होगा। इनकी प्राप्ति अभाव को मिटायेगी नहीं, वरं बढ़ायेगी और इनके संयोग का भी अन्त हो जायेगा। ये सभी अनित्य और दुःखमय है। इनसे सम्बन्ध तोड़कर इनका सदुपयोग करना सीखो।*

कल्याणक तीर्थ भूमि

तीर्थंकर परमात्मा का जहां च्यवन (गर्भ), जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान व मोक्ष होता है, उस भूमि को कल्याणक तीर्थ या कल्याणक भूमि कहते हैं जिस तिथि को तीर्थंकर परमात्मा का कल्याणक होता है वह तिथि कल्याणक तिथि कहलाती है। इस प्रकार प्रत्येक तीर्थकर के पांच कल्याणक होते हैं। परन्तु चौबीसवें व अंतिम तीर्थकर के 6 कल्याणक हुए क्योंकि उनके च्यवन कल्याणक दो हुए, एक तो ऋषभदेव की पत्नी देवानन्दा के गर्भ अवतरण का व दूसरा देवानन्दा से महाराजा सिद्धार्थ की पत्नी रानी त्रिशला के यहां गर्भ-हस्तांतरण का। इस प्रकार 24 तीर्थंकरों के कुल कल्याणक 121 हुए हैं। जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ का एक वर्ग 120 कल्याणक मानता है, अर्थात् गर्भ-हस्तांतरण को कल्याणक नहीं मानता।

सर्वाधिक कल्याणक श्री सम्मेत शिखरजी तीर्थ में हुए जहां 20 तीर्थकर भगवंत मोक्ष गये, अतः यहां बीस कल्याणक हुए। उसके उपरांत श्री अयोध्याजी तीर्थ में 5 तीर्थकरों में एक के 3 कल्याणक व 4 तीर्थकरों के चार-चार कल्याणक हुए, इस प्रकार कुल 19 कल्याणक यहां हुए। श्री चम्पापुर तीर्थ (भागलपुर शहर) ही एक ऐसा स्थान है जहां किसी एक तीर्थंकर परमात्मा के पांचों कल्याणक एक ही स्थान पर हुए। वे परमात्मा थे बारहवें तीर्थकर श्री वासुपूज्य स्वामीजी।

प्रान्त के हिसाब से सर्वाधिक 66 कल्याणक उत्तर प्रदेश में हुए। बिहार में 26 (25), झारखण्ड में 25, गुजरात में 3 और अष्टापद तीर्थ में एक। श्री अष्टापदजी तीर्थ, जहां परमात्मा ऋषभदेव का मोक्ष कल्याणक हुआ, के बारे में जानकारी अभी नहीं है लेकिन यह हिमाचल स्थित कैलाश पर्वत पर है, ऐसी मान्यता है। कुल कल्याणक तीर्थ (स्थल) 23 है।

कुल कल्याणक तिथियां 100 हैं। मार्गशीर्ष (मिगसर) सुदि-11 एक ऐसी तिथि है, जिसमें सर्वाधिक 6 कल्याणक हुए। इसे मौन एकादशी भी कहते हैं।वैशाख माह ऐसा महिना है जिसमें तीर्थकर परमात्मा के सर्वाधिक 17 कल्याणक हुए।

जिन भाई-बहनों को यात्रा करनी हो तो उत्तरप्रदेश, बिहार, झारखण्ड व गुजरात (गिरनारजी) के सभी कल्याणक स्थानों की यात्रा 21 दिन में कर सकते हैं। कम से कम एक बार जीवन में सभी कल्याणक तीर्थो की यात्रा एक साथ ही पूरी करनी चाहिये व दूसरों को भी इसकी प्रेरणा देनी चाहिये।

✻ ललित कुमार नाहटा

हाथी का मनोबल

✻ श्रमण डॉ. पुष्पेन्द्र

एक बार गौतम बुद्ध विहार करते हुए शाल्यवन में एक वट वृक्ष के नीचे बैठ गये। धर्म चर्चा शुरु हुई तो एक भिक्षु ने प्रश्न किया- भगवन, कई लोग दुर्बल और साधनहीन होते हुए भी बड़े-बड़े कार्य कर जाते हैं, जबकि साधना सम्पन्न लोग भी वैसा नहीं कर पाते। ऐसा क्यों ? इस प्रश्न पर बुद्ध एक प्रेरक कथा सुनाने लगे, विराट नगर के राजा सुकीर्ति के पास लौहशांग नामक एक हाथी था। राजा ने कई युद्धों में इस पर आरुढ़ होकर विजय प्राप्त की थी। धीरे-धीरे लौहशांग भी वृद्ध होने लगा और युवावस्था वाला पराक्रम जाता रहा। उपयोगिता और महत्व कम हो जाने के कारण उसके भोजन में कमी कर दी गई। अक्सर हाथी को भूखा-प्यासा ही रहना पड़ता। कई दिनों से पानी न मिलने पर एक बार लौहशांग हाथीशाला से निकल कर पुराने तालाब की ओर चला गया। वहां उसने भर पेट पानी पिया और नहाने के लिए गहरे में जाने लगा। उस तालाब में कीचड़ बहुत था तो वृद्ध हाथी उसमें फंस गया। यह समाचार राजा सुकीर्ति तक पहुंचा। हाथी को निकालवाने के कई प्रयास किये गये पर फायदा नहीं हुआ। जब सारे प्रयास असफल हो गए, तब एक चतुर मंत्री ने युक्ति सुझाई। सैनिकों को जिरह बख्तर पहनाए गये और सबको हाथी के सामने खड़ा कर दिया गया। हाथी के सामने युद्ध नगाड़े बजने लगे और सैनिक इस प्रकार कूच करने लगे जैसे वे शत्रु पक्ष की ओर से लौहशांग की ओर बढ़ रहे हैं। यह देखकर लौहशांग में यौवन काल का जोश आ गया। उसने जोर की चिंघाड़ लगाई और शत्रु सैनिकों पर आक्रमण करने के लिये कीचड़ से निकलकर उन्हें मारने दौड़ पड़ा। बाद में मुश्किल से उसे नियंत्रित किया गया। कथा सुनाकर तथागत बोले- ''संसार में मनोबल ही प्रथम है। वह जाग उठे तो असहाय और विवश प्राणी भी असंभव होने वाले काम कर दिखाते हैं।

भवी-अभवी जीव

संसार में दो प्रकार के जीव हैं- भवी-अभवी। जिसमें मोक्ष में जाने की योग्यता है वह जीव भवी और जिसमें मोक्ष में जाने की योग्यता नहीं है वह जीव अभवी कहलाता है। भवी-अभवी को भव्य-अभव्य भी कहते हैं।

चाहे कोई कितना भी प्रयास कर ले फिर भी अभवी कभी भवी नहीं बन सकता और भवी भी कभी अभवी नहीं बन सकता। जैसे दाल के साथ कोरडु होता है उसे कितना भी पकाओ, वह पकता नहीं, कठोर ही बना रहता है, उसी प्रकार अभवी अभवी ही बना रहता है।

कोई जीव भवी क्यों है या अभवी क्यों है ? यह निर्हेतुक तथ्य है, इसका कोई कारण नहीं है। बस यह कह सकते हैं कि यह अनादि पारिणामिक भाव है।

अभवी कभी सम्यक्त्वी नहीं बन सकता। सम्यक्त्व पाए बिना जीव मोक्ष नहीं पा सकता। अभवी सदा पहले गुणस्थान में ही रहता है।

क्या तीर्थंकर की देशना सुनकर अभवी भवी बन सकता है ? नहीं, ऐसा कहा जाता है कि अभवी तीर्थंकर के समवसरण में प्रवेश ही नहीं कर सकता। तीर्थंकर भव्यजनों को ही देशना प्रदान करते हैं।

कोई जीव अभवी क्यों है ? यह निर्हेतुक तथ्य है, इसका कोई कारण नहीं कि कोई जीव भवी क्यों है या अभवी क्यों है ? यह अनादि पारिणमिक भाव है।

अभवी कभी भवी बन नहीं सकता और भवी जीव मोक्ष में जाते रहते हैं तो क्या कभी संसार भवी जीवों से शून्य बन जाएगा ? ऐसा कभी नहीं होगा, इसके दो कारण है- पहला तो यह कि जितने जीव मोक्ष में जाते है उतने ही जीव अव्यवहार राशि से निकलकर व्यवहार राशि में आ जाते हैं। दूसरी बात यह है कि सभी भवी जीवों में मोक्ष जाने की योग्यता भले ही हो फिर भी सब मोक्ष नहीं जा पाएंगे। इसे उदाहरण से समझें, कई सारे पत्थरों में प्रतिमा बनने की क्षमता होती है फिर भी प्रतिमा वही बन पाता है जिसे शिल्पी का योग मिलता है। उसी प्रकार भवी जनों में मोक्ष जाने की योग्यता होने मात्र से मोक्ष नहीं चल जाएंगे। मोक्ष वे ही जाएंगे जिन्हें अनुकूल वातावरण मिलेगा।

हां अभव्य जीव चारों गतियों में जा सकता है। वह साधु वेश धारण कर द्रव्य साधु बनकर उपदेश दे सकता है किन्तु सम्यक्त्वी नहीं बन सकता है अतः भावों में साधुपन नहीं आता। वह बाल तप और सराग संयम पालकर देवगति में नौ ग्रैवेयक तक जा सकता है।

भवी जीव और अभवी जीव की क्या पहचान है ?

भवी जीव के आत्म परिणामों में बदलाव आ सकता है अर्थात् अगर वह मिथ्यात्वी है तो उन्हें सम्यक्त्व की प्राप्ति हो सकती है। अभवी जीवों के आत्म परिणाम अनादिकाल से जैसे थे वैसे ही रहेंगे व अनंतकाल तक भी नहीं बदलेंगे। वह मिथ्यात्वी थे, है व रहेंगे।

भवी जीव मोक्ष प्राप्ति के लिये पुरुषार्थ करता है। वो कर्म बंध और कर्म बंध से मुक्त होने की प्रक्रिया में विश्वास करता है। अभवी जीव मोक्ष में विश्वास ही नहीं करता। उसके अंदर मोक्ष की अभिलाषा उत्पन्न नहीं हो सकती।

भवी जीव में संवेग (मोक्ष की तीव्र अभिलाषा) उत्पन्न होता है। उसके मन में ये चिंतन रहता है कि मैं मोक्ष में जा सकूंगा या नहीं। कहीं मैं अभवि तो नहीं।

अभवि के ऐसा चिंतन नहीं जिनके ऐसा चिंतन नहीं वह सभी अभवी है ऐसा नहीं है किन्तु अभवी के मन में ऐसा भाव ही नहीं होता।

मिथ्यादृष्टि और अभवी में क्या फर्क है ? मिथ्यादृष्टि अर्थात् आत्मा के न्यूनतम विकास की श्रेणी। अभवी वह जीव जो कभी मोक्ष नहीं जाएंगे।

प्राणी मात्र या तो भवी होगा या अभवी। हर मिथ्यादृष्टि प्राणी अभवी हो यह जरुरी नहीं पर हर अभवी जीव मिथ्यादृष्टि ही होगा क्योंकि वह आत्मा का कितना भी विकास करें पर मोक्ष को या उसको प्राप्त करने के साधनों को स्वीकार नहीं करते।

कौन सा जीव अभवी बनेगा कौन सा भवी इसका चयन कैसे होता है ?

जीव अभवी बनेगा या भवी इसका चयन कोई नहीं कर सकता। स्वयं अरिहंत भी नहीं, क्योंकि उनका भवी या अभवी होना अनादि काल से था, है और रहेगा। यह आत्मा का अनादि पारिणामिक भाव है जिसका चयनकर्ता कोई भी नहीं।

शंका-चैत्यवंदन विधि का प्रारम्भ कब हुआ ?

समाधान- जिन शासन की स्थापना होने के पश्चात गणधर चौदह पूर्व एवं द्वादशांगी की रचना करते है। इसी के अन्तर्गत आवश्यक सूत्र की रचना होती है। चैत्यवंदन विधि का समावेश आवश्यक सूत्र में ही हो जाता है अतः शासन स्थापना के दिन से ही चैत्यवंदन विधि प्रारम्भ हो जाती है। शक्रस्तव (णमुत्थुणं) चैत्यवंदन का मुख्य्य सूत्र है । इसे शाश्वत सूत्र भी माना जाता है। इस दृष्टि से चैत्यवंदन को एक शाश्वत विधि भी कह सकते हैं।

जिन पूजा विधि- पूजा करते समय मुखकोश क्यों और कैसा बांधना चाहिए ? मानव शरीर को अशुचि या पिंड माना गया है। वह स्वभाव से ही अशुद्ध है। गंदगी और बद्बू सदा इसमें उत्पन्न होती रहती है। सर्वत्र परमात्मा की पूजा आराधना करते हुए यह अशुचि आशातना का कारण न बने इस हेतु विशेष ध्यान रखना चाहिए। परमात्मा की पूजा करते हुए भी श्वासोच्छवास की क्रिया जारी रहती है। बाहर निकलती हमारी गर्म श्वास अशुद्धि और दुर्गन्ध युक्त होती है। परमात्मा की पूजा करते समय हमारे श्वासोच्छवास के स्पर्श से जिन बिम्ब की आशातना हो सकती है। बाहर निकलती हुई गर्म उच्छवास इतनी अधिक कीटाणुओं एवं दुर्गन्ध से युक्त होती है कि उसे रोकने हेतु एक दो पट्ट का वस्त्र बांधने से कार्य नहीं हो सकता इसलिये दुपट्टे के किनारे से मुख और नाक पूर्णतः ढंक जाए इस रीति से आठ तहवाला मुखकोश बांधना चाहिए। पूर्व काल में राजा-महाराजाओं की हजामत करते समय हजाम मुख पर आठ पट्ट वाला मुखकोश बांधते थे जिससे उनके मुख की दुर्गन्ध, थूक आदि राजा पर न पड़े। यदि राजा की सेवा करते हुए इतना विवेक रखा जाता है तो फिर त्रिलोकीनाथ राजराजेश्वर परमात्मा की पूजा-अर्चना-सेवा करते हुए विनय रखना तो परम आवश्यक है अतः मुखकोश बांधना ही चाहिये।

आजकल प्रदूषण, विषाणुओं के संक्रमण आदि से बचने हेतु Doctor, Traffic Police एवं सामान्य जनता भी मुख पर Mask पहनती है। इस तरह यह शारीरिक स्वस्थता में भी सहायक बनता है। चंदन घीसते समय अथवा अभिषेक आदि करते हुए मुख से थूक आदि गिरने की भी संभावना रहती है, इससे चंदन आदि अशुद्ध हो सकता है। इसलिये भी मुखकोश बांधना परमावश्यक है।

मुखकोश कब बांधना चाहिए ?

जब भी परमात्मा की अंग पूजा करनी हो अथवा तत्सम्बन्धी द्रव्य को तैयार करना हो तब अवश्यमेव मुखकोश का प्रयोग करना चाहिए। इसी प्रकार आगम आदि ग्रंथों की पूजा एवं वांचना आदि करते समय मुखकोश का प्रयोग करना चाहिए।

मुखकोश बांधने की विधिः-

आचार्य हरिभद्रसूरि पंचाशक प्रकरण में कहते हैं कि-

वत्थेण बंधिउण णासं अहवा जहासमाहिए।
वज्जेयव्वं तु तदा देहम्मिवि कंडुयणमाई ॥

अर्थात् वस्त्र से नासिका बांधकर पूजा करनी चाहिए, जिससे दुर्गन्धयुक्त श्वास आदि प्रभु को न लगे। नासिका बांधने से यदि असुविधा हो तो जिस प्रकार समाधि हो उस प्रकार बांधना चाहिए किन्तु यह अपवाद मार्ग है। यदि किसी को रोगादि के कारण विशेष असुविधा हो तो नासिक को खुली रखते हुए भी पूजा की जा सकती है अन्यथा मुख और नाक दोनों ही बांधने चाहिए।

पुरुषों को खेस (दुपट्टा) के किनारे से ही आठ पट्ट करके मुखकोश बांधना चाहिये। मुखकोश हेतु अतिरिक्त वस्त्र का प्रयोग नहीं करना चाहिए। शास्त्रों में पुरुष वर्ग के लिए दो वस्त्रों का एवं महिलाओं के लिये तीन वस्त्रों का विधान है। अलग से रुमाल के प्रयोग का कहीं भी उल्लेख नहीं है। परन्तु महिलाओं के वर्तमान परिधान (वेश) के अनुसार उनके रुमाल का प्रयोग आवश्यक है। यदि पुरुष वर्ग शरीर खुला न दिखे इसके कारण से खेस के स्थान पर मुखकोश का प्रयोग करते हैं तो ''थणदोष'' नाम की आशातना लगती है।

सिले हुए या रेडिमेड मुखकोश का प्रयोग किया जा सकता है ? वर्तमान में साड़ी आदि के बचे हुए कटपीस आदि से बने हुए रुमाल अधिक प्रचलन में है परन्तु ऐसे रुमालों का मुखकोश के रुप में प्रयोग करना उचित नहीं होता क्योंकि मुखकोश सिला हुआ होने से उसकी पडिलेहन या निरीक्षण संभव नहीं है। यदि मुड़ी हुई सिलाई के भीतर जीव-जन्तु आदि हो तो उसकी जयणा नहीं हो सकती तथा मुख के थूक, लार आदि से गीला हो जाए तो उसे सुखाना भी मुश्किल है। इससे सूक्ष्म जीवोत्पत्ति की संभावना भी रहती है।

यह वर्ष
पूज्यपाद आगमोध्धारक
श्री सागरानंदसूरीजी महाराजा
के जन्म का 150 वां वर्ष है
वर्ष भर आप के श्री संघ में
पूज्यपाद श्री के स्मरण
स्वरुप कार्यक्र म का आयोजन करने की
प्रेरणा है।

श्री धन्ना अणगार

धन्ना अणगार ''काकंदी '' नगरी में रहने वाली भद्रा सेठानी के पुत्र थे। युवावस्था में कुमार का बत्तीस रुपवान कन्याओं के साथ विवाह कर दिया गया। सभी प्रकार की सुख-सुविधाओं में जीवन यापन हो रहा था।

एक बार भगवान श्रीमहावीर ''काकंदी'' नगरी में पधारे। प्रभु की देशना सुनकर कुमार प्रतिबद्ध हुए। माँ की आज्ञा लेकर बत्तीस स्त्रियों का त्याग कर प्रभु के पास धन्ना ने दीक्षा ली। मुनि बनने के बाद प्रभु की आज्ञा लेकर बेले का तप स्वीकार किया। पारणे के दिन आयंबिल करना अर्थात् दिन में एक बार एक धान और पानी लेना। वह भी ऐसा धान जिसे भूख से बेहाल भिखारी भी न खाएं, बचा खुचा फेंकने योग्य आहार इस अरस-विरस आहार से धन्ना का शरीर पूर्णतः कृश हो गया। अस्थि-पिंजर मात्र रह गया। अब न उठने की और न बैठने की शक्ति शरीर में शेष थी। सारी शक्तियां क्षीणप्राय हो गई थी। बोलने में ही नही अपितु बोलने का विचार करने में भी उन्हें कष्ट होता था। केवल जीवन शक्ति के बल पर ही जी रहे थे।

एक बार मगधेश श्रेणिक भगवान श्रीमहावीर के दर्शनार्थ आये। प्रभु की देशना सुनी। अपनी जिज्ञासा रखते हुए पूछा- भगवन ! इन्द्रभूति आदि आपके चौदह हजार साधुओं में कौन साधु दुष्कर साधना करनेवाला है ? उत्कृष्ट क्रियाकारक कौन है ?

भगवान श्रीमहावीर ने कहा-श्रेणिक धन्ना अणगार उत्कृष्ट, कठोर और दुष्कर तप करनेवाले है। यों कहकर धन्ना की सारी तपस्या का वर्णन किया। सुनने वाले सारे रोमांचित हो उठे।

श्रेणिक ने धन्ना अणगार के दर्शन किये। श्रेणिक ने भगवान की कही हुई बात बताकर मुक्त कंठ से स्तुति करते हुए अपने भाग्य की सराहना की।

धन्ना अणगार अपने शरीर को दुर्बल समझकर प्रभु से आज्ञा लेकर विपुलगिरि पर्वत पर गये। अनशन स्वीकार किया। एक मास का अनशन किया। केवल नौ महीने की संयम साधना में तपस्या के द्वारा सर्वार्थसिद्ध विमान में पैदा हुए। वहां से महाविदेह में उत्पन्न होकर मोक्ष प्राप्त करेंगे।

✲ जो कोई सच्चे अंत:करण से सत्पुरुष के वचनों को ग्रहण करेगा वह सत्य को पाएगा इसमें कोई संशय नहीं और शरीर का निर्वाह आदि व्यवहार सबके अपने अपने प्रारब्ध के अनुसार ही प्राप्त होना योग्य है, इसलिए इस विषय में कोई विकल्प रखना योग्य नहीं।

हमें गुस्सा क्यों आता है ?

गुस्सा हमेशा दूसरों की गलतियों पर आता है, स्वयं की गलतियों पर आता है, स्वयं की गलतियों पर नहीं। मानो कि आप शेविंग कर रहे हैं और गाल पर ब्लेड से कट लग गया और खून आ गया तो आप किस पर गुस्सा करेंगे ? किस पर नहीं, हाँ, अगर कोई आप पर थूक दे तो जरुर आग-बबूला हो जायेंगे, पर यदि अपना थूक ही अपने पर गिर जाए तो ? खुद की गलती पर हम गौर नहीं करते, पर दूसरे से गलती हो जाए तो !

मेरे प्रभु, याद रखो, जो मसला सुई से हल हो जाए उसके लिए तलवार मत चलाइए। जो बात आँख दिखाने से समझ में आ जाए उसके लिए गाली-गलौच मत कीजिए क्योंकि अभी-अभी जिस बात पर गुस्सा आया है उसके साथ चार दिन पुरानी बातें और भी जुड़ जाती है, गड़े मुर्दे उखड़ने लगते हैं। अरे भाई, शीशी अभी फूटी है, जबकि पन्द्रह दिन पहले टूटे गुलदस्ते का गुस्सा भी आज शामिल हो जाता है। दूसरी बात, गुस्सा हमेशा कमजोर पर आता है। पिता अपने बच्चों पर, मालिक नौकर पर, बच्चे खिलौनों पर गुस्सा करते दिखाई देते हैं। जो किसी दूसरे पर गुस्सा नहीं कर सकते वह निरीह मूक जानवरों पर क्रोध करते देखे जा सकते है। कुछ नहीं, चल रहे हैं। सड़क पर से उठाया पत्थर और मार दिया किसी कुत्ते पर, जमा दी छड़ी गाय या बकरी पर। गुस्सा हमेशा नीचे की ओर बहता है और प्रेम हमेश ऊपर की ओर।

कहते है एक व्यक्ति सड़क पर जा रहा था। कहीं से आकर पत्थर लगा। उसे क्रोध आ गया। उसने उठाया पत्थर और चला उस घर की ओर जहां से पत्थर आया था कि अभी जाकर खबर लेता हूं, पर वहां जाकर देखा कि एक पहलवान गदा-मुद्‌गर उठाए कसरत कर रहा था। उस व्यक्ति को देखकर उसने कहा- ''ए क्या है ?'' वह व्यक्ति घबराया और कहा- ''कुछ नहीं, आपके घर का पत्थर गिर गया था, लौटाने आया हूं।'' क्रोध कमजोर पर आता है। बलवान के आगे झुक जाता है। क्रोध का परिणाम बड़ा घातक होता है। एक बार क्रोध करने से हमारी एक हजार ज्ञान-कोशिकाएं जलकर नष्ट हो जाती है। जो बच्चे दिन में दस दफा गुस्सा करते हैं उनकी दस हजार ज्ञान-कोशिकाएं नष्ट हो जाती है। इसलिये मेरे बच्चों, सदाबहार प्रसन्न रहो। सहनशील बनो। शांत रहो। अगर आप चाहते हैं कि आपकी स्मरण शक्ति प्रखर बनी रहे तो संकल्प लीजिए कि गुस्सा नहीं करेंगे, नहीं करेंगे, नहीं करेंगे। एक तो गुस्से का त्याग कीजिए। दूसरा मन लगाकर पढ़ाई कीजिए, आप निश्चित ही प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण होंगे।

आप गुस्सा करेंगे तो हृदय कमजोर होगा, पाचन-क्रिया बिगड़ेगी, दिमागी क्षमता कमजोर होती जाएगी। रक्तचाप असंतुलित होगा, भूख नहीं लगेगी, नींद भी नहीं आएगी। क्रोध का अन्य दुष्परिणाम है- स्वयं पर नियंत्रण समाप्त हो जाता है। क्रोध के कारण आपसी संबंधों में खटास आ जाती है। पलभर का क्रोध पूरा भविष्य बिगाड़ सकता है। क्रोध के कारण केरियर भी प्रभावित होता है। जो क्रोध नहीं करता वह एक समय भोजन करके भी ऊर्जावान बना रहता है। उसका स्वयं पर नियंत्रण बना रहता है। मैं अनुशासनप्रिय तो हूं, पर गुस्सा नहीं करता। गुस्सा करना मूर्खता है, जब भी व्यक्ति गुस्सा करता है, मूर्खता को ही दोहराता है। गुस्से में व्यक्ति अपशब्दों का प्रयोग भी करता है। क्रोध आने पर सारी समझदारी एक तरफ हो जाती है और मुंह से गालियां झरने लगती है। हमारे द्वारा किया गया थोड़ा-सा गुस्सा हमारे मैत्रीपूर्ण संबंधों को समाप्त कर देता है। हम अपने गुस्से को अपने नियंत्रण में रखें। इसीलिये कहता हूं जो कार्य सुई से हो जाए, उसके लिये तलवार का उपयोग न करें। मेरी एक चर्चित कहानी है-एक एस.पी. महोदय अपने लाव-लश्कर के साथ किसी दंगाग्रस्त क्षेत्र में पहुंचे। मोहल्ले के लोग बहुत गुस्साए हुए थे। उनमें से किसी ने एस.पी. के मुंह पर थूक दिया। यह देखते ही थानेदार ने रिवॉल्वर निकाल ली और उस व्यक्ति पर तान दी। वह गोली चलाने को तत्पर हुआ ही था कि एस.पी. ने कहा- ''ठहरो, क्या तुम्हारे पास रुमाल है ?'' हाँ, सर है। ''मुझे रुमाल दो।'' रुमाल हाथ में आया। एस.पी. ने मुंह पौंछकर रुमाल फेंक दिया और थानेदार से कहा- ''हमेशा याद रखना जो काम रुमाल से निपट जाए उसके लिए रिवॉल्वर चलाना बेवकूफी है।''

यही है क्रोध को जीतने का पहला और कारगर फार्मूला कि जो काम प्रेम भरे शब्दों से पूरा हो सकता है, उसके लिये तैश क्यों खाया जाए ! क्रोध तभी करें जब क्रोध करने के अतिरिक्त कोई विकल्प न ही बचे। अपने मातहत को, बेटे को, बहू को, नौकर को तभी डांटें-डपटें जब इसके अलावा कोई रास्ता ही न रहे।

नौकर को अगर छोड़ना भी हो गुस्से में न छोड़ें। वह आपके लिए घातक बन सकता है। आपने गुस्से में आकर उसे घर से या दुकान से निकाला है, निश्चय ही इसका गुस्सा उसे भी है। वह अपना गुस्सा आप पर निकाल सकता है। आप पर कोई जानलेवा हमला कर सकता है, गुस्सा क्या नहीं कर सकता है ? हमें गुस्सा क्यों आता है ? जरा इस पर सोचें, विचार करें।

जस्स मणे नमुक्कारो, संसारो तस्स कि कुणई ?

✻ अनोखीलाल कोठारी, उदयपुर

जिसके हृदय में नवकार बसा हो, उसका संसार में कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता है। प्राकृत भाषा में- जस्स मणे नमुक्कारो, संसारो कि कुणई ? गुजराती भाषा में- जेना हे ये श्री नवकार तेने करशे शुं संसार ? चौदह पूर्व के सार भूत नमस्कार महामंत्र की महिमा का बखान किसी भी कलम-स्याही या कागज पर संभव नहीं है परन्तु इसके प्रभाव की महिमा से भरे जैन शासन में अनेकानेक प्रतिभाएं अपने जीवन में इसका अनुभव कर चुकी है।

कलिकाल सर्वज्ञ श्री हेमचंद्राचार्य गुरुवर्य ने माता साध्वी के कालधर्म पश्चात उनके उपकार को समर्पित एवं स्वकल्याण हेतु एक करोड़ नवकार का संकल्प पूर्ण किया था। चौदह पूर्वी भी अंत समय में श्रुत का विस्मरण होने पर नवकार की ही शरण लेते हैं।

अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय एवं साधुगणों की भाव वंदना का यह मूल मंत्र जैन जगत को प्राप्त अनादिकाल शाश्वत देन है। असार दिखलाई देते संसार में नवकार नवनीत के समान है इसलिये जिसे भी यह मंत्र जन्म-जीवन एवं मृत्यु की वेला में प्राप्त हो जाय तो उसका कल्याण ही हुआ है। श्री अभयकुमार की कथा में इस मंत्र का उल्लेख है।

गरीब ब्राह्मण ऋषभदत्त के पुत्र अमरकुमार का वध होने वाला ही था कि उसे तत्क्षण कभी जैन साधु के श्री मुख से सुना नमस्कार महामंत्र याद आ गया और देवी शक्ति से उसकी शूली मिटकर राजसिंहासन बनवाकर उसे बिठा दिया। किसी भी शुभ कार्य में शुभारंभ पूर्व इस मंत्र का मनन संकल्प शुद्धि के साथ किया जाता है। इतिहास के मणिरत्न जैसे माणिकचंद सेठ सिद्ध गिरी की यात्रा में इस मंत्र को निरन्तर मुख में रखते थे जिसके प्रभाव से आकस्मिक मृत्यु भी उन्हें यक्षेन्द्र मणिभद्र बना गई।

श्री नवकार मंत्र जन्म के समय गिनने में आये तो ऋद्धि को देने वाला, मृत्यु के समय गिनने में आये तो सुगति देनेवाला होता है। आपत्ति के समय स्मरण करें तो सैकड़ों आपत्तियोंका निवारण होता है। ऋद्धि के समय स्मरण करें तो ऋद्धि का विस्तार होता है। श्री नवकार महामंत्र जगत की सर्वकाल की आत्माओं का उवाच है। इसके अहर्निश स्मरण से व चिंतन से मनुष्य उन भव्य आत्माओं के अनुरुप बन जाता है। इसीलिये सब मंत्रों में शिरोमणि मंत्र श्री नवकार महामंत्र है।

यह मंत्र कल्याण कल्पतरु का अवन्ध्य बीज है। संसार रुपी हिमगिरि के शिखरों को गलाने में प्रचण्ड सूर्य समान है। पाप रुपी सर्पो को वश में करने में गुरुड़ पक्षी है। दरिद्रता के मूल को उखाड़ने के लिये सुदृढ़ आधार है और सम्यकत्व रत्न के प्रथमतः उत्पन्न करने के लिये रोहणा चल की धरती है। सुगति के आयुष्य रुपी वृक्षा का पुष्प और विशुद्ध सद्धर्म की निर्विघ्न सिद्धि का निर्मल चिन्ह है। तीन लोक (उर्ध्व, अधो-तिरछे) रुपी रंगमंडप में द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव से जो कुछ आश्चर्यजनक, अतिशय युक्त विशेष दिखाता या सुनाई पड़ता है, वह सभी श्री नवकार महामंत्र का ही प्रभाव है।

यह नवकार मंत्र दुःखों को हरण करने वाला है, सुखों को प्रदान करनेववाला, यशदाता और भवसागर का शोषण कर भवसागर से पार उतारनेवाला है। इस लोक और परलोक में सुख का मूल यही नवकार है। नवकार जिनशासन का सार है। चौदह पूर्वो का सार है। यह मंत्र जिसके मन में स्थिर है, संसार उसका क्या कर सकता है ? श्री नवकार महामंत्र हृदय में स्मरण करने से रोग नष्ट हो जाता है, सूक्ष्म शरीर की रचना होती है। आत्म शुद्धि होती है। तेइसवें तीर्थकर भगवान पार्श्वनाथ ने जलते नाग का उद्धार करने के लिए अंत समय में नवकार सुनाया तो वे ही नाग धरणेन्द्र इन्द्र बनकर आज भी शासनोपकार कर रहे है। श्रमणोपासक सेठ के सानिध्य में रहे बैल अंत समय में नवकार श्रमण करके कंवल -शंबलदेव बने और प्रभुवीर को गंगा नदी पार करते हुए देवताओं से मिलकर उपसर्गो से मुक्त करवाया। जैसे अमृत सुवर्ण पात्र में ही रह सकता है, वैसे ही श्री नवकार महामंत्र रुपी अमृत सुवर्ण पात्र में ही रह सकता है। श्री नवकार के प्रभाव से चोर मित्र बनते है, सर्प फूल की माला बनता है, अग्नि जल में, जंगल नगर में, सिंह सियाल में परिवर्तित हो जाते है। इष्ट को खींच लाता है, वश में नहीं आनेवाले को वश में करता है, तेजी दिखानेवालों को स्तंभित कर देता है। श्री नवकार महामंत्र की तुलना संसार में किसी के साथ में तुलना नहीं की जा सकती है। अतः इस महामंत्र नवकार को अचिन्त्य चिंतामणि रत्ने से भी अधिकतम मूल्यवान है। हृदय में नवकार, करे भवपार।

मानव शरीर : अनन्त शक्ति का स्त्रोत

✻ रविलाल वोरा, मुंबई

मानव शरीर की संरचना, नियंत्रण एवं संचालन इस विश्व का सबसे बड़ा आश्चर्य है। आधुनिक विज्ञान की शायद ही कोई मशीन हमारे शरीर के अन्दर न हों। मस्तिष्क के जैसा सुपर कम्प्यूटर हृदय एवं खुद के जैसा शुद्धिकरण संयत्र, आमाशय के जैसा रासायनिक कारखाना, नासिक तंत्र के जैसी सफाई व्यवस्था, नाड़ी तंत्र के जैसी मिलों लम्बी संचार व्यवस्था, अन्तः स्रावी ग्रंथियां के जैसी प्रशासनिक व्यवस्था, आंखों के जैसा कैमरा, प्रकाश की गति से भी तेज गति वाला मन, इत्यादि एक ही स्थान पर अन्यत्र करी, ढूंढने पर भी मिलने कठिन होते है। इससे आश्चर्य तो यह है कि सारे अंग और अवभव शरीर में व्यवस्थित ढंग से अपना कार्य करते हुए एक दूसरे के साथ पूर्ण सहयोग, समन्वय एवं तालमेल रखते हैं।

शरीर के किसी भाग में सुई अथवा पिन चुभने से आँखों से आंसू, मुंह से आह निकलने लगती है। प्रश्न खड़ा होता है कि जिस शरीर में इतना सहयोग एवं तालमेल हो, क्या उसमें कभी कोई अकेला रोग, हमला बोल सकता है ? वास्तव में जिस रोग के लक्षण प्रकट होते है वह रोगों के परिवार का नेता होता है और उसके पीछे सैकड़ों अप्रत्यक्ष सहयोगी रोगों का करमत होता है जिनकी तरफ हमारा ध्यान ही नहीं जाता है। आजकल रोगों के नाम पर रोगियों को गुमराह किया जा रहा है। रोगों की लंबी-लंबी व्याख्याएं की जा रही है परन्तु स्वास्थ्य का मूलधार कौन किया जा रहा है। शरीर को टुकड़ों-टुकड़ों में बांटकर उसका देखने समझने का प्रयास हो रहा है। जबकि उपचार करते समय जब तक पूरे शरीर को एक इकाई मानकर प्रकट हुए रोग का ईलाज नहीं किया जायेगा। तब तक सम्पूर्ण आरोग्य प्राप्ति की कल्पना मिथ्या है।

जब मानव का निर्माता इतना परिपूर्ण है, इतना कुशल है तो उसके निर्माण में कोई नई शक्ति और संकट से बचने के लिये सुरक्षा व्यवस्था का पूर्ण ध्यान रखा जाता है। अब एक ही आवश्यकता है कि हम अपने आपको पूर्ण तौर से समझे और अपनी क्षमताओं को पहचाने जो निर्माता ने संकटकाल के लिये आरक्षित की है। यही हमें संकट में काम आ सकती है। यदि हमारे पास बचने के (बीमार से) सारे उपाय उपलब्ध है तो इसका जरुरत पड़ने पर उपयोग करना चाहिये और यदि हम यह कुदरती उपाय नहीं करते तो हमें दुःखी होने के दिन आयेंगे।

हम अगर थोड़ी देर के लिये श्वास बंद कर दे तो हमारी यह जीवन लीला समाप्त हो सकती है। यदि हम यह प्राण ऊर्जा जो इतनी अमूल्य है और हमें बिना मूल्य मिलती है पर इस पर हम चिन्तन, मनन करना चाहिये। यदि हम दीर्घ श्वास लेंगे तो इतनी हमें ज्यादा प्राणवायु मिलेगी जिससे हमारी आयु बढ़ेगी और शरीर में नई कौशिकाओं का निर्माण होगा। एक छोटा सा बालक कैसे श्वास लेता है उसे हम ध्यान से देखे और उसके अनुरुप श्वास लेने का प्रयत्न करें। हमें यह कुदरर की प्रसादी से लाभ होगा। हमें पानी की भी जरुरत होती है वह कब पीये और कितना पीये ? कैसे पीये और भोजन का कैसा उपयोग करें उस पर हमें चिंतन करना होगा।

भोजन में खास करके भावों का ज्यादा महत्व है। हम आजकल पौष्टिक भोजन पर ज्यादा जोर दे रहे है पर हमें यह पौष्टिक भोजन होटलों में या बाहर नहीं मिल सकता। भोजन में शुद्धता, पवित्राता, स्वच्छता होनी चाहिये। यह सारी बातें हमें होटलों के खाने में नहीं मिलती। इस भोजन में भावों की कमी मेहसूस होती है। घर के अंदर बनाया गया भोजन प्रेमभरे भावोंयुक्त होता है जो हमारे स्वास्थ्य के लिये उत्तम पदार्थ है। माँ, पत्नी, बेटी और बहन से बनाया हुआ भोजन पौष्टिक होता है पर आजकल बाहर का खाना सभ्यता का सूचक बन गया है। इसलिये हमें घर में बनाया गया भाव भोजन इतना स्वादिष्टनहीं लगता पर जिसे प्रेम की जरुरत है, प्रेम से और उत्कृष्टभावों से बनाया हुआ भोजन अच्छा लगता है व बाहर होटल पर खाना नहीं खाना। घर में बनाया हुआ भोजन जिसमें भाव भरे होते है वह भोजन में जो भावों की तरंग होते है वही हमारा स्वास्थ्य अच्छा रखता है।

✻ ज्ञानियों ने मनुष्यभव को चिंतामणि रत्न के समान कहा है, इसका यदि विचार करो तो यह प्रत्यक्ष समझा जा सकता है।

चिंता, तनाव और अवसाद-''अशान्तस्य कुतः सुखम्

*डॉ. सुरेश गर्ग

चिंता, तनाव और अवसाद एक ही परिवार के सदस्य है ! चिंता-मन-मस्तिष्क की कोख में उपजा-तनाव एवं अवसाद का बीज है ! जब चिंतित व्यक्ति अपने अंतरंग एवं बाह्य की समस्या से लड़ने या पिंड छुड़ाने का प्रयास करता है और पूरी तरह सफल नहीं हो पाता तब उस परिस्थिति से निरंतर सामना करते रहने के लिए जो शारीरिक एवं मानसिक उत्तेजना शक्ति पैदा होती है, वह तनाव है ! यदि वह हर प्रयास के बाद भी असफल रहता है और अपने आपको अक्षम, कमजोर, असहाय महसूस करता है तो हताशा, निराशा में डूब सकता है जिसके दुष्परिणाम स्वरुप सामान्य जिंदगी में दुःखी, निष्क्रिय, अन्तर्मुखी अकेला-अकेला हीन भावना एवं नकारात्मक सोच में डूबा भयभीत-सा नजर आने लगता है, यह अवसाद की स्थिति है। इसे ''डिप्रेशन'' कहा जाता है।

चिंता बहुत व्यापक शब्द है- फिक्र, परवाह, शंका, भय, डर आदि उसके ही रुप हैं। इस समस्या को लेकर 20 वीं सदी के मनोचिकित्सक डॉ. सिगमंड फ्रायड ने कई वैज्ञानिक शोध करके चिकित्सा जगत की राह आसान बनाई है ! उन्होंने पीड़ित मानवों पर प्रयोग करने के दौरान उनके व्यवहार का निरंतर अवलोकन (ऑब्जर्वेशन) करते हुए मानसिक रोग के लक्षण, कारण, दुष्प्रभाव, निदान एवं संभवित उपचार पर विस्तृत शोधकार्यो से निकले निष्कर्षो के आधार पर मान्य मनोचिकित्सा विज्ञान स्थापित किया। इसके लिये उन्होंने भौतिक शास्त्र के पहले सूत्र का सहारा लिया- ''लक्षण'' का कोई न कोई ''कारण'' होता है, बिना कारण के कोई लक्षण नहीं हो सकता ! जहां धुंआ है तो वहां आग अवश्य होना चाहिए ! यह सिद्धांत अध्यात्म एवं ''दर्शनशास्त्र'' में भी कर्ता, कारक और कारण के रुप में मौजूद है ! भौतिक शास्त्र के अनुसार विश्लेषणात्मक अध्ययन के दौरान लक्षण को विज्ञान द्वारा निर्धारित पांच कसौटियों पर कसते हुए ''मूल''तक पहुंचा जा सकता है ! पहचान होने के बाद निदान और उपचार आसान हो जाता है ! डॉ. फ्रायड के अनुसार मानव जब तक माँ की कोख में रहता है, तब तक वह भौतिक (मायावी) सृष्टिसे अनभिज्ञ एवं अछूता रहता है। बिना कुछ करें और सहे वह नौ माह नितांत निश्चिंतता से गुजारता है लेकिन पैदा होते ही उसे अचानक जिस बदले असंतुलित प्रदूषित पंचतत्वों के विशेष घुटन भरे अप्रत्याशित नारकीय वातावरण ठंड, गर्मी, स्पर्श, दबाव, चोट, सांस में घुटन आदि के आघातों का सामना करना पड़ता है, उनसे अपने आपको बचाये रखने के प्रयास से उपजी मनोवृत्ति का नाम चिंता है ! मतलब मानव पैदा होते ही जिंदा एवं सुरक्षित बने रहने की एक विशेष आंतरिक लालसा शक्ति- ''चिंता'' से जीवन भर के लिये ग्रसित हो जाता है ! इस दिमागी आघात को ''बर्थ ट्रामा'' यानी पैदाईशी आघात कहा गया है, जिसे नवजात सहते हुए रोने के रुप में प्रगट करता है और कई बार न सह पाने पर दम तोड़ देता है ! अतः चिंतारुपी यह रोगबीज, आदिकाल से चली आ रही सर्वव्यापी जन्मजात मानवीय मानसिक विकृति का पहला लक्षण है। जैसे-जैसे मानव का विकास होता गया, वैसे-वैसे उसमें अहंता बढ़ती गयी और वह उतना ही स्वार्थी यानी अहंतावादी होता गया। ''भगवान सबका भला करे परन्तु सबसे पहले मेरा। ''मैं हूं तो जग है !'' मनोचिकित्सा विज्ञान में इसे ''इगो'' कहा गया है ! आत्मकेंद्रितता ! वर्तमान स्पर्धायी भौतिक व्यापारिक जमाने में यह ''इगो'' (अहंता-व्यक्तिगत स्वार्थ एवं महत्वाकांक्षाएं) तनाव और अवसाद के लिये खाद-पानी का काम करते हैं, जो बढ़ते-बढ़ते विभिन्न मानसिक रोगों के रुप में मानव समाज में परिलक्षित होते नजर आते हैं।

मनोचिकित्सा विज्ञान के अनुसार चिंता-दो प्रकार की होती है- शारीरिक (सोमाटिक) और मानसिक (आंतरिक) जिसे गीतामाता में भगवान ने इच्छा कहा है- ''इच्छा तु द्विविधा...!'' एक इच्छा सत्-ईश्वर प्राप्ति की (आध्यात्मिक) होती है और दूसरी असत्-सांसारिक भोगों की। एक आत्मीय और दूसरी मन, बुद्धि, चित्त एवं इंद्रिय जनित जिसे अध्यात्म में ''काम'' (कामना) कहा गया है, जो क्रोध, लोभ और मोह का जनक होता है जिससे चिंता, तनाव और अवसाद उपजते हैं ! ''निर्द्वन्द्वो हि महाबाहो सुखं बन्धात्प्रमुच्यते।'' कामना भी दो प्रकार की होती है- आत्मीय (ऊर्ध्वगति) जो मानव को अध्यात्म की ओर ले जाती है और सांसारिक (अधोगति) स्वरुप, उसे भोग-विलास की तरफ !

शास्त्रों के अनुसार चिंता के चार मुख्य कारण बताये हैं-

आहार (भूख) निद्रा (अनिद्रा), अंधकार (अज्ञानता) और अकेलापन (असहायता, असुरक्षा) ! अतः इस रोग से देवी-देवता भी नहीं बचे है, असुर, दैत्य, खल तो इस बीमारी के लाइलाज उदाहरण हैं ! गीता के अनुसार ज्ञान, कर्म और भक्तिमार्ग पर चल कर इससे छुटकारा पाया जा सकता है ! सभी धर्म-संप्रदायों में सत्य अहिंसा का अनुसरण करते हुए सात्विक मार्ग अपना कर वीतराग, योग, ध्यान और समाधि जैसे साधनों के माध्यम से अंतिम शांति पायी जा सकती है ! मतलब सादा जीवन, उच्च विचार ! वरना भौतिक जीवन में शारीरिक कारणों के लिए मनोचिकित्सा विज्ञान के कई जटिल निदान और उपचार हैं। भौतिकवादी पश्चिमी समाज में यह समस्या चरम पर देखी जा सकती है। वहां शायद ही कोई व्यक्ति मनोचिकित्सक के पास जाने से बचता है, जबकि आध्यात्मिक भारत में इसका इलाज भारतीय सांस्कृतिक सात्विक जीवन पद्धति अपनाते हुए कर्म एवं भक्तिमार्ग पर चलने से प्राकृतिक रुप से होता रहता है। आम आदमी के लिये पश्चिमी सभ्यता में ''मनोरोग अस्पताल हैं और भारत में सत्संग और धर्मस्थल ! गीतामाता कहा है-''अशान्तस्य कुतः सुखम्'' **आभार- प्रेरणा**

धन्यवाद का मूल्य

रुडयार्ड किपलिंग अपनी व्यवहार कुशलता और हाजिर जवाबी के कारण अक्सर लोगों की ईर्ष्या का पात्र बन जाते थे। इसलिए विरोधी उन पर वार करने के किसी भी मौके से नहीं चूकते थे। एक दिन उनका इंटरव्यू लिया जाना था। विरोधियों को जब इसका पता चला तो उन्होंने इंटरव्यू लेने वाले पत्रकार से ऐसे प्रश्न पूछने को कहा- जिनसे उन्हें आघात पहुंचे। पत्रकार स्वयं भी किपलिंग से चिढ़ता था। उनसे मुलाकात होने पर पत्रकार से पहला प्रश्न पूछा- ''सर, मैंने पढ़ा है कि आप अपने लेखन से बहुत पैसा कमाते है।'' रुडयार्ड बोले- लेखन विचारों की भाषा रुप में उतारता है और लेखन के ही माध्यम से हम अपने विचारों को तेजी से अन्य व्यक्तियों तक पहुंचा सकते है। यह जवाब सुनकर पत्रकार व्यंग्य करते हुए बोला- ''वह तो ठीक है, लेकिन मैंने यह भी सुना है कि आपका एक-एक शब्द सौ डॉलर्स से भी अधिक मूल्यवान है। इसमें कहां तक सच्चाई है ? यह सुनकर किपलिंग मुस्कराते हुए बोले- यह बात तो आपको वहीं से पता चल सकती है जहां से आपने इसको सुना है। इसका जवाब मैं कैसे दे सकता हूं ? इस पर पत्रकार तुरन्त बोला- सर बिल्कुल दे सकते हैं। आप मुझे इसी समय सौ डालर का एक शब्द दें। यह लीजिए सौ डालर। यह बोलकर पत्रकार ने सौ डालर का नोट किपलिंग की ओर बढ़ाया। किपलिंग ने एक नजर सौ डालर के नोट पर डाली। उस वक्त उनका इंटरव्यू अनेक लोग सुन रहे थे। इसके बाद उन्होंने सहजता से पत्रकार से सौ डालर का नोट लिया और उसे तह करके अपने पास रखते हुए मुस्कराकर बोले- ''धन्यवाद।'' यह सुनते ही हर ओर तालियां बज उठीं। तालियां बजती देख रुडयार्ड किपलिंग मुस्करा कर बोले- महाशय, मैंने आपको सौ डॉलर का शब्द दे दिया है। अब पत्रकार का चेहरा देखने लायक था।

महाप्राण निराला

महाप्राण निराला अपनी दानशीलता के लिये बहुत प्रसिद्ध थे। स्वयं फटे कपड़ो में रहना और दूसरों को सब कुछ दे डालना उनका स्वभाव बन गया था, जाड़ों में न जाने कितनी बार महादेवी वर्मा अपने हाथों से सिलकर उन्हें रजाई दे आती लेकिन वे एक भी नहीं रख पाते, सब बांट देते और खुद फटी चादर ओढ़कर ही सोते। एक बार एक प्रकाशक ने उनकी किसी पुस्तक की रॉयल्टी तीन सौ रुपये उन्हें दिए। वे रुपये लेकर अपने निवास स्थान दारागंज लौट रहे थे कि अलोपीबाग के चौराहे पर एक भिखारिनी ने कहा- ''बेटा, मैं बहुत भूखी हूं। इस भूखी-प्यासी भिखारिन को कुछ दे दो।'' भावुक और संवेदनशील कवि का मन यह सुनते ही द्रवीभूत हो गया और आँखें तरल हो गई और उन्होंने भिखारिन से पूछा- माँ तुम्हें कितने रुपये मिल जाएं, तो तुम भीख मांगना छोड़ दोगी। भिखारिन ने आश्चर्य से भरकर निराला की ओर देखा और मन ही मन सोचने लगी। ये मुझसे भीख मांगना छोड़ देने की बात कर रहा है। उसने कहा- बेटा, ''क्यों हंसी करते हो ?'' प्रत्युत्तर में निराला ने कहा- ''तुमने मुझे बेटा कहा है और निराला की माँ भीख नहीं मांग सकती।'' उन्होंने अपनी जेब से तीन सौ रुपये निकाल कर भिखारिन को दे दिया और अपने घर की ओर चल दिये। भिखारिन जड़वत् ऐसे अनोखे दानी को जाते हुए देखती ही रह गई।

समस्त संघर्ष का समाधान अनेकान्त में है

✻ प्रेमचन्द्रजी शाह

संसार में प्रत्येक जीव के मन में एक बहुत बड़ी गलत फहमी घर कर के बैठी है कि मैं सही हूं, सामने वाल व्यक्ति गलत है। इसका मुख्य कारण हमारी दूसरों के अवगुण देखने की आदत। दूसरों की छोटी-छोटी गलतियों को हम सूक्ष्म दर्शक कांच से देखने के आदि है। सामने वाले का छोटा-सा दोष हमारी आंख में मोतियाबिन्द के समान समाया रहता है। वह छोटा-सा मोतियाबिन्द हमारी दृष्टिको इस हद तक बाधित कर देता है कि सामने खड़ा पहाड़ (हमारी बड़ी से बड़ी भूल) भी हमें नहीं दिखाई देता। किन्तु जब ऑपरेशन करके मोतियाबिन्द निकाल दिया जाता है, हमारी दृष्टि स्वच्छ हो जाती है, अब वह स्वयं की छोटी से छोटी भूल को भी सूई के छेद की तरह स्पष्ट देख सकते हैं। प्रत्येक व्यक्ति संदर्भ के में किसी निर्णय पर पहुंचने के पूर्व सामने वाले के नजरिये से देखने का प्रयत्न करना चाहिये। सामने वाला अपनी अपेक्षा से सही भी हो सकता है।

इस वाक्य को सामने रख कर सोचना ही अनेकान्तवाद है ऐसी सोच के द्वारा जब हमारे मन से कलुषता मिट जाती है तब सामने वाले का मन भी स्वस्थ हो जाता है। संघर्ष टल जाता है। राष्ट्र,समाज,परिवार में प्रत्येक क्षेत्र में ऐसी सकारात्मक सोच आवश्यक है। यदि हम दूसरे में दोष की जगह कोई गुण देखने का प्रयास करें उस गुण को 100 बार दोहराएं और यदि वे शब्द सामने वाले के कान पर पड़गये तो वह भी पश्चाताप करते हुए पवित्र बन जाएगा। एक बार प्रयास करके अवश्य देखें।

एक बार विश्वामित्र ऋषि के मन में राजर्षि पद पाने की तीव्र इच्छा जागी उस समय गुरु वशिष्ठ इस पद को सुशोभित कर रहे थे। किन्तु वशिष्ठ के जीते जी वह पद उन्हें नहीं मिल सकता था। अंत में उन्होंने गुरु वशिष्ठ का खून करने की ठानी। वे अंधेरी रात में छुरी लिए वशिष्ठकी कुटिया पर गये। किन्तु यह क्या ? उन्होंने कुटिया के पास जाते ही गुरु वशिष्ठ द्वारा उनकी स्वयं की प्रशंसा के बोल सुने। गुरु वशिष्ठ पत्नी से कह रहे थे-विश्वामित्र ऋषि अब उच्च कक्षा तक पहुंच गये है, उनके जैसा अन्य कोई उत्तम व्यक्ति नहीं है। मैं चाहता हूं मैं अपने जीते जी अपने हाथ से उन्हें राजर्षि पद से सुशोभित कर इस पद भार से मुक्त हो जाऊं। विश्वामित्र के मन का मैल धूल गया। वे गुरु वशिष्ठके चरणों में गिर कर क्षमा मांगने लगे। जीना तो उसका ही सफल है जिसके हित की कामना शत्रु स्वयं करते हो। गुरु वरिष्ठ ने उन्हें उठाते हुए कहा उठो राजर्षि उठो, आपका स्थान मेरे चरणों में नहीं हृदय में है।

मृत्यु का भी उत्सव बनाओ

मृत्यु इस जगत का सबसे बड़ा झूठ है। मृत्यु होती ही नहीं। जीवन है और जीवन है। जीवन के पार जीवन है। पर्त-पर्त जीवन है। जीवन की अनंत श्रृंखला है। मृत्यु तो केवल परिधान का बदला लेना है, जीर्ण वस्त्रों को छोड़ देना, बस इतना ही नहीं।

जैसे पतझार आता है और पुराने पत्ते गिर जाते हैं और वृक्ष नग्न खड़ा रह जाता है, मगर नग्न वृक्ष में जिसके सारे पत्ते झड़ गये है, उदासी नहीं है, दुःख नहीं है, पीड़ा नहीं है और आकाश की पृष्ठभूमि में तभी तो पत्तों से शून्य वृक्ष का एक अपूर्व सौंदर्य होता है। पत्तों से शून्य नग्न वृक्ष का भी एक अपना अनूठा ढंग, शैली और व्यक्तित्व होता है। उसकी अपनी शांति होती है, अपना शून्य होता है। फिर आयेगा मधुमास, फिर बसंत आयेगा, फिर अंकुर निकलेंगे, फिर नये पत्ते, फिर नये फूल। वृक्ष को भरोसा है, इसलिये उदास नहीं है, विश्राम कर रहा है। मधुमास की प्रतीक्षा करेगा।

मृत्यु का भी उत्सव बनाओ, क्योंकि चला कोई नये जीवन के मार्ग पर। जितने दिन हमारे साथ था, उस सबके लिये धन्यवाद तो दो, जाते यात्री को धन्यवाद तो दो। इतनी लंबी यात्रा पर जा रहा है, फिर मिलना होगा या न होगा, इसे उदास क्षण तो बनाओ। रो-धोकर इसके सौंदर्य को खंडित न करो ! विदा प्रीतिपूर्ण हो, उत्सव पूर्ण हो, शुभाशीषों से भरी हो, अनंत यात्रा की कामना से भरी हो।

✻ मल, विक्षेप और अज्ञान ये तीन जीव के अनादि के दोष है, ज्ञानी पुरुषों के वचन की प्राप्ति होने पर, उसका यथायोग्य विचार होने से अज्ञान की निवृत्ति होती है। उस अज्ञान की संतति बलवान होने से उसका निरोध होने के लिए और ज्ञानी पुरुष के वचनों का यथायोग्य विचार होने के लिए, मल और विक्षेप मिटाना योग्य है। सरलता, क्षमा, अपने दोषों का निरीक्षण, अल्प-आरंभ, अल्प-परिग्रह ये सब मल को मिटाने के साधन है। ज्ञानी पुरुष की अत्यंत भक्ति, विक्षेप मिटाने का साधन है।

ऋतुराज बसन्त

* श्रीमती प्रभा जैन, देवास

मानव जीवन की प्रमुख विशेषता रही है कि वह अपनी जिन्दगी को अपने जीवन को किसी भी प्रकार से सुखमय, शांतिमय, आनंदमय बनाना चाहता है। मानव कभी त्यौहारों के माध्यम से, कभी संस्थाओं के माध्यम से, कभी तीर्थस्थानों में दर्शन करने के माध्यम से, कभी धार्मिक सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से अपने जीवन को सहर्ष बीताना चाहता है। परिवर्तन जीवन का नियम है कभी सुख तो कभी दुःख के बादल छा जाते है।

ऋतुराज बसंत भी परिवर्तन का द्योतक है, पृथ्वी पर ऋतुओं का अपना साम्राज्य है। भारत वर्ष में वर्ष को 6 ऋतुओं में बांटा गया है। ऋतुएं 6 है- ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर और बसन्त। इनमें बसंत तो सब ऋतुओं का राजा है। सभी ऋतुओं के अपने-अपने ठाठ है, अपने-अपने रंग है। शिशिर ऋतु से ही बसंत की महक आने लगती है। पेड़, पौधे, जीव-जन्तु, वनस्पतियां, बसंत का आव्हान करने लगती है।

बसन्त ऋतु के आगमन से फूलों में बाहर आ जाती, खेतों में सरसो चमकने लगती, गेहूं में नई बातियां आ जाती, आम पर मौर आ जाते, मयूर अपनी प्रेयसियों को नाच नाचकर रिझाने लगते, मन्द-मन्द समीर चलने लगती। पौराणिक बसन्त कामदेव का पुत्र बताया जाता है। रुप सौंदर्य के देवता कामदेव के घर में पुत्रोमति का समाचार पाते ही प्रकृति नृत्यरत हो जाती है।

किसी कवि ने ठीक ही कहा है-

तुम आओ बसंत तुम्हारे लिए वसुधा
ने ह्रदय पर मंच बना दिए है।
पथ में हरियाली के सुन्दर-सुन्दर
पावड़े बिछा दिए है ॥
चहे और पराग भरे सुमनों के
नये विरवा लगा दिए हैं।
ऋतुराज तुम्हारे ही स्वागत में
सरसों के दीप जलवा दिए है ॥

ऋतुराज बसंत का समय 22 फरवरी से 22 अप्रेल तक होता है। भारतीय गणना के अनुसार इसका समय फाल्गुन से वैशाख माह तक होता है। इस ऋतु के अंतर्गत पड़ने वाले प्रमुख त्यौहार होली, रामनवमी, महावीर कल्याणक का भी अत्यधिक महत्व है। देवता भी इस ऋतु का आनन्द प्राप्त करने को तरसते है। इस ऋतु के अंतर्गत अनेक देव आराधना उपासना भी होती है।

विद्या की देवी ''सरस्वतीजी'' का जन्म दिवस भी बसंत पंचमी है। विद्या अध्ययन प्राप्त करने के लिए सर्वप्रथम सरस्वतीदेवी को ही याद किया जाता है। ब्रह्म पुराण के अनुसार देवी सरस्वती इसी दिन ब्रह्माजी के मानस से अवतरित हुई थी। सरस्वतीजी की आराधना भगवान ब्रह्माजी, शंकरजी भी करते है। वाणी, बुद्धि, ज्ञान, विद्या की अधिष्ठात्री भी सरस्वतीदेवी है। पुराणों में कहा गया है कि सरस्वतीजी से खुश होकर भगवान श्रीकृष्ण ने उन्हें यह वरदान दिया था कि बसंत पंचमी के दिन उनकी आराधना की जाएगी।

या देवी सवीभुतेषु विद्या रुपेण संस्थिता,
नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमो नमः।

अर्थात् जो देवी सर्वभूतों ने विद्या रुप में स्थित है, उन आद्या शक्ति को नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार है।

इस पर्व पर पीले रंग का विशेष महत्व है, फसल से धरती भी पीली नजर आती है, पीला रंग बुद्धि का परिचायक है, नवीन कार्यो के लिए शुभ दिन है। बसंत पंचमी स्वयं सिद्ध मुर्हूत है।

ऋतुराज बसन्त आत्मा के माधुर्य को जगाने वाला मौसम है। हम भी अपनी आत्मा का सौंदर्य बनाए, चिंतन, मनन करें। हम जिनवाणी के प्रति अपने जीवन के क्रियाकलापों में श्रद्धा भाव रखे।

यश कीर्ति की लिप्सा में आसक्त मानव लक्ष्मी को अग्रस्थान देता है। यह एक विचारणीय हकीकत है। लक्ष्मी की प्राप्ति से यश-कीर्ति मिलती है ? या लक्ष्मी के त्याग से ? कृपण करोड़पति की यश-कीर्ति कभी हुई है ? उत्तर ना में होगा। उदार करोड़ पति की कीर्ति फैलती है जग में, यशोगाथा गाई जाती है। यह सत्य है। तो सोच-यशोगाथा लक्ष्मी के होने से गाई जा रही है या उदारता का गुण होने से गाई जा रही है ?

विज्ञान बहुत कुछ कर गुजरा, अब दर्शन की बारी है

विज्ञान का तात्पर्य प्रकृति के कुछ रहस्यों का उद्‌घाटन अथवा कुछ उपकरणों का निर्माण कर लेना मात्र नहीं है, वरन उसकी व्यापकता मानवी दृष्टिकोण को अधिक सुविस्तृत तथ्यपूर्ण एवं सत्यनिष्ठ बनाने तक चली जाती है। विज्ञान का उपयोग भौतिक सुख-सुविधाओं के संवर्द्धन अथवा जानकारियों का क्षेत्र बढ़ाने तक सीमित नहीं है वरन वास्तविक उपयोग यह है कि हम तथ्य और सत्य को प्रश्रय दें। परंपराएं कितनी ही पुरानी अथवा बहुमान्य क्यों न हों यदि वे यथार्थता और उपयोगिता की कसौटी पर सही नहीं उतरती, तो उन्हें बदलने के लिये सदा तत्पर रहे। नये या पुराने के झंझट में न पड़कर विज्ञानी सत्य को ही मान्यता प्रदान करता है।

विज्ञान न केवल एक प्रक्रिया है, वरन एक प्रवृत्ति भी है जिसका फलितार्थ है- साहसपूर्ण, विवेचनात्मक एवं तथ्य समर्पित यथार्थवादी दृष्टिकोण। सत्य की खोज के लिए यह आवश्यक है कि हम तर्क और तथ्य की कसौटी पर प्रत्येक मान्यता और परंपरा को कसें और उनमें से जो भी खरी उतरती हों उन्हीं को अंगीकार करें। विज्ञान के इस पक्ष को ''दर्शन'' कहा जाता रहा है। वस्तुतः दोनों के समन्वय से ही एक पूर्ण विज्ञान की प्रतिष्ठापना होती है।

मान्यता पुरानी है या नई, इस व्यामोह से निकल कर जो तथ्य है, उसी को स्वीकार करने की बात यदि मन में समा जाए, तो समझना चाहिये कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण मिल गया। यथार्थवादी चिंतन और औचित्य का अवलंबन जिन्होंने अपनाया उन्हें विचार क्षेत्र का वैज्ञानिक ही कहना चाहिये। दूसरे शब्दों में उसे दार्शनिक भी कह सकते हैं।

भौतिक विज्ञान की अपनी सीमा और उपयोगिता है। वह पदार्थ की स्थिति और गति का विवेचन करता है और वस्तु की मूलभूत सूक्ष्मता का पता लगाता है। वह सूक्ष्म-से- सूक्ष्मतर और सूक्ष्मतम तक पहुंचाने के लिये निरंतर आकुल-व्याकुल रहता है और अधिकाधिक गहराई तक पहुंचने के लिए अधिकाधिक प्रयास करता है।

भावनात्मक क्षेत्र में भी दर्शन-विज्ञान की गतिविधि इसी आधार पर अधिकाधिक कलात्मक और सौंदर्योपासक बनती जाती है। किन व्यक्तियों और किन पदार्थों की कितनी उपयोगिता है, इस स्थूल कसौटी की अपेक्षा वह उनकी स्थिति में सन्निहित महान संवेदनाओं की गहराई तक पहुंचने का प्रयास करता है।

चेतना का सूक्ष्मतम स्तर है- सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम्। वस्तुओं में लोभ और व्यक्तियों में मोह का दृष्टिकोण बहुत ही स्थूल है। यह अहंता का आरोपण मात्र है। जिस संपत्ति को हम अपने अधिकार के अंतर्गत मानते हैं, वह हमें प्रिय लगती है और जिन व्यक्तियों को अपने परिवार के मान लेते हैं। उनमें आसक्ति बढ़ जाती है। इसी प्रिय परिधि की समीपता सुहाती है और उसे बढ़ाने तथा रखाने की ललक लगी रहती है। आमतौर से सुख-संतोष की परिधि उतने ही क्षेत्र में अवरुद्ध होकर रह जाती है। जो किया और चाहा जाता है, वह उसी सीमा में बंधा रहता है। यह अहंता की प्रतिध्वनि मात्र है, इसमें वस्तु के मूल सौंदर्य का दर्शन हो ही नहीं पाता और व्यक्ति लोभ और मोह के अँवर-डँवर देखता हुआ बालकौतुकों में उलझा रहता है।

कला, काव्य एवं सौंदर्य को भावनात्मक संवेदना तथा चिंतन की सूक्ष्मतर परिधि कह सकते हैं। नृत्य-गायन कला नहीं, कला का आवरण है। उस माध्यम से अंतःकरण में जो उल्लास प्रस्फुरण उमगता है, वह संवेदना ही कला है। काव्य किन्हीं तुकबंदी या छन्दविन्यास को नहीं कहते। शब्दों का आवरण उठाकर विशिष्ट स्तर के भावोद्रेक को सजाया भर जाता है। उन शब्दों के अंतरंग में जो कोमलता झाँकती है और चेतना में गुदगुदी पैदा करती है वही कविता है। सौंदर्य वस्तुओं की सज्जा, दृश्यों की शोभा एवं व्यक्तियों के अंग-गठन पर निर्भर नहीं है वह तो प्रकृति की मृदुल सुषमा एवं आत्मा की कोमल-कान्त संवेदनशीलता को अपने अंतरंग-चित्रपट पर कलात्मक तूलिका के साथ चित्राण कर सकने की कलाकारिता है। सुंदरता को दूसरे शब्दों में दिव्यानुभूति कह सकते हैं। जो भावभरे अंतःकरणों में अपनी विशिष्टता के अनुरुप उमगती, उभरती रहती है। उसका किसी की अंग-संगठना से कोई विशेष संबंध नहीं है।

संभव है वनस्पतिशास्त्री को कोंपलों और कलियों में मात्र रासायनिक प्रक्रिया का कोई अमुक क्रम विकास भर दिखाई पड़े। भौतिकी का शोधकर्ता प्रभातकालीन अरुणोदय

की प्रकाश किरणों को नेत्रगोलकों के साथ जुड़े हुए प्रभाव-प्रत्यावर्तन मानकर संतुष्टहो सकता है। किसी की आँखों से टपकते आँसूओं को रसायनवेत्ता कुछ क्षार, श्लेष्मा, प्रोटीन, पानी आदि का सम्मिश्रण बताकर अपना समाधान कर सकता है। खगोलज्ञ के लिये ग्रह-तारकों की दूरी, परिधि, कक्षा आदि जानना पर्याप्त लग सकता है, पर जिनके दृष्टिकोण में संवेदनाओं की कोमलता विद्यमान है उसे पुष्प को, प्राकृतिक सौंदर्य को, अरुणोदय की पुण्य वेला को, किसी करुणार्द्र के अश्रुप्रवाह को, झिलमिलाते तारकों वाली निशा को देखकर जो अनुभूति होती है वह अपने स्थान पर अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं। कला, कविता एवं सौंदर्य की परख वस्तुतः संवेदनशील धाराएँ है, जो भावना क्षेत्र को अनेकानेक भाव-लहरियों की थिरकन के साथ आंदोलित करती हैं। इन्हें दार्शनिक उपलब्धियां कहा जा सकता हैं। अंतकरण का विकास कोमल संवेदनाओं के क्षेत्र में न हो सके, तो उसका शारीरिक पिछड़ापन वन्य-प्राणियों से भी की गई-गुजरी स्थिति में खड़ा कर देगा।

भौतिक विज्ञान को असंस्कृत समझने का कोई कारण नहीं क्योंकि उसका उद्देश्य न केवल अणु-सत्ता का विवेचन एवं उपयोग जानना है, वरन चेतना के साथ जड़ी हुई कोमल संवेदनाओं को उभारकर अंतःकरण की भावभरी रसानुभूति प्रदान करना भी है। इन दोनों प्रयोजनों के साथ लेकर चलने से ही विज्ञान की पूर्णता बनती है अन्यथा भौतिकी को ही विज्ञान मान लेने पर तो वह सचमुच ही असंस्कृत बन जाएगा। तब उसे लँगड़े, काने, कुबड़े, पंगे, नकटे, बूचे की संज्ञा दी जा सकेगी, वह वस्तुतः कुरुप एवं कर्कश ही बन जाएगा।

जीवन को जड़और चेतना का समन्वय कह सकते हैं। हमें पदार्थों का भी उपयोग करना पड़ता है और चेतनता से भी वास्ता पड़ता है। हमारा शरीर स्वयं जड़-पदार्थों से बना है और अंतःकरण में चेतना की सत्ता विद्यमान है। उभयपक्षीय वस्तुस्थिति से अधिकाधिक आनन्द लेने के लिये उनकी सूक्ष्मता में प्रवेश करना आवश्यक है, ताकि जो अभी तक नहीं मिल सका वह आगे मिल सके। इस आवश्यकता की पूर्ति स्थुल जड़जगत के क्षेत्र में भौतिकी द्वारा संभव होती है और चेतना के क्षेत्र में भावसंवेदना के अंतराल में प्रवेश करके वह प्रयोजन सिद्ध किया जा सकता है।

विज्ञान और दर्शन का क्षेत्र पृथक रखा जाए, तो दोनों ही अपूर्ण रह जाएँगे। वस्तुतः वे दोनों दो हैं भी नहीं। एक ही तथ्य के दो पूरक पक्ष हैं। भौतिक जड़ पक्ष को संभालता है और ब्रह्मविद्या चेतना को सुसंस्कृत बनाती है। तथ्यों की उपेक्षा करने मात्र से, चिंतन की कलाबाजी का खेल खड़ा करते रहने वाला दर्शन भ्रांतियों का भंडार बन जाएगा, वह हमें अवास्तविक कल्पनाओं की उड़ान में उड़ते रहनेवाला-दिवास्वप्न देखाते रहने वाला मात्र बनाकर रख देगा। इसी प्रकार जड़ पदार्थों की क्षमता पर निर्भर होते-होते हम स्वयं हृदयहीन मशीनी मनुष्य मात्र बनकर रह जाएँगे। विज्ञान को दर्शन के साथ और दर्शन को विज्ञान के साथ अपना ताल-मेल बिठाना पड़ेगा। यद्यपि आज यह बहुत कठिन दिखता है, पर कल इसकी अनिवार्यता अनुभव की जाएगी। सत्य और तथ्य का समन्वय करने से ही सर्वतोमुखी प्रगति के दोनों पहिए गतिशील हो सकेंगे।

विज्ञानी को कलाकार बनना चाहिये और कलाकार को विज्ञान के साथ अपना मेल-जोल बढ़ाना चाहिये। दर्शन और विज्ञान को मिलाकर उभयपक्षीय आवश्यकताओं की पूर्ति करनी चाहिये। दोनों को दो धाराओं में बहते हुए भी एक लक्ष्य पर पहुंचना चाहिये। यदि विज्ञान बिना हित-अनहित का विचार किए घातक आविष्कार करता रहा और विलास-वृद्धि में आविष्कारों का उपयोग होता रहा,तो मनुष्य अपनी कलाकारिता को अनावश्यक समझने लगेगा और उसकी सौंदर्यानुभूति समाप्त हो जाएगी। यदि ऐसा हुआ तो विज्ञान की प्रगति सचमुच बहुत महँगी पड़ेगी।

विज्ञान के संपर्क में दर्शन की सत्ता को खतरा उत्पन्न हो जाएगा, इस प्रकार सोचना तभी उचित है जब वह अवास्तविक आधारों को लेकर चल रहा हो। अब बुद्धिवादी युग आ गया। क्यों और कैसे की कसौटी पर कसे बिना अगले दिनों किसी भी प्रचलन को स्वीकार न किया जा सकेगा। यथार्थता की परीक्षा से यदि दर्शन भागेगा तो उसका यह भगोड़पन ही उसकी सच्चाई समझ ली जाएगी और दंभी बताकर समय का प्रवाह उसका साथ छोड़ देगा, तब उसे बेमौत मरना पड़ेगा, इससे अच्छा यही है कि वह समय रहते आत्म-निरीक्षण, परीक्षण करके इस योग्य बना ले कि तथ्यों का सामना करने में उसे डरने की तनिक भी आवश्यकता न रहे। दर्शन का गौरव इसी में है।

विज्ञान को अपना क्षेत्र जड़की परिधि से अधिक विस्तृत करके उसे चेतना तक विकसित करना होगा। चेतना जड़ की

प्रतिकृति, प्रतिच्छाया नहीं। पदार्थ का उपयोग करना मात्र ही ही उसकी तृष्टि का आधार नहीं है। आत्मा में कुछ ऐसा भी है जिसे अलौकिक, अद्भूत और सरस कह सकते हैं। प्रत्यक्ष को ही मात्र कसौटी मानकर चेतना की सत्ता को झुठलाया जा सकता है, पर इससे काम कहां चलेगा ? भावनाओं का अपना स्थान है और अपना स्तर। उनकी अपनी गरिमा है और अपनी संवेदनात्मक दिव्यता। यदि ऐसा न होता तो उसकी चेतना एक कम्प्यूटर जितनी होकर रह जाती।

विज्ञान की उपलब्धियों ने इस भूखण्ड के निवासियों को अत्यंत समीप ला दिया है। द्रुतगामी वाहनों ने दूरी को दूर कर दिया है। संचार साधनों-इंटरनेट व टेलि कॉम नेटवर्क से हम दूरभाषण और दूरदर्शन की आवश्यकता क्षण भर में पूरी ही नहीं कर लेते, हमें संसार भर की खबरें तत्क्षण ही मिल जाती हैं। विस्तृत क्षेत्र में फैली हुई दुनिया अब एक गाँव में रहनेवाले लोगों की तरह इकट्ठी हो गई है। दूरी क्रमशः द्रुतगति से निरस्त होती जा रही है। यह भौतिक उपलब्धियाँ, भौतिक विज्ञान द्वारा प्रदान की गई है। दर्शन को, मनों की दूरी दूर करनी चाहिये और अंतःचेतना की इकाई को घटाना चाहिये। किलोमीटरों की दूरी विज्ञान ने निरस्त कर दी और दर्शन का काम है कि व्यक्तिवाद की संकीर्णता को हटाने और आत्मवत सर्वभूतेषु की, विश्वमानव एवं विश्व परिवार की उदात्त मनःस्थिति को विकसित करने में अपने समस्त प्रयासों को केंद्रित कर दिखाए। जड़ता और अहं के निविड़ बंधनों से मानव-जाति को छुड़ाने में दर्शन को ही महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी। देवत्व की सदाशयता का विकास कर सकना उसी के हाथ में है। मानवी संस्कृति का संरक्षण दर्शन के अतिरिक्त भला और कौन कर सकेगा ? विज्ञान व दर्शन का समन्वय ही इक्कीसवीं सदी की आचार-संहिता का निर्माण करेगा।

❊ परमयोगी ऐसे श्री ऋषभदेव-आदि पुरुष भी जिस देह को न रख सके, उस देह की एक विशेषता यही रही है कि जब तक उसका संबंध रहे, उस समय तक जीव असंग और निर्मोहि बन कर अबाध्य अनुभव-स्वरुप ऐसा निजस्वरुप जानकर अन्य सब भावों से अलग हो जाय, ताकि फिर से जन्म-मरण का फेरा न रहे।

बारह आराओं का स्वरुप

जैन भूगोल का जब भी वर्णन आता है तब छः आराओं के बारे में अवश्य ही जिक्र होता है। अढ़ाई द्वीप के भरत क्षेत्र व ऐरावत क्षेत्र में अवसर्पिणी काल और उत्सर्पिणी काल क्रम से आते हैं। बाकी के क्षेत्रों में एक ही प्रकार का निश्चित काल रहता है।

अवसर्पिणी व उत्सर्पिणी काल में छः-छः आराएं होती है। इस प्रकार बारह आराओं का कालचक्र नित्य चलता रहता है। अवसर्पिणी काल में एक से छः तक की आराएं क्रमशः आती है। उत्सर्पिणी काल में छः से पांच, चार, तीन, दो और पहले क्रम में आरा आते हैं। इस प्रकार कुल बारह आरा है। आज तक बारह आराओं के एक, इस प्रकार के अनंता कालचक्र हो चुके है और भविष्य में भी अनंता कालचक्र गुजर जाएंगे। यह प्रक्रिया अनादि काल से चल रही है और अनन्त काल तक चलती रहेगी।

अवसर्पिणी काल का पहला आरा सुषमा सुषमा नाम का होता है। इस आरा में सुख और मात्र सुख ही होता है। इस आरा की समयावधि चार कोड़ा कोड़ी सागरोपम अर्थात चार करोड़ गुणा एक करोड़ सागरोपम होती है। इस आरा में जन्म लेने वाले मनुष्यों की आयु तीन पल्योपम और शरीर की ऊंचाई तीन गाऊ के बराबर होती है।

अवसर्पिणी काल का दूसरा आरा सुषमा नाम का है। इस काल में मनुष्य को बहुत सुख होता है। इस आरा की समयावधि तीन कोड़ाकोड़ी सागरोपम की होती है। इस आरा में जन्म लेने वाले मनुष्यों की आयु दो पल्योपम और उनके शरीर की उंचाई दो गाऊ के बराबर होती है।

अवसर्पिणी काल के तीसरे आरे का नाम सुषमा-दुषमा है। इस आरा में सुख अधिक होता है और दुःख अल्प होता है। मनुष्य की आयु एक पल्योपम और ऊंचाई एक गाऊ की होती है।

अवसर्पिणी काल के पहले, दूसरे और तीसरे आरा में समस्त मनुष्य व प्राणी युगल रुप में अर्थात् नर और नारी की जोड़ के रुप में ही जन्म लेते हैं। ये बालक व बालिकाएं युवा हो जाते हैं, तब वे आपस में पति-पत्नी की तरह व्यवहार करते हैं। इस युगल की उम्र पूरी होने पर मृत्यु भी एक ही समय होती है।

हाय हैलो छोड़िये ! जय जिनेन्द्र बोलिये !!

✻ एस.सी.कटारिया (जैन) रतलाम

आगे बढ़ता देश हमारा उसमें हम, श्रीमहावीर बने, जैन जन बने, वक्त आ गया है, हैलो हाय छोड़िये जय जिनेन्द्र जरुर ही बोलिए। विश्व गुरु भारत को अपनी देव संस्कृति पर नाज होकर गर्व है। पाश्चात्य सभ्यता की अंधी दौड़ में अपने संस्कारों को न भूलो, जैन हो तो हाय हैलो छोड़िये, जय जिनेन्द्र बोलिए- जय जिनेन्द्र बोलिये। अहिंसावादी भारत में अहिंसा हमारा परमोधर्म है और जय जिनेन्द्र है उसका ताज। जय जिनेन्द्र हमारे सभी जिनेन्द्र देव को नमस्कार, प्रणाम होने के साथ परस्पर अभिवादन करने का हमारी धर्म-संस्कृति की आराधना का सूचक भी है। समाज की विभिन्न संस्थाओं द्वारा अपने प्रकल्प कार्यक्रमों में जय जिनेन्द्र बोलो, अभियान शुरु हो चुकना एक अच्छी परम्परा की शुरुआत है। जैन धर्म की परम्पराओं, आगमों में जय जिनेन्द्र अभिवादन व्यक्त करने की शालिनता, शिष्ठता प्राचीनतम होकर जैन संस्कृति का अभाज्यि अंश है। देश में पाश्चात्य सभ्यता का प्रादुभाव दिन पर दिन बढ़ते जाने से धर्म के प्रति घटती रुची, धर्म रुझान नहीं होने से इसका महत्व अभी भी पूर्ण रुप से प्रभाव पूर्ण अपना स्थान नहीं हो पाया है। धार्मिक कार्यक्रमों, धर्मसभाओं, समाज के जलसों में जय जिनेन्द्र के महत्व को स्वीकारा जा रहा है, यह हर्ष का विषय भी है।

''जय जिनेन्द्र'' अभियान के संदर्भ में एक उदाहसा का यहां उल्लेख करना स्वयं प्रशंसा मानी जा सकती है किन्तु यह सत्य है। बाहर जाने के लिए रेल स्टेशन पर छोड़ने मेरा पुत्र आया था, वापसी में जाने के पहले उसने मेरे पैरों को छू कर **''जय जिनेन्द्र''** कहा। उस समय वहां उपस्थितजनों ने तब आत्मविभोर होकर मुझ से पूछ ही लिया कि क्या आप जैन है। इसी तरह आपस की चर्चा में सबसे पहले जय जिनेन्द्र से शुरुआत होने से सहज ही अजनबी द्वारा पूछा जाता है कि क्या आप जैन है, सही में यही एक जैन की पहचान भी है। रोजमर्रा व व्यवहारिक कार्य जहां जय जिनेन्द्र के अभिवादन से पूरे होते है, वही इसके प्रभाव से बिगड़ते हुए प्रयोजन सुधर भी जाते हैं।

समय फेर और विदेशी संस्कृति के प्रभाव में हमारे देश में अभिवादन में जय जिनेन्द्र, प्रणाम-नमस्कार लुप्त होकर इसके स्थान पर ''हैलो हाय'' गुड मार्निंग का प्रचलन अपनी शेखी बघारने और दिखावे का प्रदर्शन है, उनमें वह आत्म संतोष- आत्म संतुष्टि नहीं है जो जय जिनेन्द्र में है। **''जय जिनेन्द्र''** के साथ हमने समाज में एक ओर अच्छी प्रथा हमारे संस्कारों को पोषित करते हुए आरम्भ किया है। ऐसा होना एक बड़े हर्ष व उल्लास की बात है। हमारे यहां अब आयोजनों की (धार्मिक एवं सामाजिक) शुरुआत बिना किसी औपचारिक भाषा के बजाय नवकार-महामंत्र से आरम्भ होती है। कार्यक्रम पूर्ण होने के बाद धन्यवाद व आभार की औपचारिकता का निर्वहन करने की जगह भी ''नवकार महामंत्र'' से पूर्ण किया जाता है। आवश्यकता है ऐसे परिवर्तनों को सच्चे हृदयों से आत्मसात करने की। मात्र इन्हें सराहने का नहीं, क्रियान्वित करने का वक्त है। हम अपने अंतरमन से हमारे समस्त कार्यक्रमों, जलसों में नवकार महामंत्र व जय जिनेन्द्र का महत्व स्वीकार कर उन्हें यथोचित स्थान दें।

दुःख की जड़ेः- *दुःख की जड़े निकालनी है तो दुःख की जड़ें तक पहुंचना होगा। विकारों की जड़ें तक पहुंचना होगा और उन्हें उखाड़ना होगा। दुःख-सत्य की वास्तविक जड़ों को जानने के लिये सत्य का ही अनुसंधान करना होगा। कल्पनाओं से काम नहीं चलेगा। दुःख भीतर होता है, अतः इसका अनुसंधान भी भीतर ही करना होगा। बाहर से सभी आलम्बन प्रकट रुप में दुःख का कारण लगते हैं। परन्तु साधक अनुसंधान करेगा तो देखेगा कि हमारे लिए उनका अस्तित्व तभी है जबकि शरीर की इन्द्रियों के दरवाजों से यानी आंख, नाक, कान, जीभ तथा त्वचा से उनका सम्पर्क होता है, तो ही उनकी विद्यमानता हमारे लिए अस्तित्व रखती है अन्यथा नहीं। अथवा मन के दरवाजे पर जब उनका चिन्तन चलता है, वह भी शरीर के भीतर ही चलता है। सभी बाहरी आलम्बनों का आधार छोड़कर सत्य की खोज शरीर के भीतर वास्तविकता के आधार पर करनी होगी।*

क्रोध पापों का प्रकटीकरण है !

* डॉ. सुरेश गर्ग

क्रोध- मानव के अंदर व्याप्त तमो-रजतगुण प्रवृत्ति का वाह्य प्रकटीकरण है। मनोचिकित्सकीय भाषा में इसे विकृत मानसिकता के निदान का स्पष्ट लक्षण कहा जा सकता है! धर्मशास्त्रों के अनुसार क्रोध-सभी पापों के प्रकोप को प्रतिफल है ! हताशा, कुंठा, कमजोरी या पराजय या फिर अहंकार इसके मूल कारण है ! मानस में कहा है- **''सुनहु तात अब मानस रोग। जिन्ह ते दुख पावहिं सब लोग॥....''** काम, लोभ, मोह, मद आदि तमो-रजत गुण क्रोध के माईबाप और भाई-बहिन माने गये हैं। जब ये संयुक्तरुप से अपना प्रभाव डालते है तब संबंधित मनुष्य इनके प्रकोप से सन्निपात-जैसी स्थिति में जा सकता है। **''गुनकृत सन्यपात नहि केहि।''** इन सब राक्षसी अवगुणों की जननी इंद्रियाँ मानी गयी है, जिनकी भूख कभी नहीं मिटती, बल्कि जितना मिलता है, उतनी बढ़ती जाती है। इनसे ''काम'' पैदा होता है और काम की पूर्ति नहीं होने पर क्रोध पैदा होता है। मतलब इंद्रिय, मन और बुद्धि-काम के अधिष्ठान है, जहां लोभ,मोह, मद आदि खाद-पानी का काम करते हैं। इस प्रकार ये मानव शरीर में फलते-फूलते विभिन्न पापों के रुप में इंद्रियों की भूख मिटाते हैं और फिर धीरे-धीरे अंतःकरण को धुन की तरह खोखला कर देते हैं। यह ऐसा गुप्त मानस रोग है जिसका संबंधित को पता तक नहीं चलता...! वह पीड़ित व्यक्ति उत्पन्न दुःखों के निदान एवं इलाज के लिए बाहर कोई रास्ता या जानकार खोजता फिरता है। इस प्रकार द्वन्द्व की स्थिति में तथाकथित सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक विभिन्न प्रकार के नीमहकीम ज्ञानियों के जाल में फंसता चला जाता कर है!

> **इंद्रियों के वशीभूत होने पर आसक्तिवश काम पैदा होता है और फिर क्रोध काम से क्रोध। क्रोध से मोह और मोह से स्मरणशक्ति विभ्रमित हो जाने पर बुद्धि नष्टहो जाती है। इस प्रकार मनुष्य-भव-कूप में गिर जाता है।**

गीता में कहा है- ''संगात्सज्जायते कामः कामात क्रोधाद्भवति सम्मोहः.... बुद्धिनाशात्प्रणश्यति॥ (गीता 2/62-63) इंद्रियों के वशीभूत होने पर आसक्तिवश काम पैदा होता है और फिर काम से क्रोध। क्रोध से मोह और मोह से स्मरण शक्ति विभ्रमित हो जाने पर बुद्धि नष्ट हो जाती है। इस प्रकार मनुष्य भव-कूप में गिर जाता है।

''मानस'' में भी तुलसीदासजी ने यह कह कर चेताया है- ''मोह न अंध कीन्ह केहि केहि।

को जग काम नचाव न जेही॥

त्रिस्ना केहि न कीन्ह बौराहा।

केहि कर हृदय क्रोध नहीं दाहा॥

उदाहरणार्थ महर्षि नारदजी जैसे तपस्वी नारी मोह में फंस कर अपना आपा खोते हुए क्रोधवश भगवान को शाप दे देते हैं ! भगवान शिवजी ''मोहिनी'' को देख कर कामातुर हो जाते है, ब्रह्माजी मद में तृष्णाग्रस्त हो जाते है और ब्रह्मऋषि सनकादि विष्णुजी के द्वारपाल जय-विजय को बेवजह शाप दे देते हैं। इंद्रियों को लेकर भगवान कपिल ऋषि का कहना है- जब जगत पिता ब्रह्माजी स्वयंजनित इंद्रियों के प्रभाव से नहीं बच पाये तो उनके द्वारा पैदा की गई सृष्टि के जीव उससे कैसे बच सकते हैं। महाभारत पुराण में युधिष्ठिर-पितामह संवाद में क्रोध, काम, शोक, मोह, विधित्सा, परसुता, मद, लोभ, मात्सर्य, ईर्ष्या, निंदा, दोषदृष्टि और कंजुसी इन तेरह दोषों को नरक का कारण बताते हुए, उनसे पार पाने की बात कही गयी है। गीता में भगवान कहते हैं- क्रोधाद् भवति सम्मोहः.... बुद्धिनाशात् प्रणश्यति॥ (13/63) काम मनुष्य के मन, बुद्धि और इंद्रियों के माध्यम से विवेक शक्ति नष्ट कर देता है और भोगों में सुख दिखलाकर पापों में प्रवृत्त करता है, इस प्रकार मनुष्य अधःपतन की ओर बढ़ता जाता है। अतः इनसे पार पानेवाले व्यक्ति को ''स्थिरबुद्धि''कहा है।

भगवान श्रीमहावीर ने ध्यान के चार रुप कहे हैं- आर्तध्यान, रौद्रध्यान, धर्मध्यान और शुक्लध्यान। लाभ-हानि की चिंता में डूबा व्यक्ति आर्तध्यान का शिकार होता है फिर क्रोध करते हुए रौद्र ध्यान में चला जाता है। लेकिन जो

व्यक्ति चिंता की बजाय उससे बाहर निकलने के लिए चिंतन करता है, वह धर्मध्यान हो जाता है और जब वह उससे बाहर हो जाता है तब वह शुक्लध्यान में पहुंच जाता है। जिनवाणी में भगवान ''लेश्यासूत्रों'' में सबसे खराब कृष्णलेश्या को बताते है, जिसमें क्रोध प्रमुख है। संयम सूत्र में कहते हैं- ''कोहो पीइं.... लोहो सव्वविणासणो॥11॥ क्रोध प्रीति को नष्ट करता है, मान विनय को नष्ट करता है, माया मैत्री को नष्ट करती है और लोभ सब कुछ नष्ट करता है। अगले सूत्र में उसका उपचार बताते हुए कहा गया है- क्षमा से क्रोध का हनन करें, मार्दव (मृदता) से मान को जीतें, आर्जव (सरलता) से माया और संतोष से लोभ को जीतें। अतः जो ''सम्यग्दर्शन से शुद्ध है वही निर्वाण प्राप्त करता है। ''दंसण सुद्धो दंसणसुद्धो लहेइ णिव्वाणं।

भगवान बुद्ध ने धम्मपदं में कहा-अक्रोधेन जयेत् क्रोधम्- अक्रोध से क्रोध को जीतें, साधुता से असाधु को, दान से कृपण को और सत्य से झूठ को। कबीरदासजी कहते है- सहज मिले सो दूध सम, मांगा मिले सो पानी, कह कबीर वह रक्त सम, जामे खींचतानी। आत्मसिद्धि शास्त्र में श्रीमद्‌जी कहते हैं- ''कर्मबंध क्रोधादिथी, हणे क्षमादिक तेह, प्रत्यक्ष अनुभव सर्वेने, एमां शो संदेह ?''

क्रोध आदि कषायभावों से कर्मबंध होता है और क्षमा आदि भावों से उन कषायों का नाश होता है। समस्त जीवों को ऐसा अनुभव होता है, इसमें संदेह क्या है ? अतः अहिंसा ही सबसे बड़ा धर्म है !

सत्य की चाहः- सत्य की चाह है, तो चित्त को किसी ''आग्रह'' से मत बांधो। जहां आग्रह है, वहां सत्य नहीं आता। आग्रह और सत्य में गहरा विरोध है। मुक्त जिज्ञासा सत्य की खोज के लिए पहली सीढ़ी है, जो व्यक्ति सत्य की अनुभूति से पहले ही अपने चित्त को किन्हीं सिद्धांतों मतों, वादों एवं आग्रहों से बोझिल कर लेते हैं, उनकी जिज्ञासा कुंठित और अवरुद्ध हो जाती है। जिज्ञासा,खोज की गति और प्राण है। इसी के माध्यम से विवेक जाग्रत होता है और चेतना ऊर्ध्व बनती है, लेकिन जिज्ञासा आस्था से नहीं, आश्चर्य से पैदा होती है। आश्चर्य, स्वच्छ चित्त का लक्षण है। उसके सम्यक् अनुगमन से सत्य के ऊपर पड़े हुए परदे क्रमशः हटते जाते हैं और एक क्षण ऐसा आता है, जब सत्य का दर्शन होता है।

यहां यह बता देना जरुरी है कि आस्तिक और नास्तिक दोनों ही आस्थावान होते हैं। हां, इतना अवश्य है कि आस्तिक की आस्था विधायक होती है तो नास्तिक की आस्था निषेधात्मक या नकारात्मक। जबकि आश्चर्य चित्त की एक अलग ही अवस्था है। अविश्वास नहीं है और न ही विश्वास है। वह तो इन दोनों से मुक्त, खोज के लिए स्वतंत्र है। यहां किसी भी आग्रह या मत के लिए कोई स्थान नहीं है।

भला वे सत्य की खोज कर भी कैसे सकते हैं, जो कि पहले से ही किन्हीं मतों से बंधे है। मतों अथवा आग्रहों के खूंटें से विश्वास या अविश्वास की जंजीरों को जो खोल देता है, उसी की ही नाव सत्य के महासागर में यात्रा करने में समर्थ हो पाती है।

सत्य के आगमन की अनिवार्य शर्त है, चित्त की पूर्ण स्वच्छता, स्वतंत्राता एवं स्थिरता जिसका चित्त पूर्ण स्वच्छ नहीं है, जो किन्हीं सिद्धांतों या आग्रहों से बंधे हैं अथवा जिनका चित्त अस्थिर या चंचल है, वे सत्य के महासूर्य के दर्शन से वंचित रह जाते हैं। इसलिये सत्य की चाह को पूरा करने के लिए चित्त को पूर्ण स्वच्छ, स्वतंत्र एवं स्थिर बनाना ही होगा।

✲ अपनी कुटनीति से महाभारत युद्ध में दुर्योधन ने शल्य को कर्ण का सारथी बनने के लिए सहमत कर लिया। कर्ण ने कहा था- यदि मुझे शल्य जैसा सारथी मिल जाए, तो एक अर्जुन तो क्या सैकड़ों अर्जुन जैसे वीरों को मार दूंगा। पांडवों को मालूम हुआ कि मामा शल्य ने कर्ण का सारथी बनना स्वीकार कर लिया है। शल्य का सारथी बनना सचमुच ही पांडवों के लिए खतरे में खाली न था। बात कृष्ण को मालूम हुई। नीतिनिपुण कृष्ण ने शल्य से निवेदन किया- कर्ण का सारथी बनने के लिए आप वचनबद्ध है। युद्ध में कौरवों का साथ दीजिए, पर धर्मयुद्ध के लिए मात्र आप कर्ण को हतोत्साहित करते रहिए। शल्य ने कृष्णा का निवेदन स्वीकार कर लिया। इतिहास प्रसिद्ध है कि शल्य के हतोत्साहित करते रहने के फलस्वरुप ही कर्ण का मनोबल टूटता रहा, फलतः वह हारा और मारा गया।

आत्मविश्वासियो को ही ईश्वर का अनुग्रह मिलता है, पर वह प्राप्त होता है- एक ही कीमत पर। अपनी प्रामाणिकता सिद्ध करने पर प्रमाणिकता का अर्थ है - प्रभु का अनुशासन मानना-उसकी व्यवस्था में विश्वास रखना- जो भी वह कहे उसे बिना तर्क वितर्क के मानना।

रामायण क्या है ?

अगर कभी पढ़ो और समझो तो आंसुओं पे काबू रखना....

रामायण का एक छोटा सा वृतांत है, उसी से शायद कुछ समझा सकूं....

एक रात की बात है, माता कौशल्याजी को सोते में अपने महज की छत पर किसी के चलने की आहट सुनाई दी। नींद खुल गई, पूछा कौन है ?

मालूम पड़ा श्रुतकीर्तिजी (सबसे छोटी बहू, शत्रुघ्नजी की पत्नी) है। माताजी कौशल्याजी ने उन्हें नीचे बुलाया। श्रुतकीर्तिजी आई, चरणों में प्रणाम कर खड़ी रह गई, माता कौशल्याजी ने पूछा- श्रुति ! इतनी रात को अकेली छत पर क्या कर रही हो बेटी ? क्या नींद नहीं आ रही है ? शत्रुघ्न कहां है ?

श्रुतिकीर्ति की आंखें भर आई, माँ की छाती से चिपटी, गोद में सिमट गई, बोली, माँ उन्हें तो देख हुए तेरह वर्ष हो गए। उफ ! कौशल्याजी का हृदय कांप कर झटपटा गया। तुरन्त आवाज लगाई, सेवक दौड़ेआए। आधी रात ही पालकी तैयार हुई, आज शत्रुघ्नजी की खोज होगी, माँ चली।

आपको मालूम है शत्रुघ्नजी कहां मिले ?

अयोध्याजी के जिस दरवाजे के बाहर भरतजी नंदिग्राम में तपस्वी होकर रहते हैं, उसी दरवाजे के भीतर एक पत्थर की शिला है, उसी शिला पर, अपनी बांह का तकिया बनाकर लेटे मिले !! माँ सिराहने बैठ गई, बालों में हाथ फिराया तो शत्रुघ्नजी ने आंखें खोली, माँ ! उठे चरणों में गिरे, माँ ! आपने क्यों कष्ट किया ? मुझे बुलवा लिया होता।

माँ ने कहा- शत्रुघ्न ! यहां क्यों ?

शत्रुघ्नजी की रुलाई फूट पड़ी, बोले- माँ! भैया रामजी पिताजी की आज्ञा से वन चले गए ? भैया लक्ष्मणजी उनके साथ चले गए, भैया भरतजी भी नंदिग्राम में है, क्या ये महल, ये रथ, ये राजसी वस्त्र, विधाता ने मेरे ही लिए बनाए है ? माता कौशल्याजी निरुत्तर रह गई। देखो क्या है ये रामकथा....

यह भोग की नहीं.... त्याग की कथा है...!! यहां त्याग की प्रतियोगिता चल रही है और सभी प्रथम है, कोई पीछे नहीं रहा.... चारों भाईयों का प्रेम और त्याग एक दूसरे के प्रति अद्भूत-अभिनव और अलौकिक हैं।

''रामायण'' जीवन जीने की सबसे उत्तम शिक्षा है।

भगवान राम को 14 वर्ष का वनवास हुआ तो उनकी पत्नी सीता माईया ने भी पत्नी धर्म निभाते हुए सहर्ष वनवास स्वीकार कर लिया...!! परन्तु बचपन से ही बड़े भाई की सेवा में रहनेवाले लक्ष्मणजी कैसे रामजी से दूर हो जाते !

माता सुमित्रा से तो उन्होंने आज्ञा ले ली थी, वन जाने की.... परन्तु जब पत्नी ''उर्मिला'' के कक्ष की ओर बढ़ रहे थे तो सोच रहे थे कि माँ ने तो आज्ञा दे दी, परन्तु उर्मिला को कैसे समझाऊंगा ?? क्या बोलूंगा उनसे ? यही सोच विचार करके लक्ष्मणजी जैसे ही अपने कक्ष में पहुंचे तो देखा कि उर्मिलाजी आरती का थाल लेके खड़ी थी और बोली- ''आप मेरी चिंता छोड़ प्रभु श्रीराम की सेवा में वन को जाओ.... मैं आपको नहीं रोकूंगी। मेरे कारण आपकी सेवा में कोई बाधा न आये, इसलिये साथ जाने की जिद्द भी नहीं करुंगी।'' लक्ष्मणजी को कहने में संकोच हो रहा था...!! परन्तु उनके कुछ कहने से पहले ही उर्मिलाजी ने उन्हें संकोच से बाहर निकाल दिया...! वास्तव में यहीं पत्नी का धर्म है.... पति संकोच में पड़े, उससे पहले ही पत्नी उसके मन की बात जानकर उसे संकोच से बाहर कर दें !! लक्ष्मणजी चले गये परन्तु 14 वर्ष तक उर्मिला ने एक तपस्विनी की भांति कठोर तप किया !

वन में ''प्रभु श्रीराम माता सीता'' की सेवा में लक्ष्मणजी कभी सोये नहीं, परन्तु उर्मिला ने भी अपने महलों के द्वार कभी बंद नहीं किये और सारी रात जाग जागकर उस दीपक की लौ को बुझने नहीं दिया...!

मेघनाथ से युद्ध करते हुए जब लक्ष्मणजी को ''शक्ति'' लग जाती है और हनुमानजी उनके लिये संजीवनी का पर्वत लेके लौट रहे होते हैं, तो बीच में जब हनुमानजी अयोध्या के ऊपर से गुजर रहे थे तो भरतजी उन्हें राक्षस समझकर बाण मारते है और हनुमानजी गिर जाते हैं !! तब हनुमानजी सारा वृत्तांत सुनाते हैं कि, सीताजी को रावण हर ले गया, लक्ष्मणजी युद्ध में मूर्छित हो गए हैं।

यह सुनते ही कौशल्याजी कहती है कि राम को कहना कि ''लक्ष्मण'' के बिना अयोध्या में पैर भी मत रखना। राम वन में ही रहे ! माता सुमित्रा कहती है कि राम से कहना कि कोई बात नहीं.... अभी शत्रुघ्न है...! मैं उसे भेज दूंगी.... मेरे

दोनों पुत्र ''राम सेवा'' के लिये ही तो जन्मे हैं !

माताओं का प्रेम देखकर हनुमानजी की आंखों में अश्रुधारा बह रही थी परन्तु जब उन्होंने उर्मिलाजी को देखा तो सोचने लगे कि, यह क्यों एकदम शांत और प्रसन्न खड़ी है ? क्या इन्हें अपनी पति के प्राणों की कोई चिंता नहीं ?

हनुमानजी पूछते हैं- देवी ! आपकी प्रसन्नता का कारण क्या है ? आपके पति के प्राण संकट में है.... सूर्य उदित होते ही सूर्य कुल का दीपक बुझ जायेगा । उर्मिलाजी का उत्तर सुनकर तीनों लोकों, का कोई भी प्राणी उनकी वंदना किये बिना नहीं रह पाएगा ! उर्मिला बोली- ''जिनके साथ श्री राम है तो ''मेरा दीपक संकट में नहीं है, वो बुझ ही नहीं सकता !'' रही सूर्योदय की बात तो आप चाहें तो कुछ दिन अयोध्या में विश्राम कर लीजिये, क्योंकि आपके वहां पहुंचे बिना सूर्य उदित हो ही नहीं सकता ! आपने कहा कि- प्रभु श्रीराम मेरे पति को अपनी गोद में लेकर बैठे हैं ! जो ''योगेश्वर प्रभु श्रीराम'' की गोदी में लेटा हो, काल उसे छू भी नहीं सकता ! यह तो वो दोनों लीला कर रहे है.... मेरे पति जब से वन गये हैं, तबसे सोये नहीं है.... उन्होंने न सोने का प्रण लिया था.... इसलिये वे थोड़ी देर विश्राम कर रहे हैं.... और जब भगवान की गोद मिल गई तो थोड़ा विश्राम ज्यादा हो गया.... वे उठ जायेंगे ! और ''शक्ति'' मेरे पति को लगी ही नहीं, शक्ति तो प्रभु श्रीरामजी को लगी है !

''मेरे पति की हर श्वास में राम है, हर धड़कन में राम, उनके रोम-रोम में राम है, उनके खून की बूंद-बूंद में राम है और जब उनके शरीर और आत्मा में ही सिर्फ राम है, तो शक्ति रामजी को ही लगी, दर्द रामजी को ही हो रहा ! इसलिये हनुमानजी आप निश्चिन्त हो के जाएं.... सूर्य उदित नहीं होगा।''

राम राज्य की नींव जनकजी की बेटियां ही थी.... कभी ''सीता'' तो कभी ''उर्मिला''....!

भगवान राम ने तो केवल राम राज्य का कलश स्थापित किया.... परन्तु वास्तव में राम राज्य इन सबके प्रेम, त्याग समर्पण और बलिदान से ही आया !

''जिस मनुष्य में नैतिकता, ईमानदारी, दया, प्रेम, करुणा, त्याग, समर्पण की भावना हो उस मनुष्य में राम ही बसते है....

कभी समय मिले तो अपने वेद, पुराण, गीता, रामायण को पढ़ने और समझने का प्रयास कीजिएगा, जीवन को एक अलग नजरिए से देखने और जीने का सऊर मिलेगा !

'' लक्ष्मण सा भाई हो, कौशल्या माई हो,
स्वामी तुम जैसा, मेरा रघुराई हो....
नगरी हो अयोध्या सी, रघुकुल सा घराना हो,
चरण हो राघव के, जहां मेरा ठिकाना हो....
हो त्याग भरत जैसा, सीता सी नारी हो,
लव-कुश के जैसी.... संतान हमारी हो....
श्रद्धा हो श्रवण जैसी, सबरी सी भक्ति हो,
हनुमत के जैसी निष्ठा और शक्ति हो....
ये रामायण न है पुण्य कथा श्री राम की।

धर्म परंपरावादी नहीहै

✲ एक थे पंडित जी। नाम था सज्जनप्रसाद। थे भी सज्जन, सदाचारी और ईश्वर भक्त, किन्तु धर्म का कोई विज्ञानसम्मत स्वरुप भी है, यह वे नहीं जानते थे।

प्रतिदिन प्रातःकाल पूजा समाप्त करके पंडितजी शंख बजाते। वह आवाज सुनते ही पड़ोस का गधा किसी गोत्र बंधु की आवाज समझकर स्वयं भी रेंक उठता। पंडितजी प्रसन्न हो उठते कि यह कोई पूर्वजन्म का तपस्वी और भक्त था। एक दिन गधा नहीं चिल्लाया। पंडितजी ने पता लगाया। मालूम हुआ कि गधा मर गया। गधे के सम्मान में उन्होंने अपना सिर घुटाया और विधिवत् तर्पण किया। शाम को वे बनिए की दुकान पर कुछ सौदा लेने गए। बनिए को शक हुआ, पूछा- महाराज, आज यह सिर घुटमुंड कैसा ? पंडितजी बोले- अरे भाई शंखराज की इहलीला समाप्त हो गई है। बनिया पंडित का यजमान था, उसने भी अपना सिर घुटा लिया। बात जहां तक फैलती गई, लोग अपने सिर घुटाते गए। छूत बड़ी खराब होती है। एक सिपाही बनिए के यहां आया उसने तमाम गांव वालों को सिर मुड़ाए देखा, पता चला शंखराजजी महाराज नहीं रहे, तो उसने भी सिर घुटाया। धीरे-धीरे सारी फौज सिर-सपाट हो गई। अफसरों को बड़ी हैरानी हुई। उन्होंने पूछा- भाई बात क्या गधा था, तो मारे शरम के सबके चेहरे झुक गए।

एक अफसर ने सैनिकों से कहा- ''ऐसे अनेक अंधविश्वास समाज में केवल इसलिए फैले हैं कि उनके मूल का ही पता नहीं है। धर्म परंपरावादी नहीं, सत्य की प्रतिष्ठा के लिए है। वह सुधार और समन्वय का मार्ग है। उसे ही मानना चाहिए।

भरत क्षेत्र के 24 तीर्थंकर भगवान के नाम

भूतकाल	वर्तमान काल	भविष्यकाल
1- श्री निर्वाण	1- श्री आदिनाथ	1- श्री महापद्म
2- श्री सागर	2- श्री अजितनाथ	2- श्री सुरदेव
3- श्री महासाधु	3- श्री संभवनाथ	3- श्री सुपार्श्व
4- श्री विमल प्रभ	4- श्री अभिनंदन नाथ	4- श्री स्वयंप्रभ
5- श्री धर	5- श्री सुमतिनाथ	5- श्री सर्वात्मभुत
6- श्री सुदत्त	6- श्री पद्मप्रभ	6- श्री देवपुत्र
7- श्री अमलप्रभ	7- श्री सुपार्श्वनाथ	7- श्री कुलपुत्र
8- श्री उद्धर	8- श्री चंद्रप्रभ	8- श्री उदंक
9- श्री अंगिर	9- श्री पुष्पदंत	9- श्री प्रौष्ठिल्य
10-श्री सन्मति	10-श्री शीतलनाथ	10-श्री जयकीर्ति
11-श्री सिन्धु	11-श्री श्रेयनाथ	11-श्री मुनिसुव्रत
12-श्री कुसुमांजली	12-श्री वासुपूज्य	12-श्री अर
13-श्री शिवगण	13-श्री विमलनाथ	13-श्री निष्पाप
14-श्री उत्साह	14-श्री अनंतनाथ	14-श्री निष्कषाय
15-श्री ज्ञानेश्वर	15-श्री धर्मनाथ	15-श्री विपुल
16-श्री परमेश्वर	16- श्री शांतिनाथ	16-श्री निर्मल
17-श्री विमलेश्वर	17-श्री कुंथुनाथ	17-श्री चित्रगुप्त
18-श्री यशोधर	18-श्री अरनाथ	18-श्री समाधिगुप्त
19-श्री कृष्णमति	19-श्री मल्लिनाथ	19-श्री स्वयंभु
20-श्री ज्ञानमति	20-श्री मुनिसुव्रतनाथ	20-श्री अनिवर्तक
21-श्री शुद्धमति	21-श्री नमिनाथ	21-श्री जय
22-श्री भद्र	22-श्री नेमिनाथ	22-श्री विमल
23-श्री अतिक्रांत	23-श्री पार्श्वनाथ	23-श्री देवपाल
24-श्री शांत	24-श्री वर्द्धमान	24-श्री अनंतवीर्य

आगमोद्धारक की सदस्यता एवं श्रुतभक्ति में दान देने के लिये ऑन लाईन बैंक की जानकारी

महोदय,

आगमोद्धारक की सदस्यता प्राप्त करने के लिये सदस्यता शुल्क एवं श्रुतभक्ति दान आप ऑन लाईन जमा कर सकते है। आपकी धनराशि भेजने के लिये:-

बैंक का नाम:- इण्डियन ओवरसीज बैंक, शाखा नईसड़क उज्जैन (म.प्र.)

खाता:- श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, 46, सखीपुरा, उज्जैन (म.प्र.)

खाता क्रं.:- 068002000001425 IFSC Code:- IOBA0000680

वर्ग पहेली क्रमांक-345

✽ प्रस्तुति :- जयंतीलाल जैन, रतलाम (म.प्र.)

1		2	■	3	4			5
	■	6				■	■	
7	8		■		■	9	10	
11		■	12		13	■	14	
■	15			■	16			■
17		■	18	19		■	20	21
22			■		■	23		
	■	■	24				■	
25					■	26		

बाएं से दाएं:-

1- माता श्यामा के तीर्थंकर पुत्र का नाम--- नाथ (3)

3- आंध्र में कृष्णा नदी किनारे बसा चिंतामणि पार्श्व प्रभु का तीर्थ (5)

6- पिता सिद्धार्थ के तीर्थंकर पुत्र का नाम (4)

7- झीलों की नगरी, जहां भावी चोवीसी के प्रथम तीर्थकर पद्मनाभस्वामी का मंदिर है उद---(3)

9- छठे तीर्थकर श्री पद्मप्रभुजी दूसरे भव में नव ग्रे--- में देव हुए थे (3)

11-ए--- वाज जो पीढ़ियों से चले आ रहे है, परंपरा बन जाते हैं (1,1)

12- जैनम् जयति--- म् (3)

14-आना है तो आ राह में कुछ फेर नहीं है, भगवान के घर--- है अंधेर नहीं है (2) (पुरानी फिल्म नया दौर का भजन)

15- सोलह सतियों में से एक द--- (3)

16- बीस विहरमान तीर्थकर में से एक है भुजं--- (3)

17- आणि मन शुद्ध आ---, देव जुहारुं शाश्वता। (पार्श्वनाथ मन वांछित पुर, चिन्तामणि म्हारी चिंता चूर ॥) (2)

18- भ.शांतिनाथ की जन्म स्थली हस्ति--- (3)

20- जमीकंद में अत्यन्त--- जीवं होते है (2)

22- भगवान मल्लिनाथजी का लांचन (3)

23- माता त्रिशला रानी का अन्य नाम- प्रिय ---(3)

24- भगवान नमिनाथ का लांछन है नी--- (4)

25- पालीताना के निकट सांचा स्वामी सुमतिनाथजी का तीर्थ ता--- (5)

26- गलत मात्रा या चिन्ह के प्रयोग से अर्थ का--- होसकता है (3)

वर्ग पहेली क्रमांक-344 का परिणाम

म	हा	दे	वी		क	ल्या	ण	क
रु	प		णा		म			र्णा
भू		पां		अ	ठ	ई		व
ति	र्यं	च		म			म	ती
		म	ल्हा	र	गि	री		
अ	नु			मु		भ	म	ति
र		ज	न	नि		द्र		
विं			ग		व	सू	भू	
द	म्ब	गि	री		पू	रि	म	ता

ऊपर से नीचे:-

1- प्रभु नमिनाथ के पिता का नाम--- न (4)

2- रावण पार्श्वनाथ भगवान का तीर्थ राजस्थान में यहां है अ--- (3)

3- वीर प्रभु के निर्वाण की तिथि (4)

4- कम्बोई तीर्थ में बिराजे है श्री--- मोहन पार्श्वनाथ (2)

5- अयोध्या में जन्मे थे वर्तमान चोवीसी के प्रथम--- श्री आदिनाथ भगवान (4)

8- भ.आदिनाथ का केवलज्ञान और माता मोरा देवी का मोक्ष स्थल है प्रयागराज का--- (5)

10-जैन आगमों में से नौ आगमों पर संस्कृत टीकाओं की रचना करने वाले आचार्य है श्री अभ--- (5)

12-विश्वसेन राजाजी के नन्दन, भ.---थजी (3)

13-भ.नेमिनाथ की श्रीकृष्ण बलदेव पूजित प्रतिमाजी है, जामनगर के नवा--- तीर्थ में (3)

17-भ.महावीर के मुख्य दस श्रावकों में से एक है--- पुत्र (4)

19-इन्द्रादिक पूजा भणी, फल लावे धरी राग। पुरुषोत्तम--- मांगे शिव फल त्याग (2,2)

21-अलीराजपुर के निकट श्री ल--- के मूलनायक है भ.पद्मप्रभुजी (2,2)

23----- नादि अनंत थी, भव भ्रमण नो नहीं पार। ते भव भ्रमण निवारवा, प्रदक्षिणा दउं त्रण वार (2,1)

24-श्री शत्रुंजय महातीर्थ के 108 नामों में से एक है महाब---रि (1,1)

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-345

✻ आचार्य प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा.

प्रश्न-नरक संबंधी सवाल....

1- नरक गति का प्रथम द्वार समान कौन सा पाप है ?
2- नारकी के जीवों को कितने योजन ऊंचे उछालते है ?
3- कितने लाख नवकार का स्मरण नरक गति को उछालते है ?
4- परमाधामी मरकर क्या बनते है ?
5- रावण एवं लक्ष्मण अभी कौन सी नरक में है ?
6- स्वप्न में नरक देखकर वैरागी कौन बना ?
7- प्रथम नरक पृथ्वी का गोत्र नाम क्या है ?
8- परमाधामी वृत्त वेदना कितनी नरक तक है ?
9- नारकी जीवों का कम से कम कितना आयुष्य होता है ?
10-स्त्रीयां कितनी नरक तक जा सकती है ?
11-सातवी नारकी जीवों की ऊंचाई कितने धनुष्य की है ?
12-नारकी जीवों को कौन सा वेद का उदय होता है ?

✻ एक शिष्य को धर्मनिष्ठ होने का अभिमान हो गया। गुरुजी ताड़ गए। धर्म का सही मर्म समझाने के लिए वे एक दिन सद्गृहस्थ के घर ठहरे। कृषक एक आम लाया था उसे उसने अपनी धर्मपत्नी को दे दिया। बेचारी धर्मपत्नी ने भी उसे खाया नहीं, छोटे बच्चे को दे दिया। बच्चे ने आम गुरु-चरणों में समर्पित किया, तो गुरु ने शिष्य को बताया- ''वत्स! धर्म का यह है सही अर्थ।''

नोट- पोस्टकार्ड पर अपने पते के साथ शहर के पिनकोड नंबर अवश्य डालें।

वर्ग पहेली क्रमांक-344 के परिणाम

विजेताः-

1-चंदनबाला जैन, देवास (म.प्र.) - प्रथम
2-भारती जैन, देवास (म.प्र.) - द्वितीय
3- प्रीति हिंगड़, नरवर (म.प्र.) - तृतीय

इनके भी उत्तर सही थेः-

श्रीमती प्रभा जैन, देवास

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-344 के परिणाम

सही उत्तर-

1- प्रतिक्रमण, 2- कषाय, 3- सम्यक्त्वी, 4- महाविदेह क्षेत्र, 5- मनुष्य गति, 6- आयुष्य कर्म, 7- परिकर से, 8- पाप लगे तब, 9- 21, 10- भवी, 11- सुधर्मा स्वामी, 12- लोकान्तिक देव।

ज्ञान गंगोत्री-344

सभी का प्रश्न क्रमांक-7 का उत्तर गलत था ''लंछन'' नहीं प्रतिमा ''परिकर से'' पहचानी जाती है।

✻ विचारवान के चित्त में यह विचार निश्चय रुप से रहा करता है कि- संसार कारागृह है, समस्त लोक दुःख के कारण पीड़ित है, भय के कारण आकुल-व्याकुल है और राग-द्वेष के प्राप्त फल से प्रज्वलित है।

प्रिय पाठकों! उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर हमें पोस्टकार्ड पर लिखकर हमें दिनांक 25-2-2024 तक भेज दीजिये। सही उत्तरों में से लक्की ड्रा निकालकर प्रथम तीन को क्रमशः51/-, 31/-, 21/- रूपये की राशि से सम्मानित किया जायेगा साथ ही उत्तीर्ण होने वालों के नाम ''आगमोद्धारक' मासिक में प्रकाशित किये जायेंगे। भेंट राशि एम.ओ. द्वारा भेजी जायेगी। - सम्पादक

सूचना- अब पहेली के लिये ड्रा द्वारा प्रोत्साहन राशि पुरस्कार में दी जायेगी। इसके लिये ड्रा निकालकर क्रमशः तीन पुरस्कार तीन विजेताओं को रुपये 31/-, 21/-, 11/- एम.ओ.भेजे जावेंगे। सही उत्तरवाले नाम हम छापेंगे ही। आप सहयोग बनाये रखिये। धन्यवाद।

।। श्री परमात्माय नम: ।।

शेठ नगीनचंद कपुरचंद झवेरीना प्रयासथी

जीवदया फंड

श्री नगीनचंद कपुरचंद झवेरी

सुभाष चौक, गोपीपुरा, सुरत - 1
मो.: 09825414470 / 9820078772
स्थापना वि. सं. 1962
इ.स. 1906 रजि. नं.- 1744
PAN : AAATS8024L

पैसा भेजने का पता :

प्रफुल अमीचंद झवेरी

26, खटाऊवाडी, गोरेगांवकर लेन,
सेन्ट्रल सिनेमानी पाछळ,
मुंबई - 400 004.
ऑफिस फोन : 2387 8476
मोबाईल : 98200 78772

धर्मप्रेमी सद्‌गृहस्थश्री, सादर प्रणाम !

जीवदया फंड संस्था सुरत के दानवीर शेठ श्री नगीनचंद कपुरचंद झवेरी के प्रयासो के द्वारा स्थापित एक रजीस्टर्ड ट्रस्ट है। यह जीवदया फंड संस्था के द्वारा कतल के लीये जानेवाले ओर बीन उपयोगी जीवो को छुडवाकर के सुरत की पांजरापोल में भेजा जाता है। यह कार्य पीछले ११४ सालो से यह संस्था कर रही है । ओर शेठश्री के उत्तम पुण्यबल की वजह से यह कार्य के अंदर लगातार प्रतिवर्ष प्रगति हो रही है । जैसे की पीछले पांच सालो के दौरान (एप्रील - २०१४ से मार्च - २०१९) १०७९८ जीवो को छुडाया / बचाया गया है ।

हमारे आंगन में आनेवाले बेझुबान जीवो को पांजरापोल के अंदर ट्रस्टीओ के द्वारा नीगरानी करके सोंपा जाता है । ओर पशु के संपूर्ण जीवनकाल तक उनको संभालकर रखा जाता है ।

अनंत दया के सागर भगवान श्री महावीर प्रभु के शासन के दो स्तंभ है । अहिंसा ओर जीव के उपर मैत्री । सर्वज्ञश्री के यह संदेश को सार्थक करने के लिये दोनो का भी बहुत बडा महत्व है । जैसे की

आपके परिवार के कोई भी सभ्य का जन्मदिन
पशु परिवार के एक सभ्य को जीवनदान देकर मना सकते है ।

आपके परिवार मे आये हुए शुभ लग्नोत्सव के दीन
एक पशु युगल को जीवनदान देकर उनका जीवन उत्सवमय बना सकते है ।

कर्मसंयोग के कारन आई हुई बीमारी का दुःख ओर अशाता को टालने के लीये
कोई पशु को अभयदान प्रदान करके महाशाता का सुख प्रदान करे ।

अपने स्वजन के मृत्यु के दुःखद समय में एक पशु को
मृत्यु के मुखमें से छुडवाने से आपश्री को सांत्वना भी प्राप्त होती है ओर आपके स्वजन की सदगति प्राप्ती की प्रार्थना भी कर सकते है ।

पवित्र पर्व के धर्मोत्सव के समय एक जीवको
जीवनदान देकर पर्व उपासना को दया ओर करुणामय बनाये ।

आपश्री हंमेशा के लीये तिथि का भी चयन कर सकते है। यह तिथि के दीन दान में दी गई रकम का जो ब्याज मीलता है उसमें से जीव को छुडवाया जायेगा ।

यह संस्था के द्वारा एप्रील २०२० से मार्च २०२१ के एक वर्ष के समय जो की लोकडाउन था, उस समय में कुल २५९१ जीवो को छुडवाया गया है ।

आपश्री चेक या ड्राफ्ट जीवदया फंड के नाम का बनाए। रोकड रकम में भी आप योगदान दे सकते है। (आपश्री का अनमोल योगदान सुरत ओर मुंबई में उपर दिये गये पते पर भीजवा सकते है।)

आपश्री आपका योगदान हमारे बेन्क खाते के अंदर भी जमा करवा सकते है । जीसकी जानकारी नीचे दी गई है। हमारी संस्था का 80-G नंबर AAATS 8024 LF 20210 है ।

Bank Name	: AXIS BANK LTD.	Bank Name	: BANK OF INDIA
A/c. Name	: JIVDAYA FUND	A/c. Name	: JIVDAYA FUND
IFSC	: UTIB0002274	IFSC	: BKID000001
A/c. No.	: 921010033621820	A/c. No.	: 00120100001219
Branch	: Charni Rd, Mumbai	Branch	: Mumbai Main Branch

जीवदया की शुभ भावना से कीये हुए कार्य से अक्षय सुख ओर मोक्षमार्ग की प्राप्ति होती है ओर नरकगति के कर्म का ओर अनेक भवो के पापो का क्षय भी जीवदया का कार्य करने से होता है। जीवदया का कार्य तीनो लोकमें श्रेष्ठ ओर सर्वोत्तम कार्य है ।

दान श्रेज सफल जीवन

लि. ट्रस्टीगण

प्रफुल अमीचंद झवेरी
पुष्पसेनभाई पानाचंद झवेरी
विरेन्द्र नेमचंद झवेरी

जतीनभाई फकीरचंद
शरदभाई गुलाबचंद कांटावाला
उषाकांत साकेरचंद झवेरी

शासन समाचार

जैनं जयति शासनम्

श्री भोपावर महातीर्थ में गुरु समर्पण, दीक्षा, प्रतिष्ठा से युवा जैनाचार्यश्री ने मालवा आगमन को सार्थक किया

मध्यप्रदेश के बाद श्री सम्मेदशिखरजी महातीर्थ में प्रतिष्ठा और चैत्र नवपद ओली आराधना का मेला लगेगा

* सैलाना में दिव्यांश मोदी दिव्य पथ पर 21 फरवरी को प्रयाण करेंगे। * उज्जैन के बाद प्रतिष्ठा से बदनावर, कानवन, रियावन उपकृत हुआ। सुवासरा में भी संयम का रंग जमेगा। * उज्जैन की अंजन प्रतिष्ठा में वाणीगोता ने रंग जमाया। * श्री शिखरजी में अप्रेल का महिना यादगार बनेगा, प्रतिष्ठा महोत्सव 4 अप्रेल से होगा, 20 अप्रेल को ऐतिहासिक वरघोड़ा तथा भोमियाजी का हवन, 21 अप्रेल को ध्वजदण्ड कलश की प्रतिष्ठा होगी। * जयपुर चार्तुमास लगभग तय है, तिथि व घोषणा का इंतजार है।

उज्जैन कानवन के बाद श्री सम्मेद शिखर जी महातीर्थ के अधिष्ठायक देव श्री भौमियाजी महाराज के मूल मंदिरजी जीर्णोद्धार होने के बाद प्रतिष्ठा आपश्री की निश्रा में को होना निश्चित हुई है।

* तीसरे युवा मुमुक्षु सैलाना में प्रवज्या ग्रहण करेंगे। * बाल मुनिश्री कल्याणरत्नसागर एवं बालमुनि श्री संवेगरत्नसागरजी म.सा. से गुरुकुल की शान बढ़ी। * गुरुदेव की पुण्यतिथि, अंजन-प्रतिष्ठा और पौष दशमी आराधना से अब मालवा के श्रीसंघ उपकृत होंगे।

रियावन प्रतिष्ठा
14-15 फरवरी

दीक्षा
सैलाना 17 से 21 फरवरी
दिव्यांश मोदी

चार्तुमास
लगभग जयपुर ही होगा

सुवासरा
8 से 11 फरवरी
में महामांगलिक संयम
जैन का दीक्षा।

सम्मेद शिखर
भोमियाजी प्रतिष्ठा
21अप्रेंल 2024

सम्मेद शिखर
चैत्र ओली
15 अप्रेल से 23 अप्रेंल 24

52 वां जन्म दिन सम्मेद शिखर में 21 अप्रेल को मनेगा

उज्जैन- जिनशासन के प्रभावी धार्मिक कार्यक्रमों के श्रृंखलाबद्ध आयोजन का मुंबई में स्मरण वर्षो तक बना रहेगा। यही कहानी अब मध्यप्रदेश, राजस्थान, झारखंड में भी दोहराई जायेगी उज्जैन में अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन उज्जैन में नूतन श्रीजीरावला जिनमंदिर की सौगात के रुप में मिला है। मुंबई चार्तुमास के बाद मालवा की अपनी पुण्य भूमि का उपकार ऋण उतारने का काम जिनशासन की अभूतपूर्व प्रभावना के साथ करना श्री भी जीवन का लावा है। साधु जीवन की महत्ता को सिद्ध करनेवाले आयोजन से मालवा ही नहीं झारखण्ड और राजस्थान भी लाभांवित होंगे। मालवा के अनेक श्रीसंघों के साथ राजस्थान, झारखण्ड भी शासन प्रभावना के कार्यो से यादगार बनने जा रहे है। बदनावर, रियावन, कानवन में प्रतिष्ठा महोत्सव का स्मरणीय आयोजन होने के साथ 14 फरवरी से सैलाना में दिव्यांश मोदी अपना जीवन युवा मुनिवर श्री कीर्तिरत्न सागरजी म.सा. को समर्पित कर परमात्मा प्रभुवीर की श्रमण परम्परा को आगे बढ़ायेंगे इसके बाद विहार झारखण्ड की ओर होगा। क्रियाशील जैनाचार्य मालवा के आचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा अपने प्रभाव पुण्य और पवित्राता से शासन प्रभावक कार्य से यादगार मिसाल बनते जा रहे हैं। युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्न सागरसूरीजी महाराजा परमात्मा श्री वीर प्रभु के शासन की अभिवृद्धि के लिये अपने सम्पूर्ण पुण्यबल का सुनियोजित उपयोग कर स्वयं और आपश्री ने गुरुकुल के युवा मुनिपुंग न जिन शासन की` भरपूर प्रभावना कर देश भर में जैनत्व का नया इतिहास रच दिया हैं। युवा श्रमण भगवंतों ने अद्‌भूत शासन भक्तिकर युवा और वरिष्ठधर्मिष्ठों को आकृषित कर जैनत्व का सम्मान किया पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरसागरसूरीजी महाराजा के गुरुकुल ने श्री वीरप्रभु के शासन को उज्जवल बनाने के लिये वर्तमानकाल में जैनत्व का शंखनाद कर रहे है। पूज्यपाद गुरुदेव श्री नवरत्न सागरसूरीजी महाराजा के गुरुकुल ने डंका बजा दिया है। श्री वीर प्रभु की पाट परम्परा में अपना योगदान देने के लिये बाल संयमी गुरुकुल से निरतंर जुड रहे है। उज्जैन आगमन होने के बाद अंजन-प्रतिष्ठा का संयोग बना है अब कानवन में प्रतिष्ठा तथा रियावन में प्रतिष्ठा है। पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्न सागर सूरीजी महाराजा की आठवीं पुण्यतिथि के निमित्त महोत्सव का आयोजन 31 जनवरी को भोपावर में होगा। मुमुक्षु दिव्यांश मोदी की दीक्षा का महोत्सव 21 फरवरी को सैलाना में होगा। इसं के बाद विहार श्री सम्मेदशिखरजी महातीर्थ की ओर होगा।35 कल्याणक भूमि के अध्यक्ष श्री कमलसिंहजी रामपुरिया कोलकत्ता की पूज्यश्री से आग्रहभरी विनंती पर विश्वविख्यात महातीर्थ श्री सम्मेदशिखरजी के अधिष्ठायक देव श्री भौमियाजी मंदिर में प्रतिष्ठा 21 अप्रेल को निश्चित हुई है15 से 23 अप्रेल तक चैत्र नवपद ओली का आयोजन भी होगा।युवा जैनाचार्यश्री की गुरुमंडली का मालवा आगमन होते ही शासन के कायो की श्रुस्वातहो जायेगी है। उज्जैन, बदनावर में आपश्री के द्वारा जिन मंदिर की प्रतिष्ठा के साथ दिनांक 25 जनवरी को कानवन में श्री विमल नाथ परमात्मा के जीर्णोद्धार किये गये जिनालय की मंगलकारी प्रतिष्ठा गुरु पुष्य अमृत सिद्धियोग में सम्पन्न होगी। आपश्री आदि ठाणा का श्री सम्मेद शिखरजी की ओर मंगल विहार होगा वहां श्री भौमियाजी मंदिर में प्रतिष्ठा सम्पन्न कर आपका विहार राजस्थान जयपुर में चार्तुमास के लिये हो सकता है। लगभग यह कार्यक्रम निश्चित हो चुके है। योगायोग से परिवर्तन की संभावना से इंकार नहीं है। युवा जैनाचार्यश्री के साथ जैनाचार्यश्री देवचंदसागरसूरीजी जैनाचार्यश्री दिव्यचंदसागरसूरीजी एवं गुरुकुल के युवा मुनि भगवंत प.पू. मुनि श्रीकीर्तिरत्न सागरजी म. सा. ,प.पू. मुनि श्रीतीर्थ रत्नसागर जी म. सा. प.पू. मुनि श्रीउदयरत्न सागर जी म. सा. ,प.पू.मुनि श्री उत्तमरत्नसागर जी म. सा. ,प.पू. मुनि श्री उज्ज्वलरत्नसागर जी म. सा. ,प.पू. मुनि श्रीप.पू. मुनि श्रीरम्यरत्न सागरजी म.सा.,प.पू. मुनि श्रीलब्धि रत्न सागरजी म. सा. मुनिश्री शौर्यरत्नसागर जी म.सा. मुनिश्री ऋषभ रत्नसागरजी म.सा .मुनि श्रीसिध्दरत्न सागरजी म. सा.आदि ठाणा युवा शिष्य मंडली के साथ मालवा के श्रीसंघों में शासन प्रभावना करने के बाद है। महातीर्थ श्री सम्मेदशिखरजी की ओर विहार करेगें

आगामी चार्तुमास

औरंगाबाद- यहां चार्तुमास हेतु विराजित पूज्य मुनिश्री हंसबोधि विजयजी म.सा. का तथा तपस्वी श्री भद्रकीर्तिविजयजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास अहमदाबाद के शांतिनगर जैन संघ उस्मानपुरा में घोषित हुआ है। पूज्य पंन्यास श्री मनोभूषणविजयजी म.सा. का चार्तुमास भी यहीं होगा।

पूज्य आचार्यश्री के आगामी मंगलमय आयोजनों की श्रृंखला

- ✻ 8 से 11 फरवरी, सुवासरा नगर में महामांगलिक सह मुमुक्षु संयम जैन का दीक्षा महोत्सव।
- ✻ 14-15 फरवरी, रियावन नगर में भव्य प्रतिष्ठा महोत्सव।
- ✻ 17 से 21 फरवरी, सैलाना नगर में मुमुक्षु दिव्यांश मोदी का भव्य दीक्षा महोत्सव।

भोपावर तीर्थाधिपति श्री शांतिनाथ दादा एवं गुरुमंदिर का चतुर्थ ध्वजारोहण 12 मार्च को होगा

भोपावर- 87000 वर्ष प्राचीन 16 वें तीर्थंकर परमात्मा श्री शांतिनाथ प्रभु की काउसग्ग मुद्रा की मनोहारी प्रतिमा से विश्व ख्यातिनाम श्री भोपावर तीर्थ में दादा के भव्य जिनप्रसाद तथा गुरुदेव श्री मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा के गुरु मंदिर की चतुर्थ ध्वजारोहण महोत्सव का आयोजन 12 मार्च, मंगलवार को होगा। ध्वजा के मुख्य लाभार्थी संघवी पंकुबाई भूरमलजी तेजमलजी कोठारी परिवार के द्वारा ध्वजारोहण होगा। गुरु मंदिर में प्रीतेश ओसवाल, श्री प्रतीक डोशी, श्री प्रशांत सकलेचा तथा श्री राव बिजावत परिवार के द्वारा ध्वजारोहण होगा। इस प्रसंग पर पावन निश्रा गणिवर्य श्री आनंदचंद्रसागरजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा रहेगी। सत्तर भेदी पूजन पढ़ाई जायेगी। महातीर्थ के अध्यक्ष श्री रमण भाई जैन मोंटेक्स ग्रुप के साथ अनेक विशिष्टअतिथियों का आगमन भी इस अवसर पर होगा।

दीक्षा मुर्हूत प्रदान

नासिक- मुमुक्षु रविकुमार तथा हर्षकुमार की परमात्मा प्रभुवीर के संयम पथ पर अग्रेसर होने की भावना अनुरुप आपको दिनांक 17 जनवरी को दीक्षा मुर्हूत प्रदान किया गया। पूज्य आचार्यश्री महानंदसूरीजी, पंन्यास प्रवर डॉ. अरुण विजयजी के सुशिष्य मुनिश्री हेमंत विजयजी म.सा.आदि साधु-साध्वी की निश्रा में यह मुर्हूत प्रदान किया गया। श्री वर्धमान जैन संघ पुण्य प्रकाश आराधना भवन में आयोजित हुआ।

नेमिजिन अंजनोत्सव मना

गिरनार- श्री गिरनार तीर्थ स्थित गिरनार धर्मशाला में पूज्य आचार्य श्री हेमवल्लभ सूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में दिनांक 21 से 25 जनवरी तक नेमिजिन अंजनोत्सव का आयोजन किया गया।

दिव्या ने दीक्षा ली

चैन्नई- मुमुक्षु दिव्या चौपड़ा का भव्य दीक्षा महोत्सव 27 जनवरी को आयोजित हुआ। पूज्य आचार्य देवेश श्री तीर्थभद्र सूरीश्वरजी महाराज ने नूतन दीक्षार्थी को रजोहरण प्रदान किया। इस अवसर बांदोली, सामुहिक आरती का आयोजन किया गया।

श्री ऋषभ वत्सलधाम बनेगा

पालीताना- श्री ऋषभ वल्लभधाम का निर्माण करने के लिये भूमि पूजन तथा खनन विधान की क्रिया दिनांक 26 जनवरी को सम्पन्न की गई। पूज्य जैनाचार्य श्री रत्नाकर सूरीश्वरजी, श्री जयसुन्दरसूरीजी, श्री अजीतयशसूरीजी आदि जैनाचार्यो के साथ बड़ी संख्या में साधु-साध्वी की उपस्थिति रही। ऋषभ वत्सलधाम के प्रणेता पूज्यपाद गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री उदयप्रभसूरीजी है। इस कार्य का संयोजन मुनिश्री हेमर्षिप्रभविजयजी म.सा.के द्वारा हुआ है।

कीचक राजा विराट का साला भी था और प्रधान सेनापति भी। वीर इतना कि जब पांडव अज्ञातवास में थे, तो अकेले कौरवों को परास्त करके उन्हें संधि करने पर विवश कर दिया। द्रोपदी को देखकर वासना में बह गया। राजा स्तर के अधिकार उसके पास थे, किसी प्रकार की कमी न थी, परन्तु दासी द्रोपदी के आगे प्रणय-निवेदन में भी लाज न आई।

द्रोपदी ने सावधान भी किया, कहा- मेरे रक्षक गंधर्व हैं, वे क्रुद्ध होंगे, परन्तु अहंता में उसने न राजा विराट की नाराजी को कुछ समझा, न गंधर्वो की परवाह की। वासना और अहंता की लपेट में उसे यश, सम्मान और जीवन से भी हाथ धोना पड़ा।

एकनु डगलु भरे शत्रुंजय समो जेह ऋषभ कहे भव क्रोड़ना, कर्म खपावे तेह ॥

एक-एक कमद आगे बढ़ने से भावमात्र आने करोड़ों भव के कर्म नष्ट हो जाते हैं। राग-द्वेष जैसे जैसे क्षय होते जाते हैकरोड़ों भव के कर्मो का क्षय हो जाता है।

जैनाचार्य श्री रवि-ललितसूरीजी की निश्रा में श्रीगिरनार से शत्रुंजय महातीर्थ का छःरिपालित संघ

माण्डवला- श्री मेवाड़ जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक श्री संघ भांडुप में पूज्यपाद जैनाचार्य श्री रविशेखर सूरीजी महाराजा एवं श्री ललितशेखर सूरीजी महाराजा आदि साधु-साध्वी वृंद की अमृत निश्रा में श्री गिरनार से श्री सिद्धाचल महातीर्थ के लिये सुखी-रतन छःरि पालित संघ का आयोजन हुआ। आपश्री की निश्रा में छःरिपालित संघ 26 जनवरी से 8 फरवरी 2024 तक आयोजित हुआ । दिनांक 26 फरवरी से 1 मार्च तक शैरिसा तीर्थ में अट्ठम तपाराधना आयोजित की गई है ।शाह मतिलाल रतन चंद्रजी चौधरी परिवार के द्वारा आयोजित संघ माण्डवला से बस द्वारा गिरनारजी पहुंचेगा।गिरनार से गिरीराज का संघ पूज्यजी की निश्रा में 26 जनवरी से आरम्भ हुआ । श्रीसिद्धगिरी 7 फरवरी को पहुंचेगा। दादा के दरबार में संघ माल 8 फरवरी को प्रातः होगी।

आचार्यश्री हंसरत्नसूरीजी महाभद्र तप कर रहे है

मुंबई- यहां चातुमार्सिक आराधना के लिये विराजित महातपस्वी आचार्य भगवंत श्री हंसरत्नसूरीश्वरजी महाराजा जिन्होंने पूर्व में 18 उपवास किये थे अब आपश्री महाभद्र तप की आराधना का शुभारंभ हुआ। इस तप में कुल 245 दिवस 196 उपवास और 99 बियासणा आयेंगे। पहली बारी में 28 उपवास तथा सात बियासणे आयेंगे।

कन्या 99 यात्रा का आयोजन

पालीताना- पूज्य साध्वीवर्या श्री तत्वपूर्णा श्रीजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में श्री शत्रुंजय गिरीराज की कन्या 99 यात्रा का आयोजन होने जा रहा है। नव्वांणु यात्रा का शुभारंभ दिनांक 14 अप्रेल से होगा तथा पूर्णाहुति दिनांक 5 जून को होगी।

गणिवर्य श्री आदर्शरत्नसागरजी भोपावर में गुरु सर्मपण उत्सव एवं बांजना में दीक्षा में निश्रा प्रदान करेंगे

✻ चार्तुमास अहमदाबाद में होने की सम्भावना।

बदनावर- -पूज्यपाद आचार्य देवेश मालव भूषण श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा के प्रशिष्य पूज्यपाद गणिवर्य श्री आदर्शरत्नसागर जी म.सा.गणिवर्य श्री अक्षतरत्नसागर जी म.सा.आदि ठाणा श्रमण-श्रमणी वृंद की निश्रा में भोपावर महातीर्थ में 31 जनवरी को पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा की आठवीं पुण्यतिथि पर गुरु समर्पण उत्सव का आयोजन गुणानुवाद सभा आयंबिल के साथ मनाया जायेगा दीक्षा बाजना निवासी पूजा बाफना को पूज्य गणिवर्यश्री ने संयम मार्ग पर आगे बढ़ने के लिये दीक्षा का मुर्हूत दिनांक 14 फरवरी प्रदान किया है दीक्षा गणिवर्य श्री आदर्शरत्नसागरजी म. सा. की निश्रा में दीक्षा बाजना में होगी। आपश्री का चार्तुमास अहमदाबाद में होने की संभवना है।

श्री सुमतिनाथ प्रभु के नवनिर्मित जिनमंदिर का अंजन-प्रतिष्ठा महोत्सव चैन्नई में होगा

चैन्नई- श्री विजयशांति सूरीश्वर जी महाराजा के गुरुमंदिर स्थित श्री सुमतिनाथ परमात्मा के नवनिर्मित जिनमंदिर का अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव 15 फरवरी को आयोजित होगा। पूज्य आचार्य देवेश श्री तीर्थभद्र सूरीश्वरजी महाराज आदि ठाणा की निश्रा में आयोजित होनेवाले प्रतिष्ठा महोत्सव का मार्गदर्शन और प्रेरणा अंतराष्ट्रीय जैन विधिकारक भाई मनोज कुमार बाबूमलजी हरण है। दिनांक 6 से 16 फरवरी तक आयोजित महोत्सव में परमात्मा की प्रतिष्ठा 15 फरवरी को होगी।

मकरबा में चल प्रतिष्ठा हुई

अहमदाबाद- प्रहलादनगर के समीप मकरबा में श्री शंखेश्वर पार्श्व नाथ आदि जिनबिम्ब की चल प्रतिष्ठा के साथ जिन मंदिर निर्माण भूमि की शुद्धि का आयोजन विगत दिनों सम्पन्न हुआ। इसके प्रेरणा स्त्रोत जैनाचार्य श्री निरंजनसागरसूरीजी महाराज थे। सागर समुदाय के मुनि भगवंत श्री आगमरत्न सागरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में यह आयोजन सम्पन्न हुआ। दिनांक 15 जनवरी का चल प्रतिष्ठा हुई।

मुनिपुंग श्री पद्मकीर्तिसागरजी म.सा. का वर्धमान तप ओली का पारणा घोड़ेगांव में यादगार बन गया

❊ पूज्यपाद गच्छाधिपति के साथ 5 आचार्यश्री की निश्रा रही।

❊ 50 से अधिक साधु-साध्वी भगवंत का सानिध्य मिला।

❊ छोटे कद के संत ने बड़ा तप कर नाम चमकाया।

घोड़ेगांव- संघ स्थविर सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधि पति गीतार्थ मूर्धनय जिनागाम सेवी आचार्य भगवंत श्री पूज्य पाद श्री दौलत सागरसूरीजी महाराजा आचार्यश्री नरदेव सागर सूरीजी महाराजा, आचार्य श्री जितरत्न सागर सूरीजी, आचार्य श्री चन्द्ररत्न सागरसूरीजी, नूतन आचार्य श्रीविराग सागर सूरीजी, उपाध्याय श्रीजी श्री विनीतसागरजी म.सा. आदि 50 से अधिक साधु-साध्वी वृंद की अमृत निश्रा में आयंबिल तपस्वी मुनिराज श्री पद्मकीर्तिसागरजी म.सा. को 100 वीं ओली पारणा निमित्त अष्टान्हिका महोत्सव का आयोजन आपश्री के गृहनगर घोड़ेगांव में 10 से 17 जनवरी के मध्य हुआ।10 जनवरी को गुरु भगवंतों के प्रवेश के साथ ही महोत्सव का शुभारंभ होगा। श्री पार्श्वपंच कल्याणक पूजन होगी। 11 जनवरी को तप वंदनावली, श्री केतुलभाई का उद्बोधन तथा बाल गणेशा का कार्यक्रम रखा गया था। दिनांक 14 जनवरी को तपस्वी मुनिराज के गुणों की गौरव गाथा गुणानुवाद सभा हुई, गुणानुवाद सभा को सूरत के विनोद भाई और उज्जैन से डॉ. सुभाष जैन आगमोद्धारक ने अपनी जोशीली वाणी से सभा को जाग्रत कर दिया लघु शांति स्नात्र पूजन भी हुई।मुनिश्री पद्म कीर्ति सागरजी को वधावणा के साथ आचार्य देवेश श्री नरदेवसागर सूरीजी, आचार्य श्री जितरत्नसागर सूरीजी, आयंबिल आराधकआचार्य श्री चन्द्ररत्नसागर सूरीजीआचार्य श्री विरागसागरसूरीजी म.सा.आदि का अक्षतऔर वासक्षेप से जोरदार वधावणा कार्यक्रम आयोजित हुआ15 जनवरी को भव्य रथयात्रा के साथ तपस्वी मुनिराज की शोभायात्रा का आयोजन होगा एवं पूज्यश्री पगले पारणा का चढ़ावा बोला गया। अमीचंद की अमिदृष्टि नाटिका हुई। 16 जनवरी को तपस्वी मुनिश्री के लाभार्थी के यहां पगले हुवे। लाभार्थी, कार्यकर्ताओं का सम्मान हुआ।

जैनाचार्य श्री कुलबोधि सूरीजी का उज्जैन आगमन

उज्जैन- भुवनभानु समुदाय के आचार्य देवेश रतलाम में यशस्वी चार्तुमास सम्पन्न कर मालवा के श्री संघों में जिनशासन प्रभावना करते हुए दिनांक 20 जनवरी को उज्जैन पधारे। श्री हीरसूरीश्वरजी बड़ा उपाश्रय में आपका मंगल आगमन हुआ। त्रिदिवसीय प्रवचन श्रृंखला में आपश्री ने आत्मकल्याण, दुःख के तीन कारण तथा साधना से सिद्धि विषय पर मंगल प्रवचन दिये। हाल ही में रतलाम में दीक्षित नूतन मुनिश्री की बड़ी दीक्षा दिनांक 22 जनवरी को हुई। यहां से आपश्री का विहार लिमड़ी के लिये हुआ जहां दीक्षा महोत्सव होनेवाला है। आपका चार्तुमास कंचनबाग, इन्दौर में घोषित हुआ है।

गज मंदिर में ध्वजारोहण होगा

उदयपुर- प्रति वर्षानुसार दादा श्री केशरियानाथ प्रभु श्री ऋषभदेव परमात्मा की छत्रछाया में स्थित गज मंदिर तथा जिनदत्त सूरी दादावाड़ी की 13 वीं वर्षगांठ पर वार्षिक ध्वजारोहण का दो दिवसीय कार्यक्रम दिनांक 19 एवं 20 फरवरी को मनाया जायेगा। सर कीकाभाई प्रेमचंद्र ट्रस्ट के अंतर्गत दिनांक 19 फरवरी को परमात्मा का भव्य वरघोड़ा आयोजित किया जायेगा तथा 20 फरवरी को प्रातःकाल सत्तर भेदी पूजन पढ़ाई जायेगी एवं विजय मुर्हूत में परमात्मा के जिनमंदिर पर लाभार्थी परिवार के द्वारा ध्वजा चढ़ाई जायेगी।

नूतन आचार्यश्री का चार्तुमास पूना में

पूना-पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा के सुशिष्य नूतन आचार्य देवेश वैराग्यरत्नसागर सूरीश्वर जी महाराज का 2024 का चार्तुमास पूना में होने जा रहा है। आपका चार्तुमास सोमवार पेठ पूना में निश्चित हुआ है। आप अभी मुंबई में विराजमान है।

विरति उपधान तप का आयोजन

पालीताना- पूज्य आचार्यदेव श्री ललितप्रभसूरीजी महाराज आदि ठाणा की निश्रा में उपधान तप का आयोजन दिसंबर में आरंभ हुआ। उपधान तप का मालारोपण उत्सव दिनांक 16 फरवरी 24 को मनाया जायेगा। उपधान का आयोजन श्री पन्नारुपा धर्मशाला में होगा।

प्रतिष्ठाचार्य श्रीमद् विजय जिनोत्तम सूरीश्वरजी म.सा. के आगामी कार्यक्रम

✻ श्री गढ़सिवाना नगर में श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिन मंदिर (पेढ़ी मंदिर) का रजत जयंति महोत्सव एवं श्री गौतम स्वामी आदि बिम्बों की प्रतिष्ठा 14-2-2024 को होगी।

✻ श्री अष्टापद जैन तीर्थ सुशील विहार, रानी स्टेशन में श्री अष्टापद आदि मंदिर का रजत जयंति महोत्सव 23-2-2024 को होगा।

✻ श्री चेलावास नगर (वाया मारवाड़ जंक्शन) श्री नमिनाथ भगवान जिन मंदिर में अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव 8-3-2024 से होगा।

✻ श्री शंखेश्वर महातीर्थ में श्री कुमार पाल चैत्र मास ओली समिति, चैन्नई द्वारा 1100 से अधिक आराधकों के साथ सामुदायिक ओली आराधना प्रारंभ दिनांक 15 से तथा समाप्त 23 अप्रेल2024 को होगी।

✻ श्री शंखेश्वर महातीर्थ में श्री पार्श्व-भैरव-सुशील धाम के परिसर में श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ चौमुख जिन मंदिर, श्री गौतम गुरु मंदिर, श्री नाकोड़ा भैरवजी का चौमुखा मंदिर का खनन मुर्हूत एवं शिलान्यास मंगल मुर्हूत खनन मुर्हूत 16अप्रेल 2024 को, शिलान्यास मुर्हूत 18अप्रेल को होगा। **आपका आगामी चार्तुमास श्री शिवगंज राज. के जैन श्वेतांबर उपाश्रय में होने की घोषणा हुई है।**

डॉ. सुभाष जैन को अभिनव शब्द शिल्पी की उपाधि से सम्मानित किया गया

भोपाल- भारतीय गणतंत्र की 74 वीं वर्षगांठ, अभिनव कला परिषद की 61 वीं सालगिरह (हीरक जयंती पर्व) तथा अयोध्या में श्रीराम दरबार की प्राण प्रतिष्ठा की समवेत उत्सवी अनुभूति के अवसर पर सोमवार दिनांक 22 जनवरी 2024 को संध्या 6.30 पर मानस भवन सभागार में कला पर्व गणतंत्र का 54 वां आयोजन किया गया। कार्यक्रम में देश के आठ सुप्रतिष्ठित साहित्यकारों को उनके साहित्यक अवदान हेतु ''अभिनव शब्द शिल्पी'' की मानद उपाधि से अलंकृत कर सम्मानित किया गया। डॉ. सुभाष जैन को भी इस अवसर पर अभिनव शब्द शिल्पी की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया। अभिनव कला परिषद् 1963 से लगातार देश के 4000 से अधिक राष्ट्रीय युवा संगीतकारों तथा साहित्यकारों का सम्मान कर चुकी है। अभी तक संस्था के द्वारा 370 कार्यक्रमों का आयोजन हो चुका है। मध्यप्रदेश शासन के द्वारा संस्था को 2021 में राजा मानसिंह तोमर राष्ट्रीय सम्मान दिया गया था। संस्था के संस्थापक पंडितवर्य श्री सुरेश तातेड़ है। कार्यक्रम में देश के सुप्रसिद्ध गायक कलाकार एवं साथी द्वारा ''राम चरित गुणगान'' की सुमधुर प्रस्तुति से रससिक्त किया गया।

गिरनार में चार्तुमास

गिरनार- पूज्य अध्यात्मयोगी श्री कलापूर्ण सूरीश्वरजी महाराजा के सुशिष्य पूज्य आचार्य भगवंत श्री पूर्णचन्द्र सूरीश्वरजी महाराज आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वीवृंद का आगामी सामूहिक चार्तुमास श्री गिरनार महातीर्थ में होने जा रहा है। सामूहिक रुप से 500 आराधक का चार्तुमास 50 दिवस का होगा।

श्री सिद्धाचल महातीर्थ में 99 यात्रा

पालीताना- शाश्वत तीर्थराज श्री सिद्धाचल महातीर्थ में 99 यात्रा का आयोजन सिर्फ श्रावक के लिये दिनांक 15 अप्रेल से होने जा रहा है। यह यात्रा पूज्य आचार्यदेवश्री संयमबोधि सूरीश्वरजी महाराज आदि साधु-साध्वी ठाणा की निश्रा में होगी। सुनतर भवन पालीताना से यात्रा आरंभ होगी।

सतना के लिये मंगल मुर्हूत प्रदान किया

सतना- श्री आदिनाथ परमात्मा आदि जिनबिंबों की प्रतिष्ठा तथा मुनिश्री सुव्रतस्वामी जिनबिंबों की अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव के लिये पूज्यपाद गच्छाधिपति श्री अभयदेवसूरीजी महाराजा के द्वारा मंगल मुर्हूत प्रदान किया गया। जिन प्रतिमा का मंदिरजी के गर्भगृह में प्रवेश दिनांक 7 मार्च 2024 को होगा। पूज्यश्री का अंजन-प्रतिष्ठा के लिये मंगल प्रवेश दिनांक 5 अप्रेल को होगा। अंजन-प्रतिष्ठा महोत्सव का शुभारंभ कुंभ स्थापना के साथ दिनांक 6 अप्रेल से होगा। परमात्मा की अंजन विधि दिनांक 14 अप्रेल को होगी तथा प्रतिष्ठा दिनांक 15 अप्रेल को सम्पन्न होगी।

सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधिपति पूना विराजमान है, चार्तुमास पूना होने की संभावना

✻ पूज्य आचार्यश्री नरदेवसागरसूरीजी भी पूना है।

पूना- संघ स्थविर सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधि पति गीतार्थ मूर्घनय जिनागाम सेवी आचार्य भगवंत श्री पूज्य पाद श्री दौलत सागरसूरीजी महाराजा नूतन आचार्य भगवंत श्री विरागसागरसूरीजी म.सा. आदि ठाणा के साथ पूना विराजमान है, आपश्री कात्रज है, यहां से प्रतिष्ठा महोत्सव के लिये विहार करेंगे, प्रतिष्ठा 31 जनवरी को है। पूज्य वचनसिद्ध आचार्यदेव श्री नरदेवसागर सूरीश्वरजी महाराजा तथा वर्धमान तपोनिष्ठ पूज्य मुनि भगवंत श्री पद्मकीर्तिसागरजी म.सा. भी आपश्री के साथ ही विराजमान है। पूज्यपाद गच्छाधिपतिश्री का आगामी चार्तुमास पूना या आसपास के क्षेत्र में होने की संभावना है। आचार्य श्री नरदेवसागरसूरीजी महाराजा का चार्तुमास भी पूना के आसपास क्षेत्र में होने की संभावना है।

श्री गिरनारजी की संघ एवं नव्वांणु यात्रा

जूनागढ़- पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री हेमवल्लभसूरीजी महाराज जिन्होंने अभी तक श्री गिरनार महातीर्थ की 3500 यात्रा कर ली है, ऐसे जैना चार्यश्री की अमृत निश्रा में दिनांक 6 जनवरी 2024 से नव्वांणु यात्रा का शुभारंभ होगा। यात्रा की पूर्णाहुति पर मालारोपण 28 फरवरी 2024 को होगा। पूज्यश्री की निश्रा में गिरनार से श्री गिरनार की संघयात्रा के अंतर्गत गिरनार तीर्थ की परिक्रमा का आयोजन हुआ।

गुरु गौरव महोत्सव में सकल संघ हितचिंतक श्री हर्षसागरसूरीजी का 49 वां दीक्षा दिन मनाया जायेगा

मुंबई- यहां चौपाटी स्थित भारतीय विद्या भवन में सकल हित चिंतक पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री हर्षसागर सूरीश्वरजी महाराजा का 49 वां दीक्षा दिन पर गुरु गौरव उत्सव मनाया जायेगा। पूज्य आचार्यश्री के सुशिष्य प्रशिष्य पूज्य उपाध्याय श्री विनीतसागरजी महाराज ओजस्वी वक्ता मुनिश्री विनम्रसागरजी म.सा. आदि ठाणा साधु-साध्वी भगवंत की अमृत निश्रा में दिनांक 4 फरवरी को होनेवाले गुरु गौरव महोत्सव में देशभर से गुरुभक्तों का आगमन होगा। गुरु गौरव कथा का आयोजन गुरु गुणानुवाद सभा के साथ होगा। पूज्यश्री के जीवन चरित्र का चित्रों के द्वारा प्रदर्शित किया जायेगा। अहिंसा संघ मुंबई तथा भारत वर्षीय सागर परिवार के द्वारा यह आयोजन होने जा रहा है।

वीर वत्सल उपधान तप

काकटूर- श्री 24 तीर्थंकर तीर्थ धाम आंध्रप्रदेश के काकटूर में पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री उदयप्रभसूरीजी आदि साधु-साध्वीवृंद की अमृत निश्रा में उपधान तप का शुभारंभ दिसंबर में हुआ था। उपधान तप की भव्य शोभायात्रा दिनांक 7 फरवरी को आयोजित होगी तथा दिनांक 8 फरवरी को आराधक तपस्वीयों की मोक्ष माल सम्पन्न होगी।

साध्वी श्री चन्द्ररत्ना श्रीजी का चार्तुमास

पाली- जिनागमसेवी पूज्य गच्छाधिपति आचार्य देव श्री दौलत सागर सूरीजी महाराज साहब की आज्ञावृत्ति सागर समुदाय की वरिष्ठ साध्वीवर्या रही तपस्वी साध्वी कुसुम श्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वी श्री चन्द्ररत्ना श्रीजी म.सा. एवं बाल साध्वी श्री ध्वनिरत्ना श्रीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास पाली के गुजराती जैन आराधना भवन में होगा। चार्तुमासिक आराधना के अंतर्गत अनेक विविध तप, जप, अनुष्ठान महोत्सव के आयोजन की बड़ी श्रृंखला है।यहां पर पूज्य मुनिराज श्रीसुमतिचन्द्रसागरजी म.सा. का श्री चार्तुमास होने जा रहर है। साध्वी श्री चन्द्ररत्ना श्रीजी म.सा. की निश्रा में लोद्रवपुर राज.में जिनमंदिर का ध्वजारोहण आदि करर्सक्रम का आयोजन हुआ।

श्री गिरीराज की 99 यात्रा शाश्वत परिवार के द्वारा

मुंबई- पूज्य आचार्य श्री आनंदवर्धनसूरीजी महाराजा एवं आचार्य श्री आत्मदर्शनसूरीजी महाराज की निश्रा में दादा की 99 यात्रा का आयोजन दिनांक 27 अप्रेल से आरम्भ होगा। बिदाई बहुमान दिनांक 30 मई को होगा।

श्री शत्रुंजय महातीर्थ में वागड़ नरेश का चार्तुमास होगा

✻ सुखेड़ा में प्रतिष्ठा महोत्सव में निश्रा रहेगी।

मुंबई- पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य भगवंत श्री नवरत्न सागरसूरीजी महाराजा के सुशिष्य आचार्य देवेश वागड़ नरेश श्री मृदुरत्न सागरसूरीजी म. सा. पू. मुनिश्री पद्म रत्न सागर जी म.सा. आदि ठाणा एवं साध्वी श्री केरवप्रज्ञा श्रीजी, मुक्ति यशा श्रीजी, श्री रत्नेशकलाश्रीजी आदि ठाणा की मंगल निश्रा में यहां के एवरशाइन पैराडाईज जैन श्वेतांबर मूर्ति पूजक श्री संघ में दिनांक 20 जनवरी का भव्य रथयात्रा के साथ प्रभु प्रवेश तथा मुमुक्षु बहन झीलबहन का वर्षीदान वरघोड़ा आयोजित हुआ। आपकी दीक्षा 14 फरवरी को होगी। साध्वी मुक्तिरसा श्रीजी म.सा. के गुरुकुल में आपने स्थान बनाया है। 24 जनवरी को ठाकुर विलेज में अंजन-प्रतिष्ठा महोत्सव के चढ़ावे बोले गये। उक्त कार्यक्रम के लिये पूज्यश्री का प्रवेश 20 जनवरी को हुआ था। प्रतिष्ठा दिनांक 28 जनवरी को भव्य रुप से सम्पन्न हुई। यहां से आपश्री का विहार मालवा के सुखेड़ा के लिये हुआ है जहां आपश्री की निश्रा में अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन होने जा रहा है। दिनांक 4 अप्रेल को यहां प्रतिष्ठा होगी। यहां से आपश्री का विहार मोटागांव, बांसवाड़ा (राज.) के लिये होगा जहां श्री नाकोड़ा भैरव मंदिर की प्रतिष्ठा दिनांक 21 अप्रेल को होगी। श्री सिद्धक्षेत्र शत्रुंजय महातीर्थ पालीताना में आपश्री का आगामी चार्तुमास होने जा रहा है जहां चार्तुमासिक प्रवेश 19 जुलाई को होगा। **चार्तुमास के लाभार्थी श्रीमती सम्पत्तबाई बापूलालजी चौधरी परिवार जीरण (नीमचवाले) है। चार्तुमास साबरमती धर्मशाला में होगा।**

लक्ष्यवेध उपधान तप

चैन्नई- पूज्य आचार्य देवेश श्री अभयशेखर सूरीजी महाराज आदि ठाणा की अमृत निश्रा में वाराही मंडण श्री शांतिनाथ प्रभु की छत्रछाया में उपधान तप का आयोजन कोलाट हित के दक्षिण भारत में प्रथम बार होने जा रहा है। उपधान में प्रथम प्रवेश दिनांक 16 अप्रेल को होगा। उपधान मोक्षमाल दिनांक 5 जून को होगी।

पूज्य श्रीजैनाचार्य श्री मुक्तिसागरसूरीजी ने ठाणा में दीक्षा प्रदान कर उज्जैन में उपधान के लिये विहार

उज्जैन- पूज्यपाद पंन्यास प्रवर श्री अभ्युदयसागरजी महाराज के सुशिष्य पूज्य श्रीजैनाचार्य श्री मुक्ति सागरसूरीजी एवं आचार्यदेव श्री अंचल मुक्तिसागर सूरीजी म.सा.मुनिश्री पावन सागरजी मुनि श्री मनमुक्तिसागरजी म.सा.आदि ठाणा की अमृत निश्रा में ठाणा के श्री राजस्थान श्री संघ में बाल मुमुक्षु खुशी को भगवती प्रवज्या प्रदान की गई। मुमुक्षु साध्वी श्री शीलधर्मा श्रीजी म.सा. की सुशिष्या बनी है। यह दीक्षा प्रसंग दिनांक 17 जनवरी को आयोजित हुआ था। आपका विहार उज्जैन की ओर चल रहा है। लगभग 17 फरवरी को उज्जैन नगर प्रवेश होगा। श्री अभ्युदयपुरम् तीर्थ में उपधान तप में दिनांक 14 अप्रेल 2024 को प्रथम तथा दिनांक 16 अप्रेल को द्वितीय प्रवेश होगा। उपधान तप का वरघोड़ा 1 जून को आयोजित होगा। मालरोपण विधान दिनांक 2 जून को सम्पन्न होगा।श्रीमती ज्योति बहन नलिनभाई दलाल परिवार पूना सम्पूर्ण लाभार्थी है। कल्याण मंदिर की प्रथम वर्षगांठ दिनांक 21 फरवरी को 108 पार्श्वनाथ पूजन तथा 22 फरवरी को वर्धमान शक्रस्तव, 18 अभिषेक होंगे दिनांक 23 फरवरी को ध्वजा चढ़ाई जावेगी **आपका आगामी चार्तुमास श्री अर्बुजगिरी जैन श्वेतांबर उपाश्रय इन्दौर में होने की घोषणा की गई है।**

श्री शत्रुंजय महातीर्थ में खात मुर्हूत हुआ

पालीताना- पूज्य आचार्य श्री विजय शीलरत्नसूरीजी एवं श्री कुलचंद सूरीजी महाराज (के.सी.) आदि ठाणा की अमृत निश्रा में यहां नूतन जिन मंदिर धर्मशाला, भोजनशाला आदि के निर्माण के लिये खात मुर्हूत का भव्य आयोजन दिनांक 17 जनवरी को सम्पन्न हुआ। श्री सिद्धगिरी भक्ति विहार धर्मशाला में यह आयोजन हुआ।

✻ रखा हुआ कुछ रहता नहीं और छोड़ा हुआ कुछ छूटता नहीं; इस प्रकार परमार्थ विचार कर किसी के प्रति दीनता दिखाना या विशेषता दिखाना योग्य नहीं है।

श्री नवग्रह जिनमंदिर की अंजन प्रतिष्ठा जैनाचार्य श्री अशोकसागरसूरीजी महाराज ने करवाई

मंदसौर- आचार्य श्री अशोकसागर सूरीजी म.सा. पूज्य आचार्य श्री सौम्य चंद्रसागरसूरीजी श्री विवेकचंद्रसागर सूरीजी एवं प्रवर्तक श्री धैर्यचंद्र सागरजी महाराज साध्वी श्री मोक्षज्योति श्रीजी आदि ठाणा की पावन अमृत निश्रा में में निर्मित में नवग्रह मंदिर में श्री आदिनाथ दादा आदिजिन प्रतिमाओं की अंजन प्रतिष्ठा का आयोजन 15 से 22 जनवरी के मध्य किया गया। वर्षीदान का वरघोड़ा राजनगरी को आयोजित हुआ। 22 जनवरी को प्रतिष्ठा के उपरांत 23 जनवरी को द्वारोद्घाटन हुआ। पूज्यश्री ने सलोनी ज्ञानचन्द्र मेहता को 18 नवंबर ज्ञानपंचमी पर श्री नागेश्वर तीर्थ में संयम प्रवज्या का मंगल मुर्हूत प्रदान किया। मुमुक्षु की दीक्षा बड़नगर में दिनांक14 फरवरी को होगी।

तीन राज्यों में प्रतिष्ठा महोत्सव में बंधु त्रिपुटी की निश्रा रहेगी : चार्तुमास कर्नाटक के गदक में होगा

❋ तीन राज्यों में जिन मंदिर की प्रतिष्ठा।

❋ अंतराष्ट्रीय जैन विधिकारक श्री मनोजजी हरण का मार्गदर्श-प्रेरणा रहेगी।

अहमदाबाद-जैनाचार्य अपूर्व मंगल रत्नसागरसूरीजी महाराजा के गुरुकुल के बंधु त्रिपुटी मुनि प्रवर श्री आगम प्रश्म- व्रजरत्नसागरजी म.सा. आदि ठाणा के चार्तुमास और उपधान तप की यशस्वी पूर्णाहुति के बाद अंतर्राष्ट्रीय जैन विधिकारक भाई श्री मनोजकुमार बाबूमलजी हरण के मार्गदर्शन में तीन राज्यों के 11 जिन मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा सम्पन्न करवायेंगे। अहमदाबाद प्रहलाद नगर में 15 जनवरी, सीतामऊ में 11 फ रवरी, झालावाड़ में 21 फरवरी, सोयतकलां में 29 फरवरी, रतलाई (राज.) में 3 मार्च, मालवा में 6 मार्च, पचोर में 13 मार्च, सुखेड़ा में 4 अप्रेल, गौतमपुरा में 15 अप्रेल, सीतामऊ जहाज मंदिर में 26 अप्रेल तथा सीतामय में गांव मंदिर में 28 अप्रेल को प्रतिष्ठा आयोजन सम्पन्न होंगे। गदक कर्नाटक की ओर आपका विहार होगा जहां आपका आगामी चार्तुमास निश्चित हुआ है। 28जनवरी को अल्प प्रवास पर आपकर उज्जैन आगमन हुआ।

आगामी चार्तुमास की जय बोलाई गई

मुंबई- यहां के विलेपार्ले श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ की आग्रहभरी विनंती पर पूज्य आचार्य देवेश श्री अक्षयबोधि सूरीजी तथा आचार्यदेव श्री महा बोधि सूरीजी महाराज का आगामी वि.सं. 2080 ईस्वी सन् 2024 का चार्तुमास विलेपार्ले श्री संघ में करेंगे। संघ में चार्तुमास की घोषणा से हर्ष छा गया।

राष्ट्रसंत का चार्तुमास श्री नाकोड़ा तीर्थ में

मुंबई- सागर समुदाय के वरिष्ठ संत जैनाचार्य श्री चन्द्राननसागर सूरीजी महाराजा के गुरुभक्तों का मिलन समारोह दिनांक 8 दिसंबर को चेम्बुर वेस्ट के श्री ऋषभदेव जैन मंदिर में आयोजित किया गया। श्री नाकोड़ा दर्शन परिवार ने आयोजित किया था। पूज्यश्री का आगामी चार्तुमास श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ महातीर्थ से निश्चित हुआ। आपश्री की निश्रा में मुंबई में चार प्रतिष्ठा महोत्सव होने के बाद आपश्री ने दिनांक 23 दिसंबर को राजस्थान की ओर विहार किया है। राजस्थान में आपश्री की निश्रा में पांच अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव होनेवाले है। मुंबई में आपश्री के वरद हस्ते 136 अंजन-प्रतिष्ठा महोत्सव हो चुके है।

कुणसी में अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव

कुणसी- हैदराबाद के समीप कुणसी में श्री मनमोहन पार्श्वनाथ तीर्थधाम में पूज्य आचार्य देवेश श्री विजय राजतिलक सूरीजी महाराज आदि ठाण की निश्रा में अंजन प्रतिष्ठा का आयोजन दिनांक 18 फरवरी से आरंभ होगा। वरघोड़ा 21 फरवरी को है तथा प्रतिष्ठा 22 फरवरी को होने के बाद द्वारोद्घाटन 23 फरवरी को होने के बाद कार्यक्रम की पूर्णाहुति होगी।

दादा के दरबार से दादा के दरबार की संघ यात्रा

पालीताना- श्री सिद्धाचल महातीर्थ से श्री नेमीनाथ दादा के दरबार गिरनारजी का छःरिपालित संघ आयोजित होने जा रहा है। पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री अजितयश सूरीजी एवं आचार्य भगवंत श्री संस्कारप्रशसूरी जी महाराजा आदि ठाणा की अमृत निश्रा में दिनांक 6 फरवरी 2024 को संघ का प्रयाण पालीताना से होकर दिनांक 22 फरवरी 2024 को श्री गिरनार महातीर्थ से संघ माल होगी।

हासामपुरा महातीर्थ में वर्षीतप आराधकों का पारणा महोत्सव मनाया जायेगा

✻ 8 से 10 मई तक त्रिदिवसीय महोत्सव का आयोजन होगा।

उज्जैन- पूज्यपाद आचार्य देवेश वचनसिद्ध श्री नरदेवसागर सूरीजी महाराज की मंगल प्रेरणा और मार्गदर्शन में विगत वर्ष श्री ऋषभदेव छगनीराम पेढ़ी, श्री सिद्धचक्राराधन तीर्थ पर 120 वर्षीतप आराधकों का सामुहिक वर्षीतप आरम्भ हुआ था सभी आराधकों की आराधना पूज्यश्री के आर्शीवाद से निर्विघ्न सम्पन्नता की ओर आगे बढ़ रही है। वर्षीतप का पारणा अक्षय तृतीय दिनांक 10 मई शुक्रवार को आ रहा है । लगभग 35-40 आराधकों का पारणा महोत्सव का आयोजन त्रिदिवसीय महोत्सव के साथ 8 से 10 मई तक श्री आलौकिक पार्श्वनाथ महातीर्थ हासामपुरा में आयोजित किया जायेगा । पारणा महोत्सव में निश्रा प्रदान करने के लिये बंधु युगल जैनाचार्य वाणी के जादूगर पूज्य पाद आचार्य भगवंत श्री जितरत्न सागर सूरीजी महाराजआयंबिल आराधक जैनाचार्यश्री चन्द्ररत्न सागर जी म.सा. को आयंबिल तप की 268 वीं ओलीजी आराधक मुनिश्रीचैत्यरत्न सागर जी मुनिश्री ज्ञानेशरत्नसागरजी मुनिश्री पवित्र रत्नसागरजी म.सा. मुनि श्री गोयमसागरजी म.सा.आदि ठाणा साधु-साध्वी पूना से विहार कर पहुंचेंगे इसके साथ ही पूज्यपाद पंन्यास प्रवर श्री अभ्युदयसागरजी महाराज के सुशिष्य पूज्य आचार्यदेव श्रीजैनाचार्य श्री मुक्तिसागरसूरीजी एवं आचार्य देव श्री अंचलमुक्तिसागर सूरीजी म.सा. आ ठाणा के 18फरवरी तक उज्जैन पहुंचने पर आपसे पारणा समिति निश्रा प्रदान करने के लिये विनंती करेगी साथ ही आसपास विराजमान साधु-साध्वी भगवंतों से पधारने की विनंती समिति के द्वारा की जायेगी। पारणा महोत्सव केलिये तैयारियां आरंभ हो गई है। पारणा महोत्सव समिति के संयोजक एवं सचिव डॉ. सुभाष जैन आमोध्दारक है

जैनाचार्य श्री रश्मि सूरीजी को श्रमणीगण नायक के साथ 13 पंन्यास पदवी महोत्सव हुआ

वेसू- श्री दीक्षा दानेश्वरी संयम तीर्थ श्री महाविदेहधाम सूरत में पूज्य आचार्य देवेश श्री पुण्यरत्नसूरीजी महाराज आदि अनेक आचार्य भगवंत साध्वी भगवंतों की अमृत निश्रा में पूज्य आचार्य भगवंत श्री रश्मिरत्नसूरीजी महाराज को श्रमणीनायक तथा 13 महात्माओं को पंन्यास पद प्रदान कर महोत्सव आयोजित हुआ। दिनांक 23 से 25 जनवरी तक आयोजित महोत्सव में सामुहिक सामायिक तथा तप वधावणा के साथ नवकार भक्ति का आयोजन हुआ। दिनांक 25 जनवरी को श्रमणीनायक तथा पंन्यास पद प्रदान का भव्य आयोजन हुआ। एक साथ पदवी प्रदान के इस अनूठे आयोजन में बड़ी संख्या में धर्मिष्ठों की उपस्थिति रही।

राजगढ़ में चार्तुमास होगा

राजगढ़- जिनागमसेवी पूज्य गच्छाधिपति आचार्य देव श्री दौलत सागर सूरीजी महाराज साहब की आज्ञावृत्ति पूज्य साध्वी श्री हेमेन्द्र श्रीजी महाराज की शिष्या पूज्यश्री चारुव्रता श्रीजी महाराज की शिष्या पूज्य नम्रवृता श्रीजी महाराज श्री मग्नवृता श्रीजी महाराज मीतवृता श्रीजी महाराज आदि ठाणा-3 का आगामी चार्तुमास राजगढ़ निर्धारित हुआ है।

श्री कांतिभाई की प्रवज्या दीक्षा का आयोजन

मांडवी- राजस्थान के सिरोही जिले में मांडवी से श्री कांतिभाई खिमेसरा की प्रवज्या का आयोजन आचार्य देव श्री अजयसागरसूरीजी महाराज आदि ठाण की निश्रा में सम्पन्न हुई।12 से 17 जनवरी तक आयोजित दीक्षा महोत्सव में दीक्षार्थी का वरघोड़ा दिनांक 16 जनवरी को आयोजित हुआ। शाम को बिदाई तथा 17 जनवरी को प्रातः शुभ लग्नांश बेला में दीक्षा क्रिया विधि सम्पन्न हुई।

आचार्यश्री मतिचंदसागर सूरीजी का विहार मुंबई की ओर

इन्दौर- मालवा के उज्जैन में यशस्वी चार्तुमास के साथ श्री नागेश्वर महातीर्थ में पूज्य आचार्य श्री अशोक सागरसूरीजी गुरुदेव को वंदना का मंदसौर में प्रतिष्ठा तथा इन्दौर से मांडवगढ़ तीर्थ का छःरिपालित यात्रा संघ में निश्रा प्रदान कर पूज्यश्री ने मुंबई की ओर विहार आरंभ किया है। यहां उपधान माल आदि महोत्सव होंगे, संभवतः आपका चार्तुमास मुंबई हो सकता है।

गणिवर्य श्री बड़नगर में महावीर पथ की अनुगामी मुमुक्षु सलोनी को रजोहरण प्रदान करेंगे

बड़नगर- अनेक साधु-साध्वी की दीक्षा स्थलीय बड़नगर में एक बार फिर से दीक्षा की शहनाई बजेगी। मेहता परिवार की मुमुक्षु बहन कुमारी सलोनी का भगवती प्रवज्या महोत्सव दिनांक 10 से 14 फरवरी तक आयोजित होगा। पूज्य गणिवर्य श्री पद्मचंद्र सागर जी म.सा., गणिवर्य श्री आनंदचंद सागर जी म.सा.आदि ठाणा के साथ साध्वी वर्या मातृ हृदया श्री अमितगुणा श्रीजी, अर्चितगुणाश्रीजी, श्रीअर्पितगुणा श्रीजी, तथा साध्वी श्रीअमीझारा श्रीजी म. सा.आदि ठाणा की मंगल निश्रा में आयोजित दीक्षा महोत्सव दिनांक 10 फरवरी को शक्रस्तव दिनांक 11 फरवरी को चौबीस गान दिनांक 12 फरवरी को प्रवज्या वधावणा, दिनांक 13 फरवरी को परमात्मा की रथयात्रा और दीक्षार्थी बहन का वर्षीदान विदाई समारोह मनेगा एवं दिनांक 14 फरवरी को शुभ लग्नांश वेला में दीक्षा क्रिया विधि आरंभ होगी। उपकरण की बोली तथा नूतन साध्वी का नामकरण घोषित होगा।

युगलबंधु आचार्यश्री मालवा में प्रतिष्ठा तथा उज्जैन में वर्षीतप पारणा महोत्सव में निश्रा प्रदाता रहेंगे

✻ मालवा की ओर पूना से विहार हुआ। ✻ आपका चार्तुमास हुगली में होगा, उज्जैन से विहार होगा।

पूना- जैनाचार्य वाणी के जादूगर पूज्य पाद आचार्य भगवंत श्री जितरत्न सागर सूरीजी महाराजआयंबिल आराधक जैनाचार्यश्री चन्द्ररत्न सागर जी म.सा. को आयंबिल तप की 268 वीं ओलीजी आराधक मुनिश्रीचैत्यरत्न सागर जी मुनिश्री ज्ञानेशरत्नसागरजी मुनिश्री पवित्र रत्नसागरजी म.सा. मुनि श्री गोयमसागरजी म.सा.आदि ठाणा का विहार मालवा की ओर आरंभ हो गया है। आपश्री धार, देपालपुर, गौतमपुरा आदि स्थानों पर प्रतिष्ठा तथा अनेक विध शासन प्रभावक कार्यो को सम्पन्न कर उज्जैन में पधारेंगे। यहां आपश्री की निश्रा में तथा अनेक साधु-साध्वीवृंद की उपस्थिति में हासामपुरा तीर्थ में वर्षीतप आराधकों के पारणा प्रसंग पर मंगल निश्रा प्रदान करेंगे। दिनांक 8 से 10 मई तक आयोजित होनेवाले पारणा महोत्सव श्री शत्रुंजय गिरीराज वधावणा, भावयात्रा, श्री सिद्धचक्र महापूजन, आराधकों की भव्य शोभायात्रा, स्वामीवात्सल्य आदि आयोजन होंगे। यहां से आपश्री का विहार हुगली कर्नाटक की ओर होगा जहां आपश्री का चार्तुमास होगा।

गिरनार में नव्वांणु यात्रा

गिरनार- पूज्य आचार्य भगवंत श्री हेमवल्लभसूरीजी महाराजा की अमृत निश्रा में नव्वांणु यात्रा का आयोजन दिनांक 6 जनवरी 2024 से आरंभ होने जा रहा है, लाभार्थी की माल दिनांक 18 फरवरी को होगी।

दादा के 18 अभिषेक और ध्वजा चढ़ाई जावेगी

पालीताना- श्री शत्रुंजय तीर्थाधिपति श्री आदिश्वर दादा के दीक्षा कल्याणक पर दादा के 18 अभिषेक के साथ दादा की 493 वीं वर्षगांठ पर मूलनायक प्रभु की जिनालय के शिखर पर ध्वजा चढ़ाने के लिये दिनांक 26 नवंबर को बोली हुई। बोली सुबह 10 बजे से भाताघर जय तलेटी पर के पास बोली गई। दादा के अट्ठारह अभिषेक दिनांक 2 अप्रेल को होंगे तथा वर्षगांठ पर ध्वजा 19 मई को चढ़ाई जावेगी।

श्री शत्रुंजय गिरिराज की नव्वांणु यात्रा

पालीताना- पूज्यपाद आचार्य श्री विजयसंयमबोधि सूरीजी म.सा.आदि श्रमण-श्रमणीवृंद की निश्रा में श्री शत्रुंजय गिरिराज की नव्वांणु यात्रा का आयोजन होने जा रहा है। यह यात्रा दिनांक 15 अप्रेल 2024 सोमवार से आरंभ होगी। लाभार्थी हंसा बहन मुलाणी परिवार है।

जोधपुर में चार्तुमास

जोधपुर- श्री भेरुबाग पार्श्वनाथ जैन श्वेतांबर तीर्थ में पूज्य आचार्यदेव श्री तत्वदर्शन सूरीश्वरजी महाराज का आगामी चार्तुमास निश्चित हुआ है। आपश्री कलापूर्ण सूरीश्वरजी म.सा. के प्रशिष्य है।

पालीताना में चार्तुमास

पालीताना- सनतर भवन पालीताना में 2024 का चार्तुमास होने जा रहा है। पूज्य आचार्यश्री आनंदवर्धना सूरीजी एवं श्री आत्मदर्शन सूरीजी महाराज आदि ठाणा की निश्रा में चार्तुमास दिनांक 20 जुलाई से आरंभ होगा तथा समापन 8 सितंबर को होगा।

हमारे तीज-त्यौहार

1- माघ वदी-13	बुधवार	7/2/2024	मेरु तेरस श्री आदिनाथ प्रभु निर्वाण कल्याणक
2- माघ सुदी-5	बुधवार	14/2/2024	श्री शंखेश्वर पार्श्व प्रभु की वर्षगांठ, आगमोद्धारक श्री सागरजी म.सा. का दीक्षा दिन, आगम मंदिर सूरत प्रतिष्ठा दिन।
3- माघ सुदी-6	गुरुवार	15/2/2024	श्री शंखेश्वर आगम मंदिर वर्षगांठ
4- माघ सुदी-14	शुक्रवार	23/2/2024	कलिकाल सर्वज्ञा श्री हेमचन्द्राचार्यश्री का दीक्षा दिन, गच्छाधिपति श्री सूर्योदयसागरसूरीजी का कालधर्म दिन

पंचक :- **आरम्भः-** माघ सुदी-1, शनिवार, दिनांक 10/2/2024, समय- 10.03 बजे
समाप्तः- माघ सुदी-5, बुधवार, दिनांक 14/2/2024, समय- 10.44 बजे

पुष्प नक्षत्र :- **आरम्भः-** माघ सुदी-12, बुधवार, दिनांक 21/2/2024, समय- 14.19 बजे
समाप्तः- माघ सुदी-13, गुरुवार, दिनांक 22/2/2024, समय- 16.43 बजे

तीर्थ का नाम कर्म उपार्जन किया....

✻ भ. ऋषभदेव के समय में- **मरीचि।**

✻ भ. सुपार्श्वनाथ के समय में- **वर्माराजा।**

✻ भ. शीतलनाथ के समय में- **हरिषेण, विश्वभूति।**

✻ भ. श्रेयांसनाथ के समय में- **श्रीकेतु, त्रिपृष्ट, धान, मरुभूति, अमित, तेज।**

✻ भ. वासुपूज्य के समय में- **नंद-नंदन, शंखराजा, सिद्धार्थ राजा।**

✻ भ.मुनिसुव्रतस्वामी के समय में- **श्रीवर्मा, रावण, नारद।**

✻ भ.नेमिनाथ के समय में- **श्री कृष्ण महाराज।**

✻ भ.पार्श्वनाथ के समय में-**अखंड, सत्य की, आनंद श्रावक।**

✻ भ. महावीर के समय में- **श्रेणिकराजा, सुपार्श्व, पोटिल, उदायीमंत्री, दृढायु, शंखराजा, शतक श्रावक, सुलसा श्राविका, रेवती, श्राविका।**

सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है

जैन जगत की प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध मासिक पत्रिका आगमोद्धारक के सदस्यता अभियान के लिये सारे देश में प्रतिनिधियों की नियुक्ति की जा रही है। सक्रिय युवा भाई-बहन जो जिनशासन के प्रचार-प्रसार हेतु अपनी सेवा देना चाहते है वे तुरन्त निम्न पते पर संपर्क करें।

प्रतिनिधि को कम से कम 25 सदस्य बनाना आवश्यक है। आपकी सहमति प्राप्त होने पर रसीद कट्टे एवं प्रचार-प्रसार सामग्री आपको भेजी जायेगी। सम्पादक से सम्पर्क करें।

सादर आमंत्रण

✻ पूज्य साधु-साध्वीजी से विनंती है कि आपके चार्तुमास एवं सभी धार्मिक कार्यक्रमों की जानकारी एवं धार्मिक महोत्सव की सूचना आगमोद्धारक तक पहुंचाने का कष्ट करें, ताकि अंक आपको लगातार भेजा जा सके तथा समाचार प्रकाशित किया जा सकें।

✻ आगमोद्धारक के लिये आपकी रचनाएं भी प्रकाशन के लिये निरंतर भेजते रहे। आपकी रचना से हम प्रोत्साहित होंगे।

✻ पत्रिका को और अच्छा बनाने के लिये आपके सुझाव, मार्गदर्शन भी भेजते रहे ताकि आगमोद्धारक की गुणवत्ता बढ़ाई जा सके।

✻ अंक आपके तक नियमित रुप से नवीन स्वरुप के साथ 10 तारीख तक पहुंचे ऐसा हमारा प्रयास रहता है, अंक अप्राप्ति पर शीघ्र सूचित करें।

- सम्पादक

चातुर्मास उद्घोषणा

संघ स्थविर, 103 वर्षीय गच्छाधिपति प.पू. आचार्य देव
श्री दौलतसागर सूरीश्वरजी महाराजा की आज्ञा से

भोपावर तीर्थोद्धारक, मालव भूषण
प.पू. आचार्य देव श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा
की पाट परंपरा को शोभानेवाले

जिनशासन के महानायक, युवापथ प्रदर्शक
तपागच्छ गगनदिपमणि, सर्वधर्म दिवाकर
महामांगलिक प्रदाता, सूरीमंत्र आराधक, युवाहृदय सम्राट

प.पू. आचार्य देव श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा

आदि श्रमण - श्रमणी भगवंत का

गुरु समर्पण महोत्सव, भोपावर तीर्थ में विनंति करने पधारा जयपुर श्रीसंघ

आगामी वि.सं. 2081, वर्ष 2024 चातुर्मास

श्री जैन श्वेताम्बर संघ महावीर साधना केन्द्र
जवाहर नगर, जयपुर में अध्यात्मिक आराधना भक्तिमय होगा।

वर्ष 29 | माघ-फाल्गुन | फरवरी-2024 | अंक 02 (मासिक) | प्रकाशन उज्जैन

आर.एन.आई. नं. 0048570/29/30/1982
पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर.एन.नं.एम.डी. 08/2024-2026

प्रति,   बुक पोस्ट
श्रीमान् ....
....
....

स्टाम्प टिकिट

प्राप्त न होने पर कृपया लौटायें -
डॉ. सुभाष जैन (संपादक)
46, सखीपुरा, उज्जैन - 456001 (म.प्र.)
मो. 94250-91012, 8770884897
Email : subash_3333@yahoo.co.in, subhashjain@gmail.com

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन उज्जैन के लिये डॉ. सुभाष जैन - संपादक द्वारा प्रकाशित एवं एम.बी. ऑफसेट प्रिंटर्स, 285, एम.जी.रोड़, इन्दौर से मुद्रित। फोन : 0731-2412232, संपादक मो. 94250-91012, 8770884897